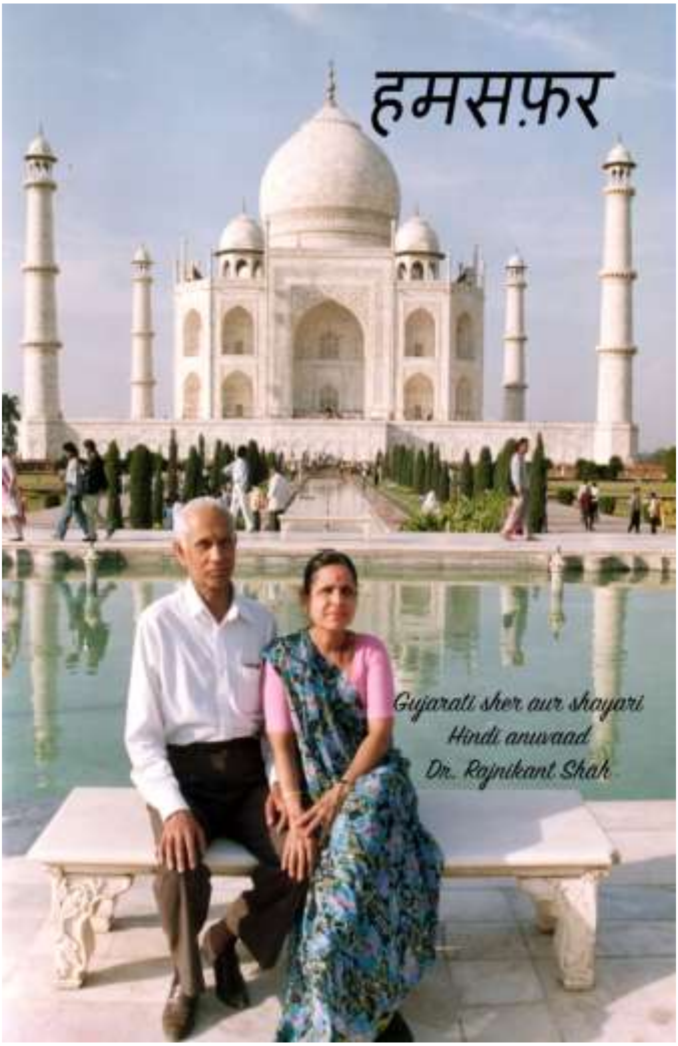

गुजराती शेर और शायरी

का

हिन्दी अनुवाद

डॉ. रजनीकान्त शाह

Museum of gem and Jewellery federation Jaipur -2017

Museum of Gem and Jewellery Federation at Jaipur: http://www.mgjjaipur.com

Google	On the top search.
Facebook	https://www.facebook.com/mgjjaipur/
Twitter	https://twitter.com/MGJFJAIPUR
Instagram	https://www.instagram.com/mgjfjaipur/
YouTube	https://www.youtube.com/channel/UCybJjns-0o9HD1CKXe6HEVA
Tripadvisor	https://www.tripadvisor.com/Attraction_Review-g304555-d13465522-Reviews-Museum_of_Gem_and_Jewellery_Federation-Jaipur_Jaipur_District_Rajasthan.html
Website	http://www.mgjjaipur.com/
Pinterest	https://in.pinterest.com/mgjjaipur/pins/
Blogger	https://www.blogger.com/blogger.g?blogID=1654033813354269141#allposts

Website Details

<u>Ashtapad Maha Tirth at New York – 2010</u>
Ashtapad Maha Tirth Information: www.nyjaincenter.org **View Ashtapad – Play of Colors**
https://www.dropbox.com/sh/op4g1n2ewyrdysd/AACqMd4MN_a3ofvPNypa28Wda?dl=0
<u>Visit Jain e Library for Ashtapad Granth Vol I & II – 2012</u>
Sign in at jainelibrary.org Type code: 007705 / 007706 / 007707. One by one in search bar and press
<u>Ashtapad Maha Tirth Foundation- a 4 sided temple in making – 2018</u> Website: Ashtapadmahatirth.com
<u>Jain Center of America: Temple and Ashtapad – 2005</u> Visit the temple at New York – "A Unity in Diversity"
www.nyjaincenter.org
<u>Art Gallery – Principals and Practices – A Pictorial Guide to Jainism - Art work by code - 500 + posters – 2010</u>
You can visit the photo gallery at the temple at:
43-11 Ithaca Street, Elmhurst, NY 11373
Visit the temple website and look for the art gallery:
http://www.nyjaincenter.org/Education/Temple-Artwork
Visit YouTube – it has an auto-slideshow on Art work:
https://www.youtube.com/watch?v=yzJe80Rc8mI
<u>Stamps on gems and jewelry</u>:
http://www.drshahstamps.com/
http://stampsongemsandjewelry.com/
<u>Museum of gem and Jewellery federation Jaipur -2017</u>
http://www.mgjjaipur.com/

हमसफ़र

(जीवन की सफ़र में : प्यार की डगर में)

गुजराती शेर और शायरी

का

हिन्दी अनुवाद

डॉ. रजनीकान्त शाह

डॉ. रजनीकान्त – डॉ. निरंजना शाह

ईमेलः doctorrshah@gmail.com

Prakashan प्रिन्टेडः 22 नवम्बर, 2019

मुद्रकः
जयपुर प्रिन्टर्स प्राईवेट लिमिटेड
जयपुर

गुजराती शायरों के कुछ शेर जो मुझे पसंद आए,
ऐसे सरल शेरों का एक संकलन
प्रस्तुत है हिन्दी अनुवाद में

आभार सभी शायरों का और संपादकों का

अर्पण

शादी की 60वीं सालगिरह पर

शायरी की यह पुस्तिका

अपनी धर्मपत्नि

निरंजना शाह को अर्पण

छोटी हैं मगर बड़ी समझकर
स्वीकार लेना यादें मेरी
एक प्यार भरे दिल की
छोटी सी यह सौगात मेरी।

हे प्रिय मैं यह,
पुष्प भेंट करता हूँ
रखता हूँ तेरे चरणों में,
ख़ुशी से अपना लेना
बहुत कम दे पाया हूँ,
पर संतोष कर लेना
जो है मेरे दिल में,
अपने दिल में समा लेना

शायर और शायरी

प्यार की इस संसार में
जब पहल हुई होगी
तब प्रथम गज़ल की
शुरुआत हुई होगी
इस दिल को दर्द मिला
उस दिन से दोस्तों
जिस दिन से दुनिया की
शुरुआत हुई होगी।
आदिल मन्सूरी

प्रणय का दर्द जब दिल में
पहले पहल हुआ होगा
तो ऐसा लगा कि प्यार में
एक कठिन मंज़िल आई
अर्ज करने को दिल का दर्द
कोशिश जब मैं कर रहा था
तभी गगन से उतरकर
चुपके से यह गज़ल आई।
मनहरलाल चोकसी

अनुक्रमणिका

विवरण	पृष्ठ संख्या
अर्पण	4
निवेदन – दिल से	9
हमसफ़र (जीवन की सफ़र में : प्यार की डगर में)	13
हमसफ़र सिने संगीत	17
प्यार की पंखुड़ियां	21
भूमिका	25
संपादक की कलम से	26
अध्याय – 1	34
अध्याय – 2	72
अध्याय – 3	121
अध्याय – 4	171
अध्याय – 5	217

न कुछ हम हँस कर सीखें हैं,
न कुछ हम रो कर सीखें हैं।
जो कुछ हम थोड़ा–सा सीखें हैं,
आप के हो कर सीखें हैं।।

निवेदन

दिल की बात

बचपन से शेर और शायरी का शौक़ था और साहित्य का भी शौक़ था। गुजराती और हिन्दी पढ़ने में आती थी। पढ़ने लिखने की एक आदत सी थीा। कुछ सरल सी अच्छी शेर–शायरी लिखकर रख लेता था, वो धीरे धीरे एक संकलन बनता गया। आज भी वो डायरी संभाल के रखी है। अपनी खुशी की–शौक़ की एक पहचान थी। कभी दोस्तों में गुनगुना लेते थे–मेडिकल कॉलेज में भी मौके बेमौके शेर सुना देते थे।

आज एक अवसर आया है – पन्ने पलटने का– प्रेम लग्न हुआ– दिलदार मिला – प्यार पला। उसी प्यार की पहचान के रूप में एक भेंट चालीसवीं सालगिरह पर उसकी याद में गुजराती शेर और शायरी की एक छोटी पुस्तिका प्रकाशित की। गुजराती शायरों के कुछ चुने शेरों का वो एक संकलन था। उसमें उन शेरों को संकलित किया जो सरल है, सुंदर है – जिनके भावों में मर्म है, जो दिल को छूने वाले हैं , जो हृदय को आल्हादित करने वाले हैं।

शादी के आज साठ साल हुए सोचता हूँ क्या भेंट करूँ। प्यार तो बहुत करते हैं, मगर एक याद के रूप में क्या पेश करूँ। सोचते सोचते गुजराती शेरों का हिन्दी अनुवाद करने का एक अवसर मिला। यही एक छोटी से पुस्तिका सरल शायरी का एक संकलन – गुजराती से हिन्दी अनुवाद का एक प्रयास, आज भेंट के रूप में पेश कर रहा हूँ। सोचता हूँ इससे हिन्दी प्रेमी भी अब गुजराती शेर और शायरी का लाभ ले सकेंगे।

अब तक जो संकलन किया था– शायरों और लेखकों के नाम न लिखे थे। स्वांत सुखाय थी जो अब उनके नाम भी साथ में देने की कोशिश कर रहा हूँ फिर भी कई शायरों के नाम ढूंढ नहीं पाया हूँ उसके लिए क्षमा प्रार्थी हूँ।

यहाँ जो शेर दिये हैं वो विविध है, कटाक्ष के साथ है, दिल पर चोट करने वाले हैं। थोड़े शब्दों में भाव व्यक्त करने की कोशिश की है। भाषा में सरलता और सादगी है। शायरों ने प्रणय के भावों का और प्यार के प्रसंगों का मर्मस्पर्शी चित्र अंकित किया है। हर शेर अपने आप में पूर्ण है। पूरी गज़ल की जगह कुछ

पंक्तियां अर्थ भरी है और भाव प्रर्दशित करती है, जिनका भावार्थ सरलता से समझ में आ जाता है।

रचनायें सहज और सरल है। अनुवाद अक्षरश: नहीं कर पाया हूँ, मगर भावार्थ जरूर से संजोये रखा है। शब्दों में और पंक्तियों में फेर बदल किया है। कुछ शेरों में अपनी तरफ से भी कुछ अतिरिक्त पंक्तियां लिखी है। साफ मन से, अच्छा सोच समझ भावनुवाद किया है। हिन्दी भाषा का पूरा ध्यान रखा गया है कहीं कहीं गुजराती भाषा के शब्द शायद मिल जाये तो माफ करना। मेरी तरफ से कोई भी गलती या गलत फहमी हुई हो तो माफ़ी चाहता हूँ।

'हमसफ़र' में शेरों का संकलन मैंने शेर और शायरी की किताबों, सामयिक साहित्य और अपने खुद के संकलन से एकत्रित किया है। कुछ पुस्तकों के नाम भी मैं यहाँ दे रहा हूँ– जहाँ से अधिकतर शेर लिए गए हैं। यह पाठकों की जानकारी के लिए है। उन सबका बहुत–बहुत आभार।

पुस्तक		संपादक
1. कारवां	–	सुकन्या झवेरी
2. पल्लव	–	जग जीवन दास, देव शंकर त्रिवेदी, दिलीप सी. परीख
3. मधुबन	–	हरीन्द्र दवे
4. नजराणुं	–	जमियत पंडया
5. आगमन	–	मरीज़
6. प्यास	–	बरकत वीराणी 'बेफ़ाम'
7. अमर मुक्तको	–	कैलाश पंडित
8. रंगे महेफिल	–	प्रफुल भारतीय
9. अमर शेर	–	डॉ. एस एस राही
10. स्नेह जीवन की यादें वेलेन्टाइन डे	–	बेहरामगोर दस्तूर

कवन को मान देता हूँ
गज़ल की दाद देता हूँ
हृदय की भावना है हमारी
उनको याद करता हूँ
बनती है औरों का आंनद
जिन की वेदना ‘बेफाम’
मैं उन शायरों को दर्द की
मुबारकवाद देता हूँ।

बरकत वीराणी - ‘बेफ़ाम’

कई लोगों ने इसके संपादन में मदद की है, उन सबका आभार प्रदर्शित करता हूँ। मैं गुलाब जी कोठारी ‘राजस्थान पत्रिका’ का अभारी हूँ, जिन्होंने अग्रिम भूमिका लिखी है। श्रीमती अन्जना चौधरी ने इसे कम्पयूटर में डाल एक खाका बनाया। यहाँ अमेरिका में श्रीमती झील महेता एवम् श्री सुनील जी डागा ने संपादन का कार्य पूरी तरह निभाया है और उनकी सलाह सुचन के लिये अभार। श्री इकरामजी राजस्थानी ने संपादन के कार्य में बहुत मदद की है उनका शुक्रिया अदा करता हुं। इन सबका धन्यवाद।

मेरे मित्र श्री रामअवतार जी कुलवाल ने शुरू से मेरा साथ दिया। प्रोत्साहित किया और प्रिटिंग की सारी जिम्मेवारी उन्होंने उठाली। प्रकाशक ने पूरी मेहनत के साथ पुस्तक सुदंरता से प्रकाशित की है। उनका आभार (.........)

आभार अपनी धर्म पत्नि निरंजना का, जो साठ साल से मेरी सहचारिणी हैं, इन्होंने संपादन में एवम् सही शेर चुनने में पूरा सहयोग दिया है 'हमसफ़र' में हम दोनों साथ साथ है।

शादी की साठवीं सालगिरह पर हे प्रिये यह एक पुष्प अर्पण है– स्वीकार लेना जिगर में समा लेना। थोड़ा है ज्यादा मानकर संतोष करना, जो था हृदय में आज परोस रहा हूँ।

शायद यह पहला प्रयास है जब गुजराती शेरों का हिन्दी अनुवाद पाठकों के सामने पेश किया जा रहा है। पहला प्रसंग है – प्यार भी पहला ही था। बिन अनुभव यह एक छोटा सा प्रयास हैं। गलतियों को गौर अंदाज करें और हमें सूचित भी करें। गुजराती शेरों शायरी का यह हिन्दी अनुवाद सभी प्रेमियों और पाठकों तक पहुंचे, इसी आशा के साथ।

टहनियां इतनी झुकती नहीं
फूलों में कुछ भार होना चाहिए
तुमसे यों ही मिलना न होता
दिल में कुछ प्यार होना चाहिए
इतने लोग क्यों पढ़ते है
गीता में कुछ तो सार होना चाहिए
यह गुजराती शायरी का अनुवाद है
इसमें भी कुछ भाव होना चाहिए।

फिलिप क्लार्क

‘हमसफ़र’

(जीवन की सफर में : प्यार की डगर में)

सिने संगीत जिसमें ‘हमसफ़र’ शब्द का प्रयोग हुआ है,
उन्हीं में से बहुत सी पक्तियां यहां ली गई है।
इस पुस्तिका का नाम भी ‘हमसफ़र’ है।
दो दिल ‘हमसफ़र’ हैं।
शून्य पालनपुरी का यह एक शेर देखिए–
यह प्रणय की दुनिया है इसमें इरादे नहीं होते
यह तो एक तस्वीर है इसमें इशारे नहीं होते।
यहाँ दिलों में दर्द है इसमें नजारे नहीं होते
‘हमसफ़र’ है हम दोनो कोई सहारे नहीं होते

आगे देखिये.....
‘‘हमसफ़र’ चाहिए उम्र भर चाहिए
आप के प्यार की एक नज़र चाहिए’’
जीवन की डगर में: प्यार के सफ़र में
तुम मिले और क्या चाहिए
दो दिल ‘हमसफ़र’ है। **(1)**

‘‘पहले मैं शायर था आशिक बनाया आपने’’
हम तो मुसाफ़िर थे ‘‘इश्क जगाया आपने’’**(2)**

‘‘मुझे तुमसे कुछ कहना है तेरे दिल में यों ही रहना है’’
’हमसफ़र’ के लिए दिल दिवाना होता है प्यार क्या हमने जाना **(3)**

‘‘महबूब की आंखों में जरूर कोई बात है प्यारे’’
करते रहो प्यार भरे इशारे कट जाएगा सफ़र तेरे सहारे **(4)**

''दिल है कि मानता नही दिल में उतर कर देखो ना''
''प्यार किया तो निभाना जिन्दगी है एक सफ़र सुहाना'' **(5)**

''ऐ सनम हम तो सिर्फ तुमसे प्यार करते हैं''
मंज़िल अभी दूर है चलो हम सफ़र करते हैं **(6)**

''जिन्दगानी के सफ़र में हम भी तेरे 'हमसफ़र' हैं''
''हम हैं राही प्यार के'' प्यार का कोई सफर है **(7)**

कोई कैसे गुजारे जिन्दगी बिना प्यार
दिन रात पनपे अपना प्यार तेरे बिन अधुरा यह संसार **(8)**

''यह कसमे वादे निभायेंगे'' यह वादा रहा न जुदा होंगे हम
''बहुत चाहते है तुझे ऐ सनम ये प्यार ना होगा कम'' **(9)**

''यह पल दो पल का प्यार नही प्यार का यह लम्बा सफ़र है
''तू मेरी आरजू तू मेरा 'हमसफ़र'' यह साठ साल का सफ़र है **(10)**

''एक प्यार का नगमा है'' अपनी यह प्रेम कहानी
तेरे मेरे प्यार की पहचान यह साठ साल पुरानी **(11)**

''मेरे महबूब मेरे सनम शुक्रिया महेरबानी''
''जिन्दगी और कुछ भी नही तेरी मेरी कहानी है'' **(12)**

- डॉ. रजनीकान्त शाह

चलो जीवन के आज पचा लें सारे जहर
फिर खेले 'हमसफ़र' शंकर शंकर **- दिलहर संघवी**

‘हमसफ़र’

सिने संगीत

शेर और शायरी में ‘हमसफ़र’ शब्द का प्रयोग बहुत कम हुआ है, पर सिने संगीत में ‘हमसफ़र’ शब्द का काफी प्रयोग हुआ है। इस पुस्तिका का शीर्षक भी ‘हमसफ़र’ इसी सिने संगीत की असर है और इसी वजह से मैंने भी यह शीर्षक चुना है। इस सिने संगीत का संक्षिप्त विवरण पाठकों की जनकारी के लिए यहां दिया गया है।

ऐ मेरे **‘हमसफ़र’** ऐ मेरी जानेजाँ
तू ही मेरी मंज़िल तू ही मेरा पता। **(1)**

ऐ मेरे **‘हमसफ़र’** एक ज़रा इन्तज़ार
कोई कैसे गुजारे जिन्दगी बिना प्यार। **(2)**

बोल मेरी तकदीर मे क्या है
मेरे **‘हमसफ़र’** अब तो बता। **(3)**

चलते चलते
‘हमसफ़र’ को याद रखना। **(4)**

सुन मेरे **‘हमसफ़र’** क्या
तुझे इतनी सी नहीं खबर। **(5)**

‘हमसफ़र’ अब यह
सफ़र कट जाएगा’
मेरा साथ देना जब
रास्ते में दिल घबराएगा। **(6)**

'हमसफ़र' चाहिए उम्र भर चाहिए
आप के प्यार की एक नज़र चाहिए । **(7)**

'हमसफ़र' हो मेरे तुम
मेरे हमराज़ हो
जिन्दगी का साज हो तुम
मेरे दिल की आवाज़ हो। **(8)**

'हमसफ़र' के लिए **'हमसफ़र'** मिल गया
और क्या चाहिए जिन्दगी के लिए । **(9)**

'हमसफ़र' मेरे **'हमसफ़र'**
पंख तुम परवाज़ हम
मेरी सुबह और शाम तुम
प्यार का अंदाज तुम। **(10)**

जानेजाँ ढूंढता फिर रहा
मैं तुम्हें रात दिन
मैं यहां तुम कहाँ
ओ मेरे **'हमसफ़र'**। **(11)**

मेरे सपनों के सौदागर
किसी राह में किसी मोड़ पर
कहीं चल न देना मुझे छोड़कर
मेरे 'हमसफ़र' मेरे **'हमसफ़र'**। **(12)**

लो सफ़र शुरू हो गया
मेरा **'हमसफ़र'** तू हो गया। **(13)**

मेरे 'हमसफ़र' मेरे **'हमसफ़र'**
मेरे पास आ मेरे पास आ। **(14)**

मेरे **‘हमसफ़र’** बोलो सोचकर
मुझ में अच्छा क्या लगा
तेरा मुस्कुराना नज़रे मिलाना
हो गया मेरा दिल दिवाना। **(15)**

ओ **‘हमसफ़र’** दिल के नगर
सपने चलो हम सजाऐं। **(16)**

ओ मेरे **‘हमसफ़र’** तुमसे
मिलकर कुछ कहना है
हर घड़ी तुझे मेरे दिल मे रहना है। **(17)**

ओ **‘हमसफ़र’** ओ हम नवाज़
बेशर्त मैं तेरा हुआ
पास आऊं देख लूं करीब से। **(18)**

रात के **‘हमसफ़र’** थक के घर को चले
ढूंढते है दर बदर जाने कब कहाँ मिले। **(19)**

मुड़ मुड़ के ना देख मुड़ मुड़ के
जिन्दगानी के सफ़र में
तू अकेला ही नहीं है
हम भी तेरे **‘हमसफ़र’** हैं। **(20)**

तेरी याद **‘हमसफ़र’** सुबहो शाम
मेरी सांसों में बसा है तेरा ही नाम। **(21)**

‘हमसफ़र’ तू हम कदम तू
मेरे हमनवा तू दरिया तू मेरी प्यास तू
मेरे प्यार का आसरा तू। **(22)**

तुम जो हुए मेरे **‘हमसफ़र’**
रास्ते बदल गए
लाखों दिये मेरे प्यार की
राहों में जल गए। **(23)**

यह दिल न होता बेचारा जो
खूबसूरत कोई **‘हमसफ़र’** होता। **(24)**

अकेले अकेले चला है कहाँ
‘हमसफ़र’ भी कोई साथ ले ले। **(25)**

सलाम–ए–इश्क मेरी जान ज़रा कबूल कर लो
तुम हमसे प्यार में जरा सी भूल कर लो
इश्कवालों से न पूछो कि उनकीरात का आलम
तन्हा कैसे गुजरता है समा जुदा हो **‘हमसफ़र’** जिसका **(26)**

यह बता दे मुझे जिन्दगी
प्यार की राह के **‘हमसफ़र’**
किस तरह बन गए अजनबी **(27)**

लम्बी है गम की शाम मगर शाम ही तो है
यह सफर बहुत है कठिन मगर
न उदास हो मेरे **‘हमसफ़र’** **(28)**

अकेला हूं मैं **‘हमसफ़र’** ढूंढता हूं
मोहब्बत की मैं रहगुजर ढूंढता हूं
तेरी राहों में शामों सहर ढूंढता हूं **(29)**

आ **‘हमसफ़र’** प्यार की सेज पर
कुछ कहे कुछ सुने जाग के रात भर **(30)**

जीवन के हर मोड़ पे मिल जायेंगे **‘हमसफ़र’**
जो दूर तक साथ दे ढूंढे उसी को नजर **(31)**

ना कारवां की तलाश है
ना तो **‘हमसफ़र’** की तलाश है। **(32)**

जीवन मे **‘हमसफ़र’** मिलते तो हैं जरूर पर
खो जाते हैं चलकर थोड़ी दूर **(33)**

मुझे मिल गई है मोहब्बत की मंजिल
कोई पूछते ये मेरे **‘हमसफ़र’** से। **(34)**

दीवाने हैं दीवानों को न घर चाहिए न दर चाहिए,
मोहब्बत भरी एक नजर चाहिए
मुझे तूं ही तूं **‘हमसफ़र’** चाहिए **(35)**

तेरे **‘हमसफ़र’** गीत हैं तेरे
गीत ही तो जीवन मीत हैं तेरे **(36)**

‘हमसफ़र’ मिलती है मंजिल ठोकरें खाने के बाद
रंग लाती है हिना पत्थर पर पिस जाने के बाद **(37)**

आ ले चल मुझको सपनों के नगर
आ बना ले **‘हमसफ़र’** मुझे
मैं ही तो हूँ जिसको तू ढूंढ रहा था
देख तो ले एक नजर’ मुझे **(38)**

मेरे **‘हमसफ़र’** बीती बातें याद करो
मुलाकात याद करो जो साथ गुजारे थे
दिन रात वो याद करो **(39)**

अभी अूधरी ये दास्ताँ थी
अभी तमन्ना भी बेजूबां थी
ये प्यास दिल की बुझी कहाँ थी
च्ंद पल के **‘हमसफ़र’**
कुछ और साथ चलते **(40)**

ऐ मेरी ज़िन्दगी तू नहीं अजनबी
तुझको देखा है पहले कभी
ऐ मेरे **‘हमसफ़र’** मुझको पहचान ले
मैं वो ही हूं वो ही हूं वो ही हूं **(41)**

‘हमसफ़र’ साथ अपना छोड़ चले
‘हमसफ़र’ साथ अपना छोड़ चले
रिश्ते नाते वो सारे तोड़ चले **(42)**

ऐ मेरी ज़िन्दगी! ऐ मेरे **‘हमसफ़र’**
दिल तो तुम से बिछड़ने का गम है
मगर एक कहानी समझ के भुला दे मुझे **(43)**

प्यार की पंखुडियाँ

कोई समझे तो एक बात कहूँ
''इश्क करना कोई गुनाह नहीं''। **(1)**

यह तो दो दिलों की धड़कन है
इसमें होता कोई गवाह नहीं। **(2)**

''प्रेम गली अति सांकरी''
यहाँ होती कोई दो राह नहीं। **(3)**

झुकती आंखों ने किया दिल पर वार
मर्ज़ है अगर वो निगाह नहीं। **(4)**

कंधे पर हो किसी का हाथ
जिन्दगी में मजा क्या गर निबाह नहीं। **(5)**

मार नज़रों की, चोट खाई दिल ने
मगर उससे निकली कोई आह नहीं। **(6)**

दीवाना कर दिया उसने ऐसा,
फिर हम कह न सके निकाह नहीं। **(7)**

बिना पिलाये वो रखते हैं नशे में
फिर भी करते कभी तबाह नहीं। **(8)**

'पालवा' की पाली पर दिया था कौल
दो के सिवा और कोई गवाह नहीं। **(9)**

दिल जवां थे मस्ती का आलम था,
उन दिनों की यादों का हिसाब नहीं। **(10)**

वो चम्पा का फूल याद करो,
दिया कभी तुमको गुलाब नहीं। **(11)**

नहाकर जब आओ बाल सुखाओ
वो घड़ी वो समां क्या याद नहीं। **(12)**

लहरों का मचलना यूं ही टहलना
दिलों में कम्पन था कोई आह नहीं। **(13)**

''छोड दो आंचल जमाना क्या कहेगा''
आज भी क्या वो दिन याद नहीं। **(14)**

मासूम सा चेहरा मस्ती के दिन
मदहोशी थी कोई शराब नहीं। **(15)**

पढ़ना पढ़ाना पावों को सहलाना
वो लायब्रेरी और वो किताब नहीं।**(16)**

घड़ी की टिक टिक, देर से आना
अब दिल उतना बेताब नहीं। **(17)**

आखिरी दिन आखिरी शो
'नौ से बारा' – अब परवाह नहीं। **(18)**

'प्यार से पुकार लो कहाँ हो तुम'
तुम मिले और कोई चाह नहीं। **(19)**

प्यार पनपा दिन और रात़
देखी उसमें शाम और सुबह नहीं। **(20)**

''जो वादा किया वो निभाना पड़ेगा''
खूब निभाया इसमें संदेह नहीं। **(21)**

''यह वादा करो चाँद के सामने''
वादा रहा किसी की परवाह नहीं। **(22)**

पंद्रह फरवरी दो दिलों का मिलन
प्यार की पहचान थी रस्मों विवाह नहीं। **(23)**

समय गुजरा बालों में सफेदी आई
आरजू वो ही है और कोई चाह नहीं। **(24)**

साठ साल साथ साथ गुजरे
आज उसका कोई जवाब नहीं। **(25)**

दादा दादी नाना नानी बने
गुजरा समय कोई खराब नहीं। **(26)**

सब मिले जुले हो खुशी का खजाना,
उस बिना शादी की सालगिरह नहीं। **(27)**

''प्रीत की रीत यह पुरानी''
रूक जायें कोई वजह नहीं। **(28)**

आप जैसे हैं अच्छे हैं कैसे कहूँ,
हमें उसमें कोई संदेह नहीं। **(29)**

आज तुम हो और हम है आपस में,
शिकवे शिकायत की कोई वजह नहीं। **(30)**

जिन्दगी भर का साथ रहे
और किसी की पनाह नहीं। **(31)**

माफ करना एक बात कहूँ,
हमने किया कोई गुनाह नहीं। **(32)**

यह तो एक प्रेम कहानी है,
इसमें होती वाह वाह नहीं। **(33)**

इस प्रेम कहानी में तुम हो हम है
इतिहास का कोई शहंशाह नहीं। **(34)**

तुम्हारे लिए ताजमहल बना ना पाये,
हम कोई जहांपनाह नहीं। **(35)**

''तुझे मेरी शायरी पसंद आए''
करे चाहे कोई वाह वाह नहीं। **(36)**

''मैंने खत मेहबुब के नाम लिखा''
दिल पर लिखा, कोई किताब नहीं। **(37)**

हम यह कह रहे हैं दिल से इसे
शायरी मत कहो हम 'गालीब' नहीं। **(38)**

प्यार की पंखुडियाँ तुम्हारे लिए है
'हमसफ़र' हैं अलग राह नहीं। **(39)**

यह तो एक छोटी सी भेंट हैं,
स्वीकार लेना और कोई चाह नहीं। **(40)**

- डॉ. रजनीकान्त शाह

भूमिका

गुलाब कोठारी
'राजस्थान पत्रिका'

शायरी या कविता का अनुवाद करना आसान नही। कविता अपनी मूल भाषा में जो रस देती है वह अनुवाद में संभव नही। काव्य का भाषानुवाद नहीं हो सकता, भावानुवाद संभव है। फिर भी कविता का भाषान्तरण करना सदैव चुनौती भरा कार्य रहा है। यह इसलिए कि प्रत्येक भाषा का अपना मुहावरा होता है जिसमें रच–बस कर ही साहित्य की कोई विधा जन्म लेती है– फलती–फूलती है। शायरी या कविता पर यह बात और भी दृढ़ता से लागू होती है। काव्य में शब्द और भाव के साथ अन्तर्निहित लय को भी साधना पड़ता है। काव्यानुवाद में यही कार्य सबसे कठिन माना जाता है। इसके बावजूद विभिन्न भाषाओं में कविताओं के अनुवाद की परम्परा रही है। भाषेतर काव्य–रस के लिए कोई अन्य विकल्प उपलब्ध नही। इसलिए कविता के भावानुवाद को मैं एक रचनात्मक कार्य मानता हूँ । मुझे प्रसन्नता है कि डॉ. रजनीकान्त शाह ने गुजराती शेरो–शायरी (हमसफर) का भावानुवाद करते हुए इस रचना–धर्म को पूर्ण सामर्थ्य से निभाया है।

डॉ. शाह ने अपने विवाह की 60 वीं सालगिरह पर पत्नी निरंजना शाह को उपहार स्वरूप पुस्तक भेंट करने का निर्णय किया। इस सुअवसर के लिए उन्होंने गुजराती शेरो–शायरी की पुस्तक को हिन्दी में अनुवाद के लिए चुना।

वे कहते हैं, इससे हिन्दी प्रेमी पाठक भी अब गुजराती शेरो–शायरी का लाभ ले सकेंगे। हिन्दी के पाठक को उर्दू शायरी भरपूर उपलब्ध है, किन्तु गुजराती शायरी हिन्दी में लगभग अनुपलब्ध है। इस पुस्तक के माध्यम से हिन्दी के पाठक को एक दुर्लभ अवसर मिला है। हम कह सकते हैं कि डॉ. शाह ने एक साथ दो लक्ष्य साधे हैं। पत्नी को

बेहतरीन उपहार और साथ में हम हिन्दी भाषियों को भी गुजराती शायरी का रसास्वादन करने का अवसर।

प्रिय को उपहार देना है तो स्वाभाविक है वह प्रेम से परिपूर्ण ही होगा। संभवतः इसीलिए इस संग्रह में अधिकांश शेरो–शायरी का केन्द्रीय स्वर प्रेम के कोमल तंतुओं से बुना हुआ है। संकलन में गुजराती के कई शायर शामिल किये गए हैं। लिहाजा शायरी के भी कई रंग हैं– जैसे प्रेम के होते हैं। मिलन, विरह, दर्द, स्मृतियां, आशा–निराशा, समर्पण, प्रतीक्षा और मधुर कल्पनाएं मानो पन्नों में सिमट आई हैं। अनुवाद में यह ध्यान रखा गया है कि काव्य की कोमलता अपने मूल भावों के साथ पाठक को रस दे। एक उदारहण देखिए–

तुम घूंघट न हटाओ कभी
सागर किनारे पर
समंदर आ जाएगा
तुम्हारे ऊपर चांद समझकर।

या फिर ये पंक्तियां देखिए–

मैं नजर से पी रहा था
तो दिल ने शाप दिया
तेरा हाथ जिन्दगी भर
जाम तक न पहुंचे।

'..........'

प्रेम एक ऐसी अनुभूति है जिसे भौतिक उपायों से साधा नहीं जा सकता। अनेक कवियों– शायरों ने इस पर खूबसूरत कलाम लिखे हैं। एक बानगी यहां भी देख सकते हैं–

यह चमकता और दमकता
शाहजहां का महल देखने दे
और एक धनवान मजनूं ने
किया वो खेल देखने दे
यहां प्रदर्शन के लिए कैद है
प्रेम एक जमाने से
वो खूबसूरत पत्थरों की
जेल देखने दे।

शेखादम आबुवाला

इस संग्रह में प्रेम–कविताओं के अलावा भी शायरी के अनेक रंग मौजूद हैं। डॉ. शाह ने जिन रचनाओं का चयन किया है उनमें जीवन–दर्शन के साथ ही मनुष्य की नियति, स्वभाव और भविष्य की संभावनाएं हैं। कह सकते हैं कि हर स्तर और रुचि के पाठकों का उन्होंने ध्यान रखा है। विशेष बात यह है कि ज्यादातर रचनाएं सहज और सरल हैं जिसे उन्होंने अपने वक्तव्य में भी इंगित किया है। सरलता के गुण के कारण ही यह संग्रह पठनीय है। कुछ और उदाहरण भी देख सकते हैं–

हमारी जिन्दगी का यह
सरल सा परिचय है
रुदन में वास्तविकता है
और हँसी में अभिनय है।

....

साकिन गगन को भी
जहर पीना पड़ा होगा
वरना यह नीलवर्ण
कभी हो नहीं सकता था।

.साकिन केशवाणी

गंगा से पूछा तो
दिल के दर्द से वो बोली
मेरे प्रवाह के पीछे
हिमालय पिघल रहा है।

'..........'

पुस्तक में ऐसी अनेक अभिव्यक्तियां हैं जो दिल को छूती हैं।यह इसलिए कि अनुवाद करते समय डॉ. शाह ने सरल शब्दावली का प्रयोग किया है। अनुवाद में भाषा को सहज और बोधगम्य रखना साधना–कर्म है जिसे एक साधक की तरह डॉ. रजनीकांत शाह ने बखूबी निभाया है।

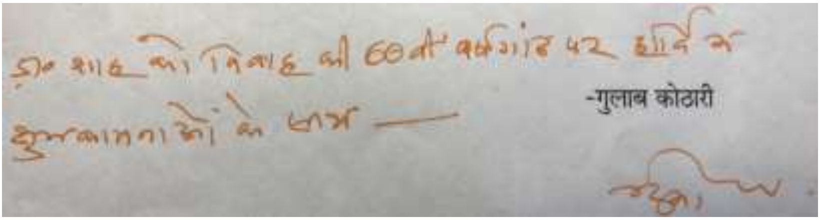

इकराम राजस्थानी
''राष्ट्ररत्न''
गंगा-जमनी संस्कृति के सिद्ध शब्दकार

पूर्व निदेशक, आकाशवाणी
पूर्व स्टेशन मैनेजर, 'ज्ञानवाणी' (इग्नू)
सदस्य 'फिल्म राइटर्स एसोसियेशन' मुंबई
सदस्य 'राजस्थान फोरम' कोलकता
निदेशक, 'आई.आर.वीजन', जयपुर
निदेशक, 'सुर-ज्ञान कला संगम राजस्थान', जयपुर
चेयरमेन 'मास्टर अलाउद्दीन मेमोरियल फाउंडेशन', जयपुर

संपादक की कलम से–

डॉ. रजनी कान्त शाह का प्रेमोपहार
इकराम राजस्थानी ''राष्ट्र रत्न''

जीवित है प्रेम, ये इसी चाहत की पहल से।
सौगात कम नहीं है, किसी ताज महल से।

ये बात इसी पुस्तक के लिए शत–प्रतिशत सत्य सिद्ध होती है, जिसका संपादन करने का अवसर और सौभाग्य मुझे मिला है।

ये पुस्तक, डॉ. रजनी कान्त शाह के द्वारा, उनकी सह धर्मिणी श्रीमती निरंजना शाह को अपनी वैवाहिक जीवन की साठवीं वर्षगांठ पर दिया जाने वाला, वो स्वर्णिम सुवासित, प्रेमोपहार है, जिससे उनके जीवन में आज भी बहार ही बहार है, प्रेम का उमड़ता हुआ ज्वार है।

मेरी लेखनी प्यार के उन्हीं रंगों में सराबोर होकर ये शब्द कागज़ पर उतार रही है, जिन शब्दों से डॉ. शाह ने निरंजना जी का श्रृंगार किया है। ये अपने आप में एक अनुपम उदाहरण है कि साठ वर्ष तक पति–पत्नि के संबंधों में वही प्रगाढ़ता, वही स्नेह, वही सरस सुवासित सुगंध से महके हुए संबंधों का ज्वार, प्यार ही प्यार बेशुमार, ये पुस्तक डॉ. शाह के वैवाहिक जीवन का षष्ठीपूर्ति समारोह है।

कोई भी व्यक्ति जब प्रेम की अभिव्यक्ति करता है तो, सरल–सहज, प्रभावशाली तरीके से प्रस्तुत करने के लिए कविता या शायरी का सहारा लेता है तो बात करने में बहुत आसानी हो जाती है और आपके जज़्बात स्वतः ही सामने वाले के दिल को छूने लगते हैं।

मैं, डॉ. रजनी कान्त शाह की इस भावना के लिए बेहद प्रशंसा करूंगा कि उन्होंने अपनी प्रेम भावनाओं को उजागर और व्यक्त करने के लिए गुजराती भाषा के प्रसिद्ध और नामचीन कवियों, शायरों की कुछ बेहतरीन कविताओं को चुना और फिर उन प्रेम पगी रचनाओं को अपने मन की भावनाओं और प्रीत की लेखनी से उनका, हिन्दी भाषा में सरल, सहज सुंदर अनुवाद कर इसे पुस्तक का रूप दे दिया और नाम रखा 'हमसफ़र'।

प्रेम और स्नेह के वशीभूत एक पति द्वारा, जीवन संगिनी को अथाह प्रीत, सेवा, सानिध्य और समर्पण को अर्पित किये हुए इस प्रेमाख्यान की एक एक कविता जीवन में एक रसरंग घोलती है। अतीत का हर पृष्ठ उभर कर वर्तमान से जुड़ता है और भविष्य के नये ताने बाने बुनने लगता है–

डॉ. रजनी कान्त शाह ने अपनी प्रिय सह–धर्मिणी के लिए– जिन प्रेम रंगों से सराबोर गुजराती कविताओं का अनुवाद हिन्दी भाषा में प्रस्तुत किया है, उसे पढ़कर ऐसा प्रतीत होता है, जैसे हम प्रेम के महासमुद्र में गोते लगा रहे हैं।
मोहब्बत के इन मोतियों की बानगी आप भी देखिए कि जवाहरात के महा पारखी इस जौहरी ने किस प्रकार हीरे मोतियों का चयन किया है–

कैसी भी रात हो चांद सा चेहरा हो
अमावस फिर भी पूनम लगेगी
रात के सितारे जब गगन से उतर सुबह
धरती पर आयेंगे तो वो शबनम लगेगी

बरकत वीराणी - 'बेफ़ाम'

मदहोशी तेरी यादों की
एक क्षण भी नहीं मिटती,
मिलती है, जो मस्ती, वो
मय में भी नहीं मिलती

'..........'

अलग रख कर मुझे
प्रणय के तार न छेड़ो,
वीणा से तार जुदा होंगे
तो फिर बज न सकेंगे

बरकत वीराणी - 'बेफ़ाम'

आओ पधारो आज पधारो हमारे दिल में
हुस्न के लायक यहां आपको प्यार मिलेगा
कभी तो आ के आप पावन करो यह आंगन
हमारे आंगन भी आपको घर लगेगा

अमृत - 'घायल'

भरोसा न करना कभी फूलों का
फूल तो फिर मुरझा जाऐंगे
चमन में वफ़ादार कंटक हैं,
जो कभी छोड़ के न जाऐंगे।

मुकबिल कुरैशी

तुमको देखा तो
मेरी गज़ल बनती गई
कल्पना खुद फिर मेरी
कलम बन लिखती गई

'बरकत वीराणी - 'बेफ़ाम'

कितने उपहार दिये आपने
दिल की धड़कने गिन लो,
ज़ख्म कितने दिये आपने
गिन लो, फिर हिसाब मिलेगा
तुम्हारी यादों के गुलदस्ते
गज़ल में बांधकर रखे हैं
हमसे थोडा प्यार कर लो,
तब तुम्हें विश्वास आयेगा

'..........'

आप आए मेरे पास यह चमत्कार हो गया
जाने–परवाने के पास खुद शमा आ गई
फूल खुद तो जा नहीं सकते तो क्या हुआ
ये खुशबू ले जाने को बहार आ गई
लो अब ओ दुनिया वालों सदा के लिए सलाम
जिसे मेरा घर कहूं वो जगह आ गई।

'बरकत वीराणी - 'बेफ़ाम'

ये एक पति की, पत्नि के प्रति प्रेम की पराकाष्ठा है। संसार के सभी प्रेमियों के समक्ष, शाश्वत और सारस्वत प्रेम का प्रमाण है। फरहाद, दूध की नहरें निकाल सकता है, महिवाल, मिट्टी के बर्तन बना सकता है, शहनशाह शाहजहाँ मुमताजमहल की स्मृति में ताजमहल का निर्माण करा सकता है, तो क्या एक समर्पित पति–पत्नि के अथाह प्रेम में

डूबकर, प्रेम की कविताओं का ये अनमोल तोहफ़ा अपनी पत्नि को नहीं दे सकता है ? डॉ. शाह और श्रीमती शाह के इस अद्बितीय प्रेम को हम नमन करते हैं।

एक बात और डॉ. शाह ने इस महान कार्य के माध्यम से दो भाषाओं के जोड़ने का भी एक बेमिसाल कार्य किया है। इनका ये भाव हमें हिन्दी प्रेम और राष्ट्रीय भावना से भी जोड़ने का एक संदेश दे रहा है।

सारे कवियों और शायरों की प्रेम से आकन्ठ डूबी कविताएं लेकर डॉ. शाह ने युवाओं को प्रेरणा दी है कि हम भारतीय परम्पराओं को जीवित रखेंगे। समाज में वैवाहिक संस्था को सदैव सम्मान देंगे।

अंत में, डॉ. रजनी कान्त शाह के साठ वर्षीय सुखद वैवाहिक जीवन के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ, मंगल भावनाएं। आप इसी तरह, सरल और सुवासित, जीवन व्यतीत करें और अपने विवाह की सौवीं वर्षगांठ मनाऐं।

जीवन के मधुर काल का उपहार है ये पुस्तक।
सुन्दर सलोने स्वप्न का साकार है ये पुस्तक।
अद्भुत अतीत जोड़ा, सुखद वर्तमान से,
इस प्रेम के सागर में, वो पतवार है ये पुस्तक।

अनन्त शुभ कामनाओं–
और मंगल भावनाओं के साथ

इकराम राजस्थानी

अध्याय 1

पिया है पानी जिन हाथों से
केवल वो हाथ माँगता हूँ
जग में अकेला हूँ इसीलिए
तुम्हारा साथ माँगता हूँ ।

‘..........’

है जवानी शराब जैसी खुद
फिर भी वो शराब माँगती है
इस दिवाने दिल की क्या कहूँ
रात जगकर ख्वाब माँगता है।

‘..........’

तुम घूँघट न हटाओ कभी
सागर किनारे पर
समंदर आ जाएगा
तुम्हारे ऊपर चाँद समझकर।

‘..........’

सनम तुम्हारी तरह सपनों में
आकर सता नहीं सकता
और दिल का दर्द दिल खोल के
बता नहीं सकता।
मजबूर हूँ आदत ऐसी
हो गई है जहर की
कि अमृत की दो बूँदें
पचा नहीं सकता।

‘..........’

दिल बेकरार है
नजर बेकरार है
जो बेकरार है तो
फक्त तेरा प्यार है
पलकें झुकाकर
तुम्हारी उपेक्षा नहीं की
हे दिल बुरा न मान
यह लज्जा का भार है।

'..........'

स्नेह भीनी कोई संगत थी
जिन्दगी में एक नयी रंगत थी
उनकी आँखें और मेरा हृदय
आज कहता हूँ बात जो अंगत थी।

शयदा

हृदय और आँखों का
आधार छोड़ कर
कभी यह आँसू खोजते हैं
पल्ले का सहारा किसलिए
हर चीज में याद उनकी
हर रोज वो याद आये
और प्रश्न पूछता हूँ मन को
उन्हीं के विचार किसलिए।

'..........'

आज दर्द ख़ुद उठकर
दिल की दवा करता है
जो काम वैद्य का था
वो दर्द करता है,
यह किस्मत की बात है
समझ सको तो समझो
देता है जो दर्द
वो ही दवा करता है।

‘..........’

दिल की दास्तां तुम क्या जानो
प्यार की पहचान तुम कैसे पाओगे
तुमने जुदाई के दिन देखे नहीं
तुम मिलन की रात क्या समझोगे।

‘..........’

गुलाबी आँखों की रंगीनी
शीशे में नहीं होती
नजर में होती है जो मस्ती
वो मदिरा में नहीं होती।
आनंद कभी ऐसा
एक आध ‘ना’ में होता है
मजा ऐसा सैकड़ों
‘हाँ’ में भी नहीं होता।

आसिम रांदेरी

दिल क्यों है बेकरार
यह याद नहीं
किसका है इंतजार
वो याद नहीं
दिल का दीप जलाकर
बैठा हूँ द्वार पर
कौन आने वाला है
यह भी याद नहीं।

सागर नवसारवी

तुम्हारा रूप और भोलापन
भूल नहीं सकता
सपनों में है सब कुछ
फिर भी छू नहीं सकता
मुझे डर है इसमें से
कुछ कम न हो जाए
तस्वीर है हाथ में तेरी
फिर भी मैं चूम नहीं सकता।

आसिम रांदेरी

प्रीत में जो मैंने तुम्हारा
पल्ला पकड़ा था
प्रीत के बाद भी वो
मेरे काम आया
प्रसंगों के ऊपर वो
परदा बना
और हसरतों पर
वो कफन बना।

'..........'

मिलन की रात थी
चाँदनी का समय था
पास में सनम था
ख़ुदा मेहरबान था
यह बात सपनों की थी
मैं कह नहीं सकता
यह किस्सा था जब
'आतश' मैं जवान था।

आतश

मुझे तेरी अधखुली आँखों में
संभाल ले
मेरी इच्छा है कि तेरी आँखों का
काजल बनूँ
भले ही मैं श्याम लगूँ मगर
तमन्ना यही है कि
तेरे गाल का
तिल बनूँ।

'..........'

बहुत कठिन दिन बीते हैं
तेरी जुदाई में
न जुल्फों की बात थी
न चाँदनी रात थी
बितायी मैंने विरह की रात
तेरे सपने देखकर
क्या करूँ मेरे पास तेरी
एक भी तस्वीर न थी।

'..........'

थोड़ी तकरार कर के
थोड़ा प्यार कर लेंगे
तुम देखते रहोगे
हम आँखें चार कर लेंगे।
सागर में डूबने का
कोई डर नहीं
अगर डूबे भी तो तुम्हारे हो के
किनारा पार कर लेंगे।

'..........'

रूप काफी था
आँखें धेली थीं
और हथेली में
उसकी हथेली थी
मन महक रहा था
भीना सा कंपन था
यह उसके साथ
मुलाकात पहली थी।

'..........'

मोहब्बत में हमने यह चार चीजें
उम्रभर माँगी
जिग़र माँगा नजर माँगी
प्यार माँगा हार माँगी
अचम्भा क्या कोई पागल समझ
हमें ठुकरावे 'मुकबिल'
हमने इस बेकदर दुनिया से
सच्ची कदर माँगी।

मुकबिल कुरैशी

तूफान के साथ हम को मोहब्बत
और शांति का है साथ तुम्हारा
कैसी गजब हालत है दोनों की
किनारा तुम्हारा सागर हमारा।

'..........'

प्रणय की यह समझ
पतंगे में नहीं होती
तड़पने में जो मजा है
वो जल जाने में नहीं होती
नहीं मिलती जि़न्दगी को हूंफ
जो आपस में प्रीत नहीं होती
जलन जो एक सरीखी
दोनों दिलों में नहीं होती।

'..........'

वो गये मेरा दिल लेते गये
और मुझे हृदयहीन कहते गये
उनके हृदय की मैं क्या कहूँ
दर्द तड़पन और विरह देते गये।

'..........'

ओ खिलते हुए फूल
तू इतना गरूर ना कर
तेरी हालत बदल जाएगी
मुरझा जाएगा कुचला जाएगा
और फूल ने कहा मैं जानता हूँ
मेरी हालत बदल जाएगी
भट्टी होगी इत्र बनेगा
और सुवास सब जगह फैल जाएगी।

'..........'

गुल फूल और चमन सब
आपको खार लगते हैं
हमारी आँखों के आँसू
आपको अंगार लगते हैं
दिल देकर दर्द लिया उसका
मैं आभार मानता हूँ
क्या उस आभार का भी
आपको भार लगता है।

'..........'

मैं दीवाना हूँ फिर क्यों न माँगूं
काँटे हैं वो भी फूल माँगते हैं
क्यों आश्चर्य होता है आपको
मेरा भी दिल है और प्यार माँगता है।

'..........'

आपके साथ भले
सौदा मुफ्त में हो गया
अगर आप पूछे तो
बहुत मंहगे हमारे दाम हैं।

मरीझ

इस संसार में जिन्दगी का मर्म
दिलवाले ही समझते हैं
तुम्हारी कसम हमारा प्यार
दिलवाले ही समझते हैं
नजर मीठी होती है मगर
यह सजा है जीवन भर की
और इन नजरों की मार
दिलवाले ही समझते हैं।

'..........'

मोहब्बत के सवालों के
कोई जवाब नहीं होते
और जो होते हैं वो
इतने सुंदर नहीं होते
कोई एक ही प्रेमी को मिलती है
सच्चे दिल की लगन
सब जहर पीने वाले
शंकर नहीं होते।

शेखादम आबुवाला

यह चमकता और दमकता
शाहजहां का महल देखने दे
और एक धनवान मजनूं ने
किया वो खेल देखने दे
यहाँ प्रदर्शन के लिए कैद है
प्रेम एक जमाने से
वो खूबसूरत पत्थरों की
जेल देखने दे।

शेखादम आबुवाला

असर न पूछो इन बहारों का
बसंत में हर कली चंचल होगी
न छुपेगी हृदय की धड़कन
बदन की रेखा सब बोल देगी
पधारो यह खुशी का पर्व है
मनायेंगे त्यौहार
हम दिल खोल कर।

'..........'

चौराहे पे मिले तो साथ हो न सके
की सलाम तो वो कुछ कह न सके
या अल्लाह क्या नजाकत है
मेहंदी के भार से हाथ ऊँचा कर न सके।

'..........'

आँखें चंचल हैं
उनको बाँध नहीं सकता
हृदय नादान है
उसको समझा नहीं सकता
प्यार तो आखिर प्यार है
पागलपन कह नहीं सकता
मैं अपनी हसरतों को
यों बाँध नहीं सकता।

'..........'

प्रणय को परखने की दृष्टि
अगर आप को मिली होती
हमारी छवि दीवार पर नहीं
आपके दिल में लगी होती।

आसिम रांदेरी

बहुत चाहता हूँ मगर
तुम्हारे पास आ नहीं सकता
अधर फड़फड़ा रहे हैं
फिर भी बुला नहीं सकता
करुणा यह कैसी है।
तेरी और मेरी मोहब्बत की
जिग़र में हो तुम मगर
जिन्दगी में अपना नहीं सकता।

'..........'

मुझे तो प्रेम का बस
इतना इतिहास लगता है
प्रथम वो सत्य लगता है
फिर वो आभास लगता है।
बहुत मुश्किल है यहाँ
पागल की उपाधि पाना
प्रणय के पाठ का यह
आखिरी पन्ना लगता है।

'..........'

तुम्हारी यादों को मैं अपने
दिल से भुला नहीं सकता
यही एक पन्ना है प्रेम का
जो मैं पलट नहीं सकता।
पूरी किताब पढ़ ली दिल की
उसे मैं जला नहीं सकता
प्यार जो हो गया है मुझे
उसे मैं भुला नहीं सकता।

'..........'

फूलों की जाम की
मय की और मदिरा की बातें
तुम हो तो फिर इस महफिल में
होगी प्यार की बातें।
आँखों से आँखें लड़ बैठीं
हम हार गए हार की बातें
दिल रख दिया उनके कदमों पर
उस उपहार की बातें।

'..........'

करुणा के टूट जाते सब बांध
अगर नयनों को पलकों का सहारा न होता
सागर में सब जगह प्रलय हो के रहता।
अगर उसके किनारा न होता
मोहब्बत में रंगीनियाँ कहाँ से होतीं
अगर यौवन के मद भरे इशारे न होते।
विरह की रात में हम क्या करते
गगन में अगर अनगिनत सितारे न होते।
उठ जाना पड़ता आज तेरी महफिल से
पल पल आप के इशारे न होते।

अमर पालनपुरी

चाँदनी रातों के प्रसंग
अब याद नहीं
दिल ने क्या कहा था
अब याद नहीं
दिल लिया और दिया
हँसते हँसते
किसने किया वचन भंग
अब याद नहीं

'..........'

अणु शक्ति का बोलबाला है
गजब जमाने ने हिम्मत की है
आफत की महा शोध ऐसी की है
कयामत से पहले कयामत की है।

अमृत – 'घायल'

मदहोश आँखों के शबाब की
बात क्या कहनी
एक नाजुक आकृति बना
कलेजे पर मीनाकारी कर ली।
मजे की चाँदनी रात में
हम उदासी बुला बैठे
हमने अपने हाथों
रात अंधेरी कर ली।
भले वो मेरे ना हुए
यह प्यार क्या कम है
घड़ी भर साथ बैठ के
दो प्यार भरी बातें कर लीं।

अमृत – 'घायल'

जीवन की सुबह और
जीवन की शाम बेची है
जिगर का दर्द और
हृदय की धड़कन बेची है
किसको बताऊँ कि
एक अनजान ग्राहक को
'खलीश' मैंने दिल जैसी
चीज उधार बेची है।

खलीश बड़ो देवी

तुम अपनी पलकों से
पल में बात कह गई
मर्म उसका समझने में
जिन्दगी बह गई।

'..........'

तुम्हारी इन आँखों में
सवालों के जवाब हैं
फिर भी बेचैन हो के
मैं कितने सवाल करता हूँ
मेरे को भी ऐसा लगता है
प्रेम में मैं यह क्या करता हूँ
वो रो नहीं रहे हैं फिर भी
मैं उनकी आँखें पोंछता हूँ।

शेखादम आबुवाला

तुम्हारे प्रेमपत्र देखकर
मैं वापस रख देता हूँ
जो सपने टूट गए हैं
अब वो देख नहीं सकता
उसमें था एक गुलाब का फूल
उसे सूँघ नहीं सकता
दिल जो टूट गया
उसे जोड़ नहीं सकता।
जो भाग्य के लेख हैं
उन्हें मैं मिटा नहीं सकता।

'..........'

दिल के दरवाजों पर
कोई ताले नहीं होते
बंधन कभी दिलदार को
प्यारे नहीं होते
क्यों शंका कर रही हो
अपने दिल में तुम
प्यार के रास्ते में
कोई सहारे नहीं होते।

'..........'

दिल में डूबकर देखो एक बार
दिल के दरिये में खार नहीं
एक दो बोलो तो दे सकूँ
सुख के प्रसंग हजार नहीं
प्यार पल न पाया अपना
वो आपका व्यवहार नहीं
प्रेम के बारे में ना पूछो तुम
वो विषय अब हमारा नहीं।

'..........'

ऐसा नसीब कहाँ जो
सपना सुख का आये
आँखें अभी मिली हैं
और सुबह हो जाये
तुम्हारे वादे पर हमको
एतबार आ जाये
न थे आने वाले फिर भी
इन्तजार हो जाये।
महफिल में नजर उठा लो
तो थोड़ा एहसान हो जाये
परवाने हैं जलकर
हम भी कुरबान हो जाये।

आशित हैदराबादी

ओ हृदय तूने भला
कैसा फँसाया मुझे
जो हुए ना मेरे
उनका बनाया मुझे।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

पहले कभी इस तरह
बरसात न आई होगी
जब मेरी याद आई होगी
तो वो खूब रोये होंगे
मैंने सपनों में जाकर
उनको सताया होगा
तब वो रात भर
न सो पाये होंगे
और मैं सोचता हूँ
चैन की नींद कहाँ
मेरे विचारों में वो
खुद खोये होंगे।

'..........'

पवन संदेशा लाया है
मिलन होगा सपनों में
खुशी के मारे मैं आज
सो ना पाया तो क्या होगा
खो गया हूँ भूल भुलैया में
खोज न पाया तो क्या होगा
दीदार न मिला उनका हमें
पागल हो गया तो क्या होगा।

साकिन केशवाणी

आपको साथी बनाया जब से
होश खो दिये मैंने तब से
आपकी झुकी पलकों का भार
इतना कि मैं दब गया तब से।

'..........'

थोड़ी सी मदिरा उड़ेल दो
यह प्याली अभी खाली है
आ सको तो आ जाओ
यह मकां अभी खाली है।
दिल जैसी सुविधा
और कहीं न मिलेगी
मान जाओ मेरा कहा
मेरा दिल अभी खाली है।

'..........'

उन्होंने कहा था
जान दे देंगे प्यार में
अब घबरा रहे हैं
आने से बरसात में
हमने तो कहा था
आन मिलो रात में
वो शरमा कर रह गये
अँधेरे की बात में।

'..........'

एक फूल की बात थी
वो भी वो कहाँ समझ पाये
फिर मद भरे गुलजार की
बात वो क्या समझ पायेंगे
उनकी तस्वीर तो दिल में है
दीवार पर लगा के क्या करेंगे
हम तो उन पर मर मिटे हैं
अब जिन्दा रह कर क्या करेंगे।

'..........'

संध्या की ललाश में जब
नजरें मिली थीं– ऐसा याद है
जाते जाते उठ कर बोले
फिर कभी मिलेंगे वादा रहा
आंखों की मदहोशी और
दिल की खामोशी याद है।
नजरें झुकी झुकी सी थीं
कुछ कुछ ऐसा याद है।

'..........'

रह रह कर दिल को दर्द
परेशान करे तो क्या करूं
हर दम जो उनकी याद
सताये तो मैं क्या करूं
दिया था उसने कोल
होगी मुलाकात सपनों में
मगर रात भर नींद न आए
तो फिर मैं क्या करूं।

कालू मियां मजाक चिश्ती

करो अगर दिलरूबा को सजा
तो राग में करना
कतल बुलबुल का करना हो
तो बाग में करना
आपको रिझा न पाया
चाहा है तुमको बहुत
मगर करो भस्म मुझे तो
प्रणय की आग में करना।

जटिलराय व्यास – 'जटिल'

सोलह कला से खिली
सुहागन सी पूनम रात थी
वो आये मैंने सम्मान किया
वो एक मोहब्बत की बात थी
दिल खिले रस छलके
हम बहुत परितृप्त हुए
मगर जब आंख खुली तो समझे
वो केवल सपनों की सौगात थी।

'..........'

मोहब्बत में मत लो परीक्षा
मुझ जैसे दीवाने की
प्यार पाला है मैंने
कांटों की छाया में
रखा है दिल आपके हाथ में
मसलना संभल के
खुशबू नहीं जाएगी
छुपी जो है मेरी काया में।

जयंत सेठ

उसके महकते केशों की
तासीर क्या कहूँ
उसकी खुशबू से मेरी
कल्पनायें तर हैं
उनके इश्क की यह
रंगीनियां ना पूछ
छाई हैं चारों तरफ
आज एक बहार है।

'..........'

मोहब्बत की दुनिया की
यह रीत निराली है
यहाँ बोली जाने वाली
भाषा भी निराली है
इशारे आंखों से होते हैं
वो बड़े गजब के हैं
उसमें जो मदहोशी है
वो मय की प्याली है
वो क्या समझेंगे
जिनका दिल खाली है।

'..........'

यह सच है फूलों में
कौन कहता है खार नहीं
कैसे कह दूं सागर को
उसमें कोई ज्वार नहीं
यह कैसी जिन्दगानी है
जहाँ मिलता कोई प्यार नहीं
इश्क करना आसान सही
यह फूलों का हार नहीं।

'..........'

खिली हुई चांदनी आज
सागर से ज्वार मांगती है
कोई प्यासी कहानी
उसका सार मांगती है
कब तक प्रतीक्षा करें
जिन्दगी प्यार मांगती है
यह मदमस्त जवानी देखो
फूलों से खार मांगती है।

'..........'

अश्रु भरी आंखों में
काजल को स्थान न मिला
और महेंदी लगे पाँवों में
पायल को स्थान न मिला
वो प्यार भरी अदा उनकी
और मदभरी जवानी
उनके रेशमी जिगर में
'घायल' को स्थान न मिला।

अमृत – 'घायल'

तुम्हारे नयनों के अश्रु बिन्दु
जल समझ कर पी गया
देखता रहा रेगिस्तान
और मैं मृगजल पी गया
प्रेम का पागलपन देख
मेरे प्यार की कसम
तेरे साथ बिताया
एक एक पल मैं जी गया।

'..........'

प्रणय की पहचान जग में
बहुत तरह से है
आज एक नया अंदाज
मेरे दिल में आया है
मोहब्बत तो एक दूसरी
जिन्दगी का सर्जन है
खुदा ने यह काम
इन्सान को दिया है।

'..........'

एक दिन उसने पूछा
मोहब्बत क्या है
उसके सवाल ने मेरे
अरमान जगा दिये
उनको मैंने प्यार सिखाया
नयनों में तस्वीर बनी
पूछने वाले ने सब
सवाल भगा दिये।

'..........'

अधूरा है यह आकाश
सितारों के बिना
अधूरा है सागर
किनारों के बिना
अधूरी है कुदरत
फूल-पत्तों के बिना
और यह जिन्दगी भी
अधूरी है तुम्हारे बिना।

आशित हैदराबादी

चांद-सितारों के साथ आज
रात सुहानी आ रही है
कोई सुंदर सा सपना लेकर
प्यार की सौगात आ रही है
सजा दो हृदय का यह महल
अपने आंसुओं के तोरण से
बड़ी शान से देखो आज
दर्द की बारात आ रही है

आशित हैदराबादी

नजरों के जाम छलका के
आप कहाँ चले
जिगर को यों तरसा के
आप कहाँ चले
मैंने दिये थे जो फूल
माफ करना मुझे
प्रणय के पुष्पों को
कुचला के कहाँ चले
खुले हैं दिल के द्वार
ठहरो जरा तुम
तुमको बुलाये मेरा प्यार
हमे छोड़ कहाँ चले।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

दिल के दरवाजों पर
कोई ताले नहीं होते
बंधन दिलदार को
कभी प्यारे नहीं होते
क्यों शंका कर रही हो
दिलरुबा अपने मन में
अमावस की रात को
क्या तारे नहीं होते।

'..........'

नजरें मिलाकर नजर से
वो नजरें झुका रहे हैं
शरम ! तुम बीच में कहाँ आ गईं
वो कयामत को ढ़ा रहे हैं।

साबिर वटवा

मेरा समां था या
तुम्हारा समां था
बीत गया वो सुहानी
यादों का समां था
साथ साथ गुजारी रातें
वो मिलन का समां था
न बिछड़ेंगे ऐसे कहते थे
वो वादों का समां था।

सतीश नकाब

विचारों ने साथ ना छोड़ा कभी
मेरी एकलता मैंने निभा ली है।
बस यही एक मेरा गुनाह था कि
मैंने तुम्हारी तस्वीर बना ली है।
जब हम मिलते थे वो यादें
मैंने अपने दिल में बसा ली हैं।
अब तो खुशी भी सही नहीं जाती
कोई दर्द दो यह रस्म निराली है।

सगीर

अभी तो अलविदा कहकर
अलग हो जाएँगे
रास्ते में फिर कभी वो
मिल गए तो क्या होगा।
तस्वीर बोल उठेगी तो
मैं कैसे चुप रह पाऊँगा
ख्वाब में जब वो आएँगे
फिर बाँहों का क्या होगा।

जवाहर बक्षी

दूर धरती से गगन
इसलिए रहता होगा
कि विरह जैसा मजा
मिलन में कहाँ होगा।

हसम बैद्य मोमिन

जरा सोच समझकर
यह नाव खेना तुम
मोहब्बत के समंदर को
कोई किनारे नहीं होते।

शेखादम आबुवाला

जुल्फों का अंधेरा था
यह तो याद है
फिर कब हुई सुबह
यह याद नहीं।

आदिल मन्सूरी

जब भी मिलते हैं वो
हँस देते हैं आंखों से
यह भी क्या कम है
इतना तो व्यवहार है
यह कोई क्या समझे
दिल क्यों बेकरार है।
उन आंखों के इशारों में
छुपा कितना प्यार है।

इजन धोराजवी

ओ हकीम जा तेरे पास
मेरे लिये कोई दवाई नहीं
मैं इश्क का बीमार हूँ
इसकी होती कोई दुहाई नहीं।

सिराज धोराजवी

उस गोरे गालों पर
एक काले तिल की बात
सही मानो तो यह शीर्षक
एक सुंदर कहानी का है।

सैफ पालनपुरी

मन और हृदय की दशा
दोनों एक सरीखी हैं
एक पागल लगता है
एक घायल लगता है
मेरे प्यार को स्थान दो
तुम्हारी इन आंखों में
तो फिर वो कंकर नहीं
वो काजल लगता है।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

नादान मैंने भर ली
एक महफिल अमावस को
सितारे सब आये
मगर चांद न आया।

भीखू भाई चावड़ा – 'नादान'

जमाना मेरी मोहब्बत को
जाल समझता है
करता हूँ सलाम तो
वो सवाल समझता है
बेदर्द जमाना दिल तोड़
फिर हाल पूछता है
इस दिवाने दिल को
वो पागल समझता है।

बदरी काचवाला

तुम नजरें मिलाओ तो
सपनों की बात करूँ
हाथों में हाथ लेकर
बेचैनी की बात करूँ
तेरी जुल्फों से उलझूँ
तो वादों की बात करूँ
रात के लम्बे लम्बे
निसासों की बात करूँ।

सतीश नकाब

वफा व्यापार बन जाए
तो हम क्या करें
प्यार मजबूर हो जाए
तो हम क्या करें
तुम अगर दगा करो तो
डूब मरना कबूल है
लहरें लाचार हो जाएँ
तो हम क्या करें।

जयन्त जोशी – 'शबाब'

हमारी कल्पनायें आज
अजब व्यवहार मांगती हैं
किसी की चाहत का
अनोखा प्यार मांगती हैं
जो न समझे वो खुद
करावें अपना उपचार
यह दर्द यह वेदनायें
एक उपहार मांगती हैं
दिल लिया दर्द दिया
उसका आभार मानती हैं ।

जयन्त जोशी – 'शबाब'

एक भूल मैं आज कर बैठा
तुमको अपना मित्र बना बैठा
लोग ईर्ष्या करते हैं फिर भी
मैं तुम्हारा चित्र बना बैठा
प्यार में पागल होकर तुमको
इतिहास का पात्र बना बैठा
तुम दिल को इतने भा गए कि
तुम्हें एक खत लिख बैठा ।

'..........'

प्रणय की यह जिन्दगी
बीत गई और बीत जाएगी
एक ऐसी खूबसूरत भूल
सुधार कर क्या करेंगे।

खलिश बड़ोदवी

उनके हुस्न के सामने
चांदनी फीकी थी
भाल पर किसी ने की
वो एक टीकी थी
उनके हुस्न को 'कामिल'
उसने खूब बढ़ाया
तिल नहीं वो हमारे
आंख की कीकी थी।

कामिल बुखारी

प्रणय में जो दिव्यता है वो
दुनिया की बात हो नहीं सकती
सोच-समझकर मोहब्बत में
रंगत आ नहीं सकती
हमारा भी हिस्सा है आज
तुम्हारी बेवफाई में
मोहब्बत की कोई बात
अंगत हो नहीं सकती।

आतिश जामनगरी

तुम नहीं तो दुनिया उदास
पूनम की रात भी लगे अमावस
कैसे छुपाऊँ सुरा की प्यास
ज्यादा पियुं लगे ज्यादा प्यास
खुशी और गम का कैसा संबंध
दिल उदास तो दुनिया उदास
नजर नजर में फर्क है
आंखों से दूर पर दिल के पास

नाझ मांगरोली

मिल जाते तो उनसे
पूछ लेता मैं प्यार से
दिल में जल रहा
यह अंगार कैसा
न नींद रात को
न आराम दिन में
सब कहते हैं हो गया
कुछ प्यार जैसा।

महेन्द्र व्यास – 'अचल'

जग जाहिर हो गया यह
छुपकर मिलना कभी–कभी
दिल में छुपा न सके
यह बातें नयन कभी–कभी
वो एक सुंदर सा मुखड़ा
नहीं दिखता है जब
देख लेता हूँ 'अचल'
दर्पण में मैं कभी–कभी
इस तरह से बचा ली
उपवन की इज्जत हमने
कांटे चूम लिए सदा
सुमन समझ कभी–कभी।

महेन्द्र व्यास – 'अचल'

आओ पधारो आज पधारो हमारे दिल में
हुस्न के लायक यहां आपको प्यार मिलेगा
कभी तो आ के आप पावन करो यह आंगन
हमारा आंगन भी आपको घर लगेगा

अमृत – 'घायल'

चांद हो तो चांदनी रात में
आकर मिल जाया करो
फूल हो तो उसकी खुशबू
थोड़ी सी दे जाया करो
दान करोगे तो फिर खुदा
और भी देता रहेगा
हुस्न की थोड़ी खैरात
हमें भी कर जाया करो।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

प्रणय की सर्वप्रथम
आंखें बन गईं जुबानी
नजरें बन गईं भाषा
दिल ने कह दी कहानी।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

कितने जालिम हो कि
दिन भर मुझको सताते हो
कितने अच्छे हो कि रात को
सपनों में आ जाते हो।

सैफ पालनपुरी

कहना है बहुत मगर
थोड़ा भी समय नहीं
शब्द तो बहुत हैं पर
उसमें कोई लय नहीं
हमारा प्यार सच्चा है
यह कोई अभिनय नहीं
मिलन का वादा करो
समय चाहे तय नहीं।

हरीन्द्र दवे

आप उतर आये हो
नजर से हृदय तक
पहुंच गई है बात
अब यह प्रणय तक
इस इंतजार का मजा
इतना अच्छा लगता है
देखेंगे राह हम
तुम्हारी प्रलय तक।

शिव कुमार नाकर – 'सांझ'

जीवन भर का अनुभव
बहुत संगीन लगता है
सुखी हूँ फिर भी क्यों
दिल गमगीन रहता है
तकाजा है उमर का 'चेतन'
नहीं तो यह बात सच है कि
प्यार जब पलता है तो
संसार रंगीन लगता है।

चेतन कुमार

प्रेम तो अंधा है उसे
शकुन अपशकुन क्या
अंधे के नयन अगर
खुले न खुले तो क्या।

'..........'

निर्मल होगा प्यार तो
जरूर उसकी चाहत होगी
दुनिया में मोहब्बत की बात
धीरे-धीरे बहती होगी
महफिल में जब आप के
आने की चर्चा आती है
लोगों की नजर मेरे ऊपर
जरूर पड़ती होगी।

मरीझ

प्रणय की बात सब जगह
फैल जाए तो कितना अच्छा
गलियां और बाजारों में
चर्चा हो जाए तो कितना अच्छा
रहता हूँ मैं रात-दिन
उनकी याद में खोया-खोया
अगर वो ही मुझे भूल जाएँ
तो फिर कितना अच्छा !

सोलिड महेता

अच्छा हुआ आपने
दिल को बस में कर लिया
वरना हम संसार में
सबके होकर रह जाते।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

एक बार मैंने उड़ाई थी
मेरी प्रेम की पतंग
टूट कर वो तेरी खिड़की में
जाकर अटक गई
कैसे कहूँ कैसा लगा
मेरे दिल की क्या हालत हुई
जैसे गुलाब की पंखुड़ियां
वहाँ जाकर लटक गईं।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

दो दिलों का मिलन
एक सामान्य सी बात थी
थोड़ा सा उसमें दर्द मिला दो
तो फिर वो मोहब्बत लगेगी।

'..........'

जवानों की सभा में जाना था इसलिए
उधार किसी से जवानी लेकर आया हूँ
अपना रूपरंग संवार के 'शयदा'
एक नई कहानी लेकर आया हूँ।

शयदा

मेरी कहानी पूरी हो गयी
जीवन में तुम्हारे बिना
और किताब पूरी हो गयी
आखरी प्रकरण बिना
सब प्रसंग याद आते हैं
तुम्हारी हाजरी बिना
आज वो हो गए हैं पराए
अब किसी कारण बिना।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

फूलों का बोझ कभी
डालियों को नहीं लगता
और आंसुओं का बोझ
दिलदार को नहीं लगता
प्यार में यह कैसा
पागलपन है
जगकर सपने देखना
उसका भार नहीं लगता।

'..........'

ओ ओस के मोती बिन्दु
न कर फूलों से छेड़छाड़
कहीं आंसू भी न सीख लें
करना नयनों से छेड़छाड़।
मोती कहूँ या अश्रु बिन्दु
न करना कोई उनसे छेड़छाड़
कहीं कयामत न ढालें
यह दो दिलों की छेड़छाड़।

शून्य पालनपुरी

तुम देवता होकर भी
पत्थर बन गए
उत्तर तो दो कैसे
निरुत्तर हो गए
तू खुदा बन गया
कि बनाया तुझे हमने
यही प्रश्न है कि तुम
प्रश्न का उत्तर बन गए।

‘..........’

वो कैसे पिघल जाते हैं
एक बार उनके दिल को
पत्थर तो कहो।
हो जायेंगे ‘बेफाम’ सब राजी
उसमें सब रहने वाले
कभी कबर को एक बार
मरने वाले का घर तो कहो।

अशोक त्रिवेदी

मन शुद्धि के लिए
आखिर जाम का सेवन किया
पाप धोकर सुरा से
पुण्य का पालन किया।
बेकार में जिन्दगी बरबाद की
ज्ञान के पीछे
इस जवानी का सुरालय में
फिर से दर्शन किया।

शून्य पालनपुरी

दिल टूटा थोड़ी तकलीफ तो हुई
जिन्दगी एक बरबाद हो गई है
फिर खंडहर मंदिरों के देख
ऐसा लगा दिल को ठीक है
खुद खुदा की आज यहाँ
खानाखराबी हो गई है।

मधुकर रांदेरिया

अरमान जब प्यास के पूरे हुए होंगे
तब हमारे जाम के चूरे हुए होंगे
फिर गगन में इतने सितारे हुए होंगे
जब किसी विराट स्वप्न के चूरे हुए होंगे।

'..........'

जगत से बेपरवाह हूँ
यही मेरी अमीरी है
सब कुछ लुट गया
ऐसी मेरी फकीरी है
फिर भी एक वजह से
दिल को सहारा मिलता है
कि जो दशा मेरी हुई है
तेरी वो यादें हमारी हैं।

'..........'

कुछ लोग बेचारे मेरी मौत का
इन्तजार कर रहे थे इसलिये
ले जाना मेरा यह जनाजा
मेरे ही दुश्मनों की गली से।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

अनुभव से आई समझ
मैं साथ रखता हूँ
कोई जोखम का बीमा नहीं
खाली हाथ रहता हूँ
भले ही नास्तिक समझे दुनिया
ऐसा मानव हूँ मैं जो
हृदय में छुपा के पास
जगत का नाथ रखता हूँ।

‘..........’

पृथ्वी जैसी बैठक नहीं
आकाश जैसा छत्र नहीं
प्रेम जैसी मिठास नहीं
आप जैसा मित्र नहीं

महेन्द समीर – ‘उशनस’

मांग–मांग कर प्रभु के पास
मैंने कुछ ऐसा मांगा
मौत के बाद मुझे खुद को
देखना है घड़ी भर के लिए
मुझे शंका है कि कोई
यहाँ आंसू नहीं बहाएगा
मेरे अपने शव पर मुझे
रोना है घड़ी भर के लिए।

युसुफ बुकवाला

अध्याय 2

पूछा मैंने भोमिया से
राह यह कहाँ जा रही है
अनजान हूँ कहा भोमिया ने
सब आते हैं और जाते हैं।

'..........'

यह तो खबर है दोस्त
कि चारों तरफ बहार है
अफसोस इतना कि वो मेरे
घर के बाहर है।

'..........'

तुम सपने बेचते हो
और मैं सपने देखता हूँ
और हकीकत में हम
दोनों दु:खी हैं यह सच है।

'..........'

मैं हकीकत में मानता हूँ मगर
मुझे कल्पनायें भी पसंद हैं
वचन आपसे पूर्ण न हो सका
मगर मुझे रोज के वादे भी पसंद हैं।

'..........'

सितमगर से मोहब्बत हो गई है
जिन्दगी में एक गफलत हो गई है
मत पोंछो मेरे इन आँसुओं को
मुझे रोने की एक आदत हो गई है।

आसिम रांदेरी

मयखाने में बितायी
या मस्जिद में बितायी
उसका हिसाब हम
दुनिया को क्यों देवें
अपनी थी यह जिन्दगी हमारी
गुजारी हमने कहीं भी गुजारी।

'..........'

तुम्हारे पास राम है
हमारे पास जाम है
मतलब क्या झंझटों से
दोनों को आराम है।

शेखादम आबुवाला

उन सबका नाम देकर
मुझे नहीं होना खराब
अच्छे-अच्छे लोगों ने
सताया है मुझे
यह लोग सब जो आज
मेरी मौत पर रो रहे हैं
उन सबने जिन्दगी भर
रुलाया है मुझे।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

मोहब्बत में रंगीनियाँ कहाँ से होती
अगर यौवन के मदभरे इशारे न होते
विरह की रात को न जाने क्या होता
गगन में अगर बेशुमार सितारे न होते।

अमर पालनपुरी

कुदरत का कमाल है
चमन में जो फूल हैं
साथ में काँटे दिये
यह उसकी भूल है
मेरे को इतनी श्रद्धा है
तेरी दया के ऊपर
किये नहीं जो पाप
वो भी मुझे कबूल हैं
मेरी मौत पर इतने लोग
रो रहे हैं
'बेफाम' जिन्दगी के सब
दु:ख वसूल हैं।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

मैं नजर से पी रहा था
तो दिल ने शाप दिया
तेरा हाथ जिन्दगी भर
जाम तक न पहुंचे।

'..........'

आप आज यहाँ पधारेंगे
चमन में सबको खबर हो गई है
सब डालियों ने गरदन झुका ली है
और फूलों ने नीची नजर कर ली है
आप जब यहाँ हो उपवन में
कलाकार का चित्र पूर्ण लगता है
जब तुम नहीं होते तब सब कहते हैं
विधाता की कोई कसर रह गई है।

गनी दहींवाला

मैंने कभी किसी की उपेक्षा नहीं की
हमने हर उम्र की इज्जत़ की है
शराबी की यौवन में सोहबत की है
फकीरों की बुढ़ापे में ख़िदमत की है।

अमृत – 'घायल'

बिना पिये आप क्यों
इतने मदहोश लगते हो
नजर के सामने हो
फिर भी नजर से दूर लगते हो
मैं पूछता नहीं तुम से मगर
क्यों इतने मजबूर लगते हो
हृदय कोमल है फिर भी
बाहर से कितने क्रूर लगते हो।

चन्द्रकान्त महेता

दिल के बजाय जाम की
कदर कहीं ज्यादा हो जाती है
और मय की दुनिया पर उसकी
बहुत असर हो जाती है
दिल जब टूटता है तो
किसी को खबर नहीं होती
जाम जब फूटता है तो
दुनिया को खबर हो जाती है।

मुकबिल कुरैशी

तुम परख न पाओगे
हमारे दर्द ही ऐसे हैं
पत्थरों का आघात नहीं
यह मार है फूलों की।

'..........'

मजा नहीं है मगर
पिये बिना नहीं चलता
प्यास बढ़ायी आपने
शराब पिला कर
हे प्रभु यह कैसा रंग
जमाया है तुमने
गुलाबी दिल को एक भी
गुलाब न दे कर।

मरीझ

महकता फूल
जवानी की अदा है
फूल को चूंटना
जवानी का मजा है
चूंटते हुए डंख लगे
वो जवानी की सजा है
अदा, मजा, सजा,
यह जवानी की क़जा है।

'..........'

जब तक काँटा
हाथों में लगता नहीं
फूलों का सच्चा परिचय
तब तक होता नहीं।

'..........'

तुम आये हम हरखा गये
तुम बोले हम शरमा गये
तुम चले हम मुरझा गये
अरे बेक़ार में ही घबरा गये।

'..........'

यह दिल है जो आज
मोहब्बत माँगता है
जन्नत को क्या करूँ
वो तो एक खयाली मुकाम है
दिल में न प्यार
आँखों में न इन्तजार
ऐसा जीवन क्या
ऐसी मौत भी हराम है।

'..........'

ओ खुदा तू पीने वाले को
जन्नत मत देना
एक ऐसी जगह बता दे
जहाँ मय नहीं मिलती।

'..........'

मेरी याद मेरे पीछे
इस तरह भुला दी गई
उंगली पानी से निकली
और जगह भर दी गई।

'..........'

वो सामने मिले तो
नजरें झुक गईं
रास्ते में ही मुझे
मंजिल मिल गई
मेरे यह आँसू आज
बहुत खुशनसीब हैं
उनको तेरी आँखों में
जगह मिल गई।

'..........'

नफरत भी चाहिए
जिन्दगी में जिस तरह
कब तक करते रहेंगे
आप प्यार हमें इस तरह।

‘..........’

दिलासा देने वालों ने जब पूछा
तो मेरे को यह ख्याल आया
वरना मैं दु:खी हूँ
यह मुझे ख़बर न थी ।
मेरी परेशानी का कारण
तुम हो यह मैं नहीं जानता
आप दया के सागर हो
मेरे पापों का हिसाब नहीं जानता।

आसिम रांदेरी

उसने दिया एक जाम
तो मैं जाम पी गया
भले आये कोई अंजाम
फिर भी मैं जाम पी गया
मुझे साकी से था काम
उसने दिया जाम
उसमें था क्या
किसको है ध्यान
खाली था या छलकता
मैं वो जाम पी गया।

महेन्द समीर – ‘उशनस’

जनाजे पर आ कर वो बोले
भूल जाना मुझे
यानी कि अपनी याद
ताजा कर गई
यह तो गनीमत है कि
थोड़ी हँसकर
मेरी मौत को वो
राजी कर गई।

'..........'

आकाश में यह मेघधनुष
रंग बदलता रहता है
मगर यह जिन्दगी है जो
अपने रंग नहीं बदलती
मैं फूल श्रद्धा से चढ़ाता हूँ
देवी के चरण-कमलों में
फूल खुश होते हैं
लेकिन देवी नहीं मुस्कराती।

'..........'

न आना तुम यहाँ
कब्र पर फूल चढ़ाने
मैं सो गया हूँ
अब तुम्हारा इन्तजार नहीं।

'..........'

एक बेखबर को
कहाँ है इसकी खबर
जब से पैदा हुए तब से
बाँध ली है मुट्ठी में कबर।

'..........'

खुदा कहे माँग बंदे तो
ऐसी आँख माँग लूँगा
एक अश्रुबिन्दु नहीं
दस लाख माँग लूँगा
नहीं छोड़नी है कोई निशानी
इस दुनिया में– मौत के बाद
मिलेगी तो श्मशान के पास
अपनी राख माँग लूँगा।

'..........'

यह मत पूछो कि
तुमको चाहता हूँ मैं कितना
कसम है तुम्हारी
मुझे भी नहीं मालूम इतना।

'..........'

शरम रोकती है तुझे आने से
मुझे विनय रोकता है
तुम आ नहीं सकतीं
मैं बुला नहीं सकता
यह कैसी हालत है दोनों की
चाहकर भी हम चाह नहीं सकते।

'..........'

मुझे मालूम है मेरी कोई
गिनती नहीं है उनकी सभा में
यह सब समझें यह सब जानें
लेकिन उनकी आँखों में
छुपा हुआ जो प्यार है
हम समझे हम ही जाने।

आसिम रांदेरी

मैंने मय को दिल के
दर्द की दवा मानी थी
पीछे मालूम पड़ा कि वो
भी एक बीमारी थी।

'..........'

ओ प्यार का खेल खेलने वाले
तुम इश्क लड़ाना क्या जानो
तुम आँख लड़ाना जानते हो
मैं दिल लगाना जानता हूँ
तुम आग लगाना जानते हो
मैं आग बुझाना जानता हूँ
तुम वादे करना जानते हो
मैं इन्तजार करना जानता हूँ।

'..........'

जिग़र जानता है
नजर जानती है
तुझे दिल परिचय
बिना जानता है।

'..........'

कभी तो आओगे
बस इसी उम्मीद पर
हजारों बरसों से
महफिल सजायी है।
कि तुमको खुद को
सजा ना सका 'बेफाम'
पर तुम्हारी छवि
मैंने सजायी है।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

आँखें वो ही हैं
पर नजर कहाँ है
जो थी पहले जैसी
अब वो असर कहाँ है।
जहाँ हो सब भूले अब
उनकी खबर कहाँ है।

'..........'

मुझे माफ करना
क्या आपको खबर है
यह बात छोटी सी
मगर समझ से परे है।
मेरे दिल की दुर्दशा का
कारण कौन है
तुम्हारी नजर है
या मेरी नजर है।

आसिम रांदेरी

बात–बात में समय बीत गया
फिर भी तुम्हें न कभी भुला पाया
स्नेह की यह कैसी है माया
अभी भी साथ में है तुम्हारी छाया।

'..........'

देखो दीवार पर तस्वीर
बन कर लटक रहा हूँ
मेरी जिन्दगी भी अजीब है
घर की शोभा बढ़ा रहा हूँ।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

अब फूलों से नहीं बेफाम
सितारों से सजाओ कबर
मैं अब जमीन में नहीं
आसमान में रहता हूँ।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

अपने बीच अब कहाँ
पहले जैसा मेल है
तुम कहती हो चम्पा
मैं कहता हूँ केल है
परेशान ना करो मुझे
यह तो एक खेल है
मानो या न मानो
यह प्रभु का ही खेल है।

जीवाभाई प्रजापति 'पतित'

शाम होते होते मुरझायी
यह कलियां देखीं
जवानी बीती बुढ़ापे में
मुड़ती गलियां देखीं
वो गुलाबी गालों की लाली
एक आकर्षण था जो
उन्हीं गालों पर पड़ी आज
यह झुर्रियां देखीं।

दिलहर संघवी

मृत्यु उदास थी उसे
सहारा चाहिए था
वो खुश रहे इसलिए
अर्ध्य में देदी जिन्दगी
आंसू न बहाना तुम
मेरी मौत पर क्योंकि
तुम को खुशी देने
अर्पित कर दी हमने जिन्दगी।

डॉ. बटुकराय ह. पंडया

मैंने कितने भग्न हृदयों को
गीत गाते हुए देखा है
सहे धोखे सभी जो मिले
पर मुस्कुराते हुए देखा है
वो गाया करते हैं आज भी
नगमें बीती यादों के
पीकर विष के घूंट फिर भी
जीते हुए उनको देखा है।

डॉ. के. के. एस. वर्मा

दिल का दर्द जानने को
तेरा मन छोटा पड़ेगा
बंद करने खुशबू को
चमन भी कम पड़ेगा
चांद–सितारों के लिये
गगन भी कम पड़ेगा
मानव का मन जानने को
पूरा जीवन भी कम पड़ेगा।

शिवकुमार नाकर 'सांझ'

दिल की दौलत को समझे
ऐसा जमाना अब कहाँ
हर एक पूछता है मुझसे
छुपाया खजाना कहाँ
दिल खोलकर दिखाऊं तो
फिर हंसकर यह कहता है
वाह भाई वाह किससे पूछे
बताओ वो दिवाना है कहाँ।

जयंतीलाल दवे विश्वरथ

पवन संदेश लाया है कि
मिलन होगा सपनों में
खुशी के मारे आज अगर
नींद न आए तो क्या होगा।

साकिन केशवाणी

यह दर्द मोहब्बत का ऐसा है
जो कभी भी मिटता नहीं
और ऊपर से मजा यह
उसकी कोई दवा नहीं।

मरीझ

दिल में उनकी याद की
सिर्फ कहानियां रह गईं
बहारें चली गई और
सूखी पंखुड़ियां रह गईं।

रमेश शाह

यह दर्द दिल में
यों ही नहीं उठा है
मैंने फिर तुम्हारी
छवि चूम ली है।

हरीन्द्र दवे

मोहब्बत और व्यवहार में
सिर्फ एक ही फर्क है
मैं पूछूं दर्द तुम्हारा
तुम पूछो दवा मेरी।

मरीझ

इस जख़्म के ऊपर
किसी का नाम नहीं
तुमने ही दिया होगा
यह हमारा काम नहीं
मय है मदिरा है पर
साथ में जाम नहीं
आंखों से पिला दे वरना
साकी तेरा नाम नहीं।

सैफ पालनपुरी

कांटे और फूलों का यह संगम
तुमने सोचा तो होगा जरूर से
ऐसा क्यों किया तूने हे प्रभु
दिल को गम दिया है शुरू से।

शेखादम आबुवाला

मधुर थे मीठे थे सुंदर थे
यह तुम्हारे प्रेमपत्र
कभी दर्द की दास्तान बनेंगे
यह न थी खबर मेरे मित्र।

मरीझ

किया चकनाचूर जिसने
वो सपनों की रात कैसे भूलें
पल भूलें घड़ी भूलें
भूल गये संध्या उषा
दिन भी भूलें कोई बात नहीं
यह मिलन की रात कैसे भूलें।

'..........'

फूलों ने कैसे जान ली
अपनी कहानी प्यार की
मैंने तो चमन में कभी
किसी को कही न थी।

हरीन्द्र दवे

मदहोशी में डूबने के लिए सदा
किसी के नयनों से जाम भर ले
जब दिल हो जाए उदास तो
फिर सुरालय का पैगाम सुन ले
वफा को आंसुओं का दिलासा दे
किसी बेवफा के नाम करले
जवानी तो चली जाएगी 'सीरती'
भला हो कर खुदा का नाम ले ले।

'सीरती'

खुशी की कल्पना से
दिल बहला नहीं सकता
सुख का चोला पहन
दु:ख को भुला नहीं सकता
प्रणय में हो गया है मेरा
जीवन शुष्क इस तरह
रो रहा हूँ पर आंखों से
आंसू बहा नहीं सकता।
भगवान बांध दीये हैं तूने
'नादान' के दोनों हाथ ऐसे
साकी का दिया जाम
होठों को पिला नहीं सकता।

नादान

नयनों में आंसू देख
मुझे आ गई हंसी
मुझे अपने ही प्यार पर
फिर आ गई हंसी
किनारे पर आकर जब
नाव डूब गई तो
उस मझधार पर
मुझे आ गई हंसी
मुझे साथ लेकर चले
फिर राह में छोड़ दिया
तुम्हारा आभार इस पर
मुझे आ गई हंसी।

शेखादम आबूवाला

हमेशा जिन्दगी में
दु:ख के दिन नहीं होते
चमन में फूल भी हैं
सिर्फ कांटे नहीं होते
प्रणय का आधार है
सौन्दर्य ह्रदय का
शमा अगर न जले
तो परवाने नहीं होते
मोती का मूल्य भले
संसार कर ले मगर
हमारे आंसू इतने
सस्ते नहीं होते
समय ऐसा भी आता है
इस जिन्दगी में
जब साथ में खुदा के
सहारे नहीं होते

मुकबिल कुरैशी

जफा की बातें जहां करेगा
वफा की बातें प्रीत करेंगी
प्रणय में जो हलचल होगी
ह्रदय की बातें निगाहें करेंगी
मझधार में तैर कर आए हैं
किन्तु किनारे पर डूब चले
कैसा मिला था सुकानी
यह टूटी नाव कहेगी।

'..........'

धरा पर के सहारे हँस रहे थे
और आभ पर सितारे हँस रहे थे
जैसे कोई तमाशा हो रहा हो
मुझे डूबते देख किनारे हँस रहे थे।

शिव कुमार नाकर 'सांझ'

आंखें बंद करके दौड़े थे
उस दौड़ का अफसोस है
और प्रेम में लगी चोट
उस चोट का अफसोस है
प्रीत का व्यापार है सरीखा
समझ हां की थी दिल ने
फिर भी अंत में खोट आई
उस खोट का अफसोस है।

दिलीप रावल

मेरे मित्र स्नेह के दो शब्द कहेंगे
मेरे बारे में लोग बातें कच्ची करेंगे
मेरी मौत के बाद मेरे शत्रुओं को बुलाना
श्रद्धांजली वो मेरे बारे में सच्ची कहेंगे।

पिनाकिन ठाकर

दुनिया छोड़ बसना था तेरी आंखों में
बरसों से थी तमन्ना अपने मन में
मगर एक वजह से मैं बस न सका कि
मैं आंसू बन बह जाऊँगा फिर रुदन में।

हर्षद दवावाला

आखरी सांस न छूटे
तब तक सब आशा रखते हैं
दवाओं में और दुआओं में
मानव विश्वास रखते हैं
खुली आंखें हैं जब तक
संबंधी मित्र है दुनिया में
जरूरत से ज्यादा घर में
कौन लाश रखते हैं।

देवदास शाह 'अमीर'

प्यासा समझ न पाया
वो मृगजल का जल था
प्रेमपत्र तो आखिर में
अक्षरों का एक छल था
किसी भी फूल पर शाम को
कोई निशानी न रही
वैसे सुबह जो मोती थे
वो अश्रु बिन्दुओं का जल था।

घूनी मांडलिया

यहाँ न है पगडंडी न रास्ता
कैसी है यह सफर तेरी
खुदा का हो गया पल में
जब मिली नजर तेरी
कबर 'बेफाम' की है मगर
टोकरी 'बेफिकर' की
न खिड़की न दरवाजा
कैसी है यह कबर तेरी।

सुरेश झवेरी 'बेफिकर'

जब साज आया हाथ में
तो सुर कम पड़ गए
सुराही दी साकी ने
तो जाम टूट गए
जिन्दगी भर जिसके लिए
हम बेचैन बैठे थे 'अमर'
वो आये उस समय
लो प्राण छूट गए।

अमर पालनपुरी

जगत के जहर पीकर
वो शंकर बन गया
दुःख सारे सहन कर
वो पैगम्बर बन गया
बनता नहीं कोई महान
साधना किये बिना
पूछता हूँ मैं तो फिर तू
कैसे ईश्वर बन गया।

जलन मातरी

उपवन लुटा देने का आरोप है
यह किसकी जवानी पर
कांटों की अदालत बैठी है
लेने को जुबानी फूलों की
इन ओस बिन्दुओं से पूछो
जो फूलों पर मोती बन बैठे हैं
किस किसकी शिकायत करें
यह कहानी है फूलों की।

शून्य पालनपुरी

गम निराशा दर्द बेचैनी
व्यथा और यह आँसू
जीने के लिए देखो
कितना अच्छा सामान है
अब तो मैं कबर में
आराम से सोया हूँ
देखो कितना अच्छा
यह मेरा मकान है।

शेखादम आबुवाला

पहले यहां पवन में
कभी इतनी महक न थी
शायद रास्ते में तेरे से
मुलाकात हो गई होगी।

आदिल मन्सूरी

सागर था नाव थी साहिल था
उस समय तूने खुदा को ललकारा था
जब तू मझधार में डूबने लगा
तब खुदा को तूने पहचाना था।

अशोकपुरी गोस्वामी

यह मुझे याद है
आंसू बहुत महंगे हैं
मगर कोई पल्ला पसारे
तो फिर मैं क्या करूँ।

आदिल मन्सूरी

दो मिनिट के लिए मौन हैं
उपवन में भी शांति है
लगता है किसी ने आज
फूलों को चूंटा है डाली से।
दिल की क्यारी में पले जो
उसे लूट लिया माली से
यह पवन का काम नहीं
किया है किसी ने जाली से।

उस्मान मिलन

अहम करने वाले आदमियों का
नाम लिखना चालू करो
तो सबसे पहले इसमें
खुदा का नाम आएगा।

'जलन' – मातरी

दर्द सहने की एक आदत सी
हो गई यह जिन्दगानी
पलकों से कह दो
न करें आंसुओं से छेड़खानी
कांटों से भी कह दो
न करें फूलों से छेड़खानी।
और परवानों से कह दो
न करें शमा से छेड़खानी।

डॉ. सुचेता भाडलावाला

मैंने बहुत से खत तेरे
बचा के रखे हैं अपने पास
जो तूने लिखे थे मेरे नाम
पढ़ भी नहीं सकता
जला भी नहीं सकता और
लौटाने को दिल नहीं चाहता
उसमें छुपी तेरी तस्वीर
देख भी नहीं सकता
मिटा भी नहीं सकता
उसमें छुपा तेरा प्यार
उसे पा भी नहीं सकता
भुला भी नहीं सकता।

आदिल मन्सूरी

जीवन में थोड़ा थोड़ा दर्द
और थोड़ी दुआ होनी चाहिए
थोड़ा मजा और
थोड़ी वेदना होनी चाहिए
थोड़ा मिलना थोड़ा बिछड़ना
ऐसी जिन्दगी होनी चाहिए
जिन्दगी है तो मौत भी है
ऐसी दुनिया होनी चाहिए।

अमीन आझाद

उनके इशारों ने मुझे बुलाया है
मैंने महफिल की इबादत की है
मैंने मय उधार की नहीं पी
मैंने साकी को बहुत दुआएँ दी है।

रूस्वा मझलूमी

पत्थर था जब मैं
ठोकर लगती थी सदा
ईश्वर बन गया हूँ मैं
तुमसे मिलने के बाद
शिल्पी ने आकार दिया
मंदिर में बिराजमान हूँ
अब मैं पवित्र हो गया हूँ
मूर्ति बनने के बाद।

पुरुराज जोशी

कोई हँस दिया कोई रो लिया
कोई गिर गया कोई चल दिया
आंखें बंद हुईं ओढ़ा कफन और
नाटक सुंदर था परदा गिर गया।

'..........'

जीत पर हँसता रहा
हार पर हँसता रहा
फूलों की शैया समझ
अंगारों पर चलता रहा।
ऐ मुसीबत उनकी
जिंदादिली की दाद दे
उन्होंने धरी तलवार
तो मैं धार पर चलता रहा।
जिन्दा दफना के कबर में
फिर वो रोते रहे
और मैं उनके किये
प्यार पर हँसता रहा।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

जीवन और मौत
हर पल मुझे पसंद है
दो जहर या अमृत
जो भी हो मुझे सब पसंद है
तुम मिलो या न मिलो पर
यह वादे सब पसंद हैं
तुम को मुझ से प्यार नहीं मगर
तेरी यादें मुझे सब पसंद हैं।

'..........'

तेरी आशा के भरोसे दिल को
जान–बूझकर उलझाता रहा
जिन्दगी के सब जहर पी कर
शंकर होने का ढोंग रचाता रहा।

दैनिकभाई भोजक

अभी भी जिन्दगी में प्यार बाकी है
पीना पिलाना प्यास बाकी है
उठो साकी भर दो जाम खाली है
अभी भी जिन्दगी में सांस बाकी है।

सालिक पोपटिया

आप के तो मेरे जैसे
लाखों पुजारी हैं
हृदय के मंदिर में
तस्वीर तुम्हारी है
हम तो जन्नत छोड़
आए हैं आपके घर
पहचान यह पुरानी
हमारी तुम्हारी है।

'..........'

खुदा को खोज रहा है इन्सान
कहीं भी वो उसे नहीं मिलता
मिलेगा मगर श्रद्धा बिना
किसी को वो नहीं मिलता
जरूर तेरी इबादत में
कुछ कसर लगती है मुझे
खुदा को तू मिलता है मगर
तुझे खुदा नहीं मिलता।

कुतुब आजाद

कोई भले को पूछता है
कोई बुरे को पूछता है
मतलब से सबको निस्बत है
यहां कौन खरे को पूछता है
इत्र निचोड़ फिर कौन
फूलों की दशा पूछता है
संजोग झुकाते हैं वरना
कौन खुदा को पूछता है।

कैलास पंडित

अब दर्द बढ़ाके क्या करोगे
जिस दर्द का उपचार नहीं
यह खेल प्रणय का ऐसा है
मुश्किल है मगर भार नहीं
सार नहीं यह सच है मगर
कौन करता यहाँ प्यार नहीं
जहाँ मिले दवाई गम की
वो जग में सच्चा प्यार नहीं।

'..........'

प्यार की कीमत नहीं
इन्सान की कीमत नहीं
मानव तेरे अरमानों की
यहाँ कोई कीमत नहीं
दो गज कफन के लिए
सब लड़ते हैं आज यहाँ
जिन्दगी की क्या कहे अरे
मौत की भी कोई कीमत नहीं।

'..........'

गर आपके गोरे गाल पर नहीं
तो फिर उस तिल की शोभा नहीं
बसंत ना हो तो फिर
गूंजती कोयल की शोभा नहीं
हमको तो आपके दिल की
बगीची में खिलना है
आपकी फूलदानी में हमारा
दिल हो तो उसकी शोभा नहीं।

'..........'

विरान दुनिया बसा ली है
जरा देख तो ले
गम की महफिल सजाई है
जरा देख तो ले
भग्न हृदय आंखों में आँसू
जिगर है जख्मी
बहार आई चमन में
जरा देख तो ले।

'..........'

साकी हो महफिल हो
हाथ में भरपूर जाम हो
बेहोशी में होठों पर
उनका ही नाम हो
आंसुओं को छुपा पलकों में
उनको अलबिदा करेंगे
और जिन्दगी को इस तरह
आखिरी सलाम हो।

‘..........’

जिन्दगी में तू कभी थोड़ा सा
किसी का सहारा बनना
लाकर नौका को नजदीक
समंदर का किनारा बनना
वादा करके वो गये हैं
कह गये फिर आपसे मिलेंगे
ओ विधाता थोड़ा हमारे
भाग्य में भी सुधारा करना।

साकिन केशवाणी

जो यहाँ है वहाँ वैसा
आलम नहीं मिलेगा
अच्छा बुरा वहाँ कोई
आदम नहीं मिलेगा
दुनिया में दुःखी होके
थोडा सहन कर लो
जन्नत में कहीं भी
आराम नहीं मिलेगा।

नूरी

तुम्हारी बहार है
तुम्हारे चमन तक
तुम्हारी कल्पना है
तुम्हारे गगन तक
मेरी विशालता को
निमंत्रण मत दे
तेरी शमा का तेज
है फक्त अंजुमन तक।

हरीन्द्र दवे

आँखें खुलें तो ध्यान आता है
समय बीतने पर ज्ञान आता है
जब लाखों की जान जाती है
तब एक आदमी महान होता है।

शयदा

समय के साथ किया वायदा
चलेगा नहीं यहाँ कोई कायदा
काम करना है 'शयदा' आज कर
कल की बातों से क्या फायदा।

शयदा

गम को भूलने के लिए
मांगी मदिरा हमने
पीनी नहीं थी फिर भी
पी लेता हूँ
भूल गया है शायद वो
इसलिए आज मुझे
जीना नहीं है
फिर भी जी लेता हूँ।

हरीन्द्र दवे

जिन्दगी की यही कहानी है
शैशव तो प्रात:काल है
और दोपहर होते ही
जवानी दिवानी हो गई
शाम होते होते तो
बुढ़ापे में यादों का कारवां
फिर रात हुई और
पूरी कहानी हो गई।

'..........'

एक आकारे कलेजा
दूसरा आकारे शिला
कर्म एक सरीखा करते हैं
जुल्मी और शिल्पी दोनों
लेकिन धरती आसमान का
फर्क है उन दोनों में
एक आकारे कलेजे पर पत्थर
दूसरा आकारे पत्थर में हृदय।

किस्मत कुरैशी

आपका रूप देख कर
सुमन भी शरमा जाते हैं
और चकोर भी भूल से
भरमा जाते हैं
मिला है रूप तो उसका
कोई गर्व ना करो
रहकर चार दिन फूल भी
मुरझा जाते हैं।

'..........'

तुम गुल हो और मैं गुलजार
यह बात कैसे भूलें
न गगन दिया न धरती दी
साथ खाली जाम दिया
दिल को दर्द दिया और
यह कैसा इल्जाम दिया
जागते रहो न सपने आये
यह कैसा ख्वाब दिया
हमारे प्यार का आपने
यह कैसा जवाब दिया।

मरीझ

आज मेरी आंखों में
विरान पूरा बाग है
क्या बताऊँ आपको
दिल में कैसी आग है
देख काला तिल गाल पर
यों ना मुस्कुराओ
दिल मेरा जलकर उड़ा
यह उसका दाग है।

जयंत सेठ

हमको फूल प्यारे हैं
और कांटे भी प्यारे हैं
हमारी दृष्टि में सरीखे
सभी सितारे हैं
चाहे दुनिया हँसती रहे
तुम हँसी मत करना
हृदय तो हमारा है
लेकिन दर्द सब तुम्हारे हैं।

'..........'

खोजते क्या हो किनारे पर
मोती खोजने वाले
सिर्फ कोड़ी और शंख मिलेंगे
किनारे पर ओ ढूंढने वाले
कभी भी महंगी वस्तु
नहीं मिलती सहज में
मोती वो पाते हैं जो हैं
मझधार में डूबने वाले ।

'..........'

तुम्हारे कदमों से यहां
घर में एक रोशनी थी
तुम्हारे बिना इस घर में
दोस्त छाया अंधेरा है
जीवन के उपवन में
तुमसे थी बहार
तुम बिन वीराना
यह गुलजार है।

'..........'

मझधार के तूफान में
कभी साहिल नहीं होते
सुखी दिनों के साथी
दु:ख में शामिल नहीं होते
करके उपकार बार-बार
उसको याद मत कर
वाकई में जख्म भी उससे
ज्यादा कातिल नहीं होते।

'..........'

खुदा तेरी कसौटी की
यह प्रथा अच्छी नहीं है
जो अच्छे हैं उनकी
दशा अच्छी नहीं है।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

गंगा से पूछा तो
दिल के दर्द से वो बोली
मेरे प्रवाह के पीछे
हिमालय पिघल रहा है।

'..........'

दुनिया में मुझे भेजकर
तू पछता रहा होगा
मृत्यु का बहाना करके
लो मैं वापस आ गया।

'..........'

आकाश या सागर में
एक भी राह नहीं
इसका अर्थ यह नहीं
किया किसी ने सफर नहीं।

'..........'

मिट्टी ने सहन किया
ईंट बन गई
ईंटों ने सहन किया
दीवार बन गई।

'..........'

कौन से शकुन में
पर्वत ने बिदाई दी होगी
अपने घर से निकलकर
नदिया वापस आई नहीं।

‘..........’

हाथ की रेखायें देखकर
मुर्ग ने सूरज से कहा
आपके भाग्य में बहुत
उतार-चढ़ाव लगता है।

‘..........’

मौत के समय यह
ऐयाशी अच्छी नहीं
मैं बिस्तर पर लेटा हूँ
और पूरा घर जग रहा है।

‘..........’

कैसी तरकीब से
पत्थर की कैद से छुटती है
जब कि कली के पास कोई
हथौड़ी तो न थी।

‘..........’

साँझ समझ न रोक
काफिले को ओ रहबर
समय के मन में तो
कोई शाम नहीं सुबह नहीं।

‘..........’

आफत अचानक आ पड़ी
किसको खबर कब आ पड़ी
मेरे घर में आग लगी जब
खोजी थी जो चिनगारी भारी पड़ी।

पिनाकिन ठाक

इन्सान स्वार्थ में एक ही
हिसाब रखता है
सुख न दे तो खुदा भी
खराब लगता है।

'..........'

भरोसा न करना कभी फूलों का
फूल तो फिर मुरझा जाएँगे
चमन में वफादार कांटे हैं,
जो कभी छोड़ के न जाएँगे।

मुकबिल कुरैशी

बीते हुए प्रसंग जीवन के
उस तरह बिसर गये
किताब के फटे पन्ने
जिस तरह बिखर गये
किताबों में रखा था गुलाब
वो भी आज मुरझा गया
तुम्हारी यादों के बादल
आकर फिर बिखर गये।

'..........'

लाखों चिट्ठियाँ लिखीं तब
एक लाइन जवाब में आई
प्रेम का दाखिला फिर से गिनो
कोई भूल हिसाब में आई।

'..........'

खुदा और आदमी के बीच
फर्क थोड़ा सा ही है
एक ने बनाया संसार
दूसरा उसे बिगाड़ता है।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

आपसे ऐसे मिले कि
सबको आश्चर्य हुआ
एक से मिलकर एक
जोड़ फिर भी एक रहा।

'..........'

समय को मुट्ठी में
बांध नहीं सकते
समय पानी की तरह
बहता है रोक नहीं सकते
खुदा तो सब जगह है
आप सोच नहीं सकते
वो सब की सुनता है
आप उसे टोक नहीं सकते।

'..........'

खुशनुमा गुलाबी चेहरा
और आंखों में प्यार
बिखरी जुल्फें और
होठों पर लाली
कहने की बात तुमने
बहुत कुछ कह दी
प्रिय तस्वीर में भी तुम
कितनी शरमायी लगती हो।

निर्मिश ठाकर

तुम खुदा होकर यह
कैसे सहन कर लेते हो
लोग तेरे नाम पर
आज भीख मांग रहे हैं
तेरी कैसी खानाखराबी है
दिल के बजाय
पत्थर पर तेरा नाम
लिख रहे हैं।

'..........'

किसी को पैगाम देने की
क्या जरूरत है
फूलों की खुशबू खुद
वहाँ चली आती है।
प्रीत का संदेश देने की
क्या जरूरत है
प्रीत तो पागल है
यह खुद चली आती है।

'..........'

पत्थर भी बोल उठेंगे
अगर इन्सान चाहे
शिल्पी के दिल में
एक लगन चाहिये
अंधेरी रात में चमकते सितारे
उन्हें एक गगन चाहिए
प्यार करने के लिए
दिल में एक अगन चाहिए।

'..........'

'बेफाम' फिर भी कितना
थक जाना पड़ा
नहीं तो जीवन की राह है
घर से कबर तक।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

चाहत में एक दूजे की
फिकर होनी चाहिए
इस बात की उनको
खबर होनी चाहिए
'बेफाम' जहाँ बनाया
उनका महल
उसके नीचे मेरी
कबर होनी चाहिए।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

नजर के सामने जब रखा
दुनिया ने दु:ख का खजाना
हमने भी उस पात्र में
आंसू बहाकर दिया नजराना।

गनी दहींवाला

फूलों पर पड़ी थी वो
टूटी-फूटी हालत में
जिस पर लिखा था मैंने
नाम अपना उस उड़ती पतंग पे।

कुतुब आज़ाद

हम 'नाशाद' जी रहे हैं
ऐसे समय में आज
जिन्दगी कहाँ है जीने जैसी
मौत कहाँ है मौत जैसी।

नाशाद

आंखें मिली धीरे-धीरे
यों बात बनी धीरे-धीरे
उनसे मन की बात पूछो तो
हँस देते हैं वो धीरे-धीरे
एक हृदय कितने जख़्म
बस्ती बढ़ती गई धीरे-धीरे
प्रेम 'अचल' जहर जीवन का
पी जाएँगे धीरे-धीरे।

महेन्द्र व्यास 'अचल'

बड़ी मेहनत के बाद
आज यह अवसर आया है
कि नजरें आकाश पर
और धरती बिछोना है।

फिगार वसोवाला

किस तरह अंत लाये
इसका कहो 'मरीझ'
यह जिन्दगी है
कोई कहानी तो नहीं।

मरीझ

यह फिलोसोफी नहीं
यह असर है शराब की
बिना पढ़े कर रहा हूँ
चर्चा मैं किताब की ।

'..........'

महफिल में बिताई या
मस्जिद में बिताई
उसका हिसाब दुनिया को
हम क्यों देवें
हमारी थी यह जिन्दगी
हमने गुजारी जहाँ गुजारी।

आसिम रांदेरी

वो भी मदद करता है
सिर्फ खास-खास को
अल्लाह भी अब
सबका नहीं रहा।
'बेफाम' जन्म से ही
कुछ ऐसा रोया था
बरसों बीत गए मगर
वो कभी चुप नहीं रहा।

'बरकत वीराणी – बेफाम'

कोई आए दर्द लेकर
तुम उसकी दवा करना
और कुछ न कर सको
तो फिर उसकी दुआ करना।
सितारे बनकर चमक न सको
किसी के जीवन में तो
फूल बनकर दूसरों को
थोड़ी सी महक देना।

अशोक त्रिवेदी

फूल जैसा दिल आंसू बनकर
टपक गया आंखों से
कोई तो मेरे अश्रुओं को
जलधार तो कहो।
उसके बाद देखना तुम
वो कैसे पिघल जाते हैं
एक बार उनके दिल को
पत्थर तो कहो।
हो जायेंगे 'बेफाम' सब राजी
उसमें सब रहने वाले
कभी कबर को एक बार
मरने वाले का घर तो कहो।

अशोक त्रिवेदी

'नज़ीर' ऐसे विचारों से
फूल आखिर मुरझा गया कि
जो खुशबू होती है दूसरों में
अपनों में नहीं होती।

नज़ीर भातरी

जगत को जब न चला
काम मेरे बिना 'बेफाम'
लो जब मैं उठ गया तो
चौक में स्मारक रख दिया।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

सब कहते हैं स्वर्ग में हैं
अप्सराओं से है मिलन
जहाँ देखो वहां मद और
मदिरा का चलन।
मृत्यु के बाद मिलने वाला
है अगर यही सब
तो फिर क्यों न रखें हम
अभी से उसका व्यसन।

शून्य पालनपुरी

जिन्दगी का सार पानी में है
एक परपोटा हुआ और फूट गया
प्यार का सपना था जो टूट गया
जो अपना था आज छूट गया।

शयदा

बात थी वफा की
जफा में रह गई
दुश्मनों का काम था
मित्रों ने कर दिया।

'..........'

मैं नास्तिक न बना इसलिए कि
ईश्वर होगा तो कभी काम आएगा।

'जलन' – मातरी

जिन्दगी में क्यों मैं
तेरी कृपा से दूर हूँ
यह तो नहीं है कसूर
कि मैं बेकसूर हूँ ।

'..........'

हमने जो चाही थी
वैसी जिन्दगी ना मिली
सब जगह इस दुनिया में
वो चाहत ना मिली।
उस घर की बात जाने दो
जो खोज रहा था वो गली ना मिली
जिन्दगी तो बिना प्रेम के पूरी हो गई
और आँखें अभी तक परस्पर ना मिली।

नूरी

आगे कोई माइल स्टोन की
आशा ना कर
रास्ता तो हे दोस्त
कभी का पूरा हो गया है
तुम भूल गये हो कि
दिल का चूरा हो गया है
ओ भटकते मुसाफिर
बहुत बुरा हो गया है।

'..........'

अभी भी जिन्दगी में प्यार बाकी है
पीना पिलाना प्यास बाकी है
उठो साकी भर दो जाम खाली है
अभी भी जिन्दगी में सांस बाकी है।

सालिक पोपटिया

मस्तक झुकाकर तेरे चरणों में
मैं अश्रुधार बहा सकूं
खुद अपने हाथों से अपने
पापों के दाग धो सकूं
सौभाग्य ऐसा दे भगवान
एक बार मेरे जीवन को
आंखें बंद करके वो देखूं जो
खुली आंखों से न देख सकूं।

दिलहर संघवी

जो कुछ खोया वो मेरी खता थी
जो कुछ मिला वो तेरी जिन्दगी थी
मेरे पास अपना कुछ भी न था
मेरे दिल में तो सिर्फ तेरी बंदगी थी।

‘..........’

उनकी कब्र देखकर
मुझे यह दु:ख है ‘बेफाम’
आपको मरना पड़ा यहाँ
इतनी सी जगह के लिए।

बरकत वीराणी – ‘बेफाम’

तुम्हारी बहार है तुम्हारे चमन तक
तुम्हारी कल्पना है तुम्हारे गगन तक
मेरी विशालता को निमंत्रण मत दे
तेरी शमा का तेज फक्त अंजुमन तक।

हरीन्द्र दवे

अभी भी क्या कसर रह गई
उनके जुल्मों सितम की
जनाजे के पास आकर देखो
शोभा बढ़ायी है मातम की।

नाझिर देखैया

यह दिल भी कभी
खाली रह न सका
आशा चली गई तो
निराशा बस गई।

ओजस पालनपुरी

इसके बाद कभी भी न दिखा
वो खिला चेहरा गुलाब का
वो खिड़की खाली ही रही
मैं बरसों तक देखा किया।

किस्मत कुरैशी

पक्का था प्रलय में
कोई सहारा चाहिए
इसलिए बनाई थी मैंने
पतवार दीवार पर।

अंजुम वालोडी

लो बर्फ की शिलायें भी
पिघलने लगी हैं
चूंकि धजा पर एक
सूर्य की आकृति थी।

किसन सोसा

जिन्दगी भर तो 'अमर'
शूलों की शय्या थी
मरना पड़ा आज
फूलों के ढेर पर।

अमर पालनपुरी

पतन में छुपी है उन्नति
हार में छुपी जीत है
मिट्टी में मिल गया हूँ
गागर बनने के लिए
नदिया हूँ जो बह रही हूँ
सागर से मिलने के लिए।
परवाना भी देखो प्यार में
आया शमां पर जलने के लिए।

साकीन केशवाणी

कहीं लाखों निराशा में
अमर आशा छुपी है
खफा यह सनम की
खंजर की तरह चुभी है।

मनीलाल त्रिवेदी

मैंने कुछ रेखायें जो
खींची थीं कागज पर
वो तुम्हारी तस्वीर बनी
तुम हमें नजर आयीं
मैंने सोचा भी न था और
तुम्हारे आने की खबर आयी
वो भाग्य की रेखायें बनीं
मेरी तकदीर संवर आयी।

नूरी

कफन कहूँ या फिर नयी
पोशाक मैंने पहनी है
मौत भी जिन्दगी का एक
आखिरी त्यौहार लगता है।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

'बेफाम' मैंने किसी को
अपना दिल दे दिया
किसको खबर फिर
उस दिल का क्या हुआ।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

दूसरों को साथ देखकर
मुझे परेशानी नहीं होती
मुझे तो आनंद है कि उसने
मेरी कमी पूरी कर दी है।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

'नाशाद' तू जिन्दा तो है
पर समझ कर जीना
साथ कोई नहीं देगा
आखरी सफर तक।
जीवन भर चलता रहे
लेकिन तेरी मौत के बाद
उठा कर ले जायेंगे
तेरे दोस्त तेरी कबर तक।

नाशाद

तूने अपना पता दिया नहीं
तो देख उसकी सजा
दुनिया में मैं भटक रहा हूँ
सिर्फ एक तेरी वजह से
तूने जिन्दगी तो दे दी मगर
अब देख दशा 'बेफाम' की
पीना पड़ रहा है उसे
जहर तेरी वजह से।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

टहनी पर लटक रहा था
एक फूल मुस्कुराता
न किसी ने देखा
न किसी ने लूटा
न ही किसी ने उसे
देवी के मस्तक पर चढ़ाया
न ही किसी ने जुल्फों में
उसे सजाया
अंत में तो वो मुरझाया
टहनी ने उसे नीचे गिराया।

जयेन्द्र महेता

अध्याय 3

स्नेह भरी संगत थी
प्यार की पहचान थी
यह हृदय की बात है
उसे तुम क्या समझोगे
दिन जुदाई के तुमने
देखे नहीं
तो फिर मिलन की रात
तुम क्या समझोगे ।

गनी दहींवाला

तुम्हें भी चोट लगी होगी
ऐसा अनुमान कर
तुम्हारे पास मैं
मरहम लेकर आया हूँ।
कुछ कहना था मुझे
अपने इशारों से
मगर तुम समझ न सके इसलिए
कागज–कलम लेकर आया हूँ।

'..........'

हमारी जिन्दगी का यह
सरल सा परिचय है
रुदन में वास्तविकता है
और हँसी में अभिनय है।

'..........'

जब आप जाएँ चमन में
वहाँ सब सुखी नहीं है
देखी हैं बहुत हमने
उदासी फूलों की
बहुतों को जलना
पड़ता है आग में
बहुत भारी पड़ती है
यह सुवास फूलों की।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

मैं जानता हूँ कि मोहब्बत में
कुछ भी वजन नहीं है
फिर भी मुझे तेरे प्यार का
भार लगता है।
दिलासा मत दे मेरे जीवन को
वास्तविकता का
उससे भी ज्यादा मुझे तेरे
सपनों का भार लगता है।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

निष्फल प्रणय का
कारण ढूंढ रहे हो समय में
वो रह गये शरम में
हम रह गये विनय में।

'..........'

मैं टूटे दिल के तार लेकर आया हूँ
पतझड़ में भी एक बहार लेकर आया हूँ
मुझे जिन्दा समझ चाहने वालो
मैं थोड़ी धड़कनें उधार लेकर आया हूँ ।

उमाकान्त पंडया 'सोहम'

दिल तुमने दिया नहीं
धड़कनें लेकर क्या करूँ
जो न अपना हुआ
ऐसा प्यार लेकर क्या करूँ।
जहाँ फूलों में सुगंध नहीं
ऐसा हार लेकर क्या करूँ
जहाँ मौत भी नहीं नसीब
ऐसा संसार लेकर क्या करूँ।

'..........'

सनम को भूल जायेंगे
सितम को भूल जायेंगे
खुशी को भूल जायेंगे
गम को भी भूल जायेंगे
मोहब्बत में तुम्हारा
इतना ख्य़ाल है हमें
अपनी याद न चाहो तो
तुमको भी भूल जायेंगे।

'..........'

भर लो अपनी सांसों में
यह सुगंध का सागर
फिर गीली मिट्टी की
भीगी सुगंध मिले ना मिले।
वतन की मिट्टी को
माथे पर लगा लो 'आदिल'
फिर यह मिट्टी दुबारा
उम्र भर मिले ना मिले।

आदिल मन्सूरी

जब समय बदलता है
वो समय समय की बातें हैं
शब्द वो ही रहते हैं मगर
अर्थ बदल जाते हैं।
बागों में फूल मुरझा जाते हैं
मगर कांटे रह जाते हैं
स्वार्थ की बात जब आती है
दोस्त भी सब बदल जाते हैं।

'..........'

दिल तूने भी कितना बनाया मुझे
जो मेरे हो न सके उनका बनाया मुझे।
वो कभी याद नहीं करते उन्होंने भुलाया मुझे
मेरे पास आकर भी कभी न बुलाया मुझे।
दिल लिया दर्द दिया कितना बनाया मुझे
विरह की आग में देखो कितना जलाया मुझे।
गिला क्या करें उनका कितना रुलाया मुझे
खुद तो चले गये पर मजार में सुलाया मुझे।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

पागल है जमाना फूलों का
दुनिया है दिवानी फूलों की
उपवन को कहो अब खैर नहीं
आई है आज जवानी फूलों की।
हमने जो फूल भेजे थे वो हैं
प्यार की जुबानी फूलों की
हमारे पागलपन से मत कहो
आज यह कहानी फूलों की
जानकर क्यों पूछ रही है हमसे
तुम भी तो हो दिवानी फूलों की।

'..........'

न पूछो दूर से हमें
रहते हो क्यों बेकरार।
दिल की धड़कनें
सुनो नजदीक आकर
हम हैं तैयार तुमसे
करने को इकरार।
दिल देंगे दिल लेंगे
मंजूर है क्या यह करार।

‘..........’

मौत तक न भूले
ऐसा यह जिगर है
झांकती रहे सदा
ऐसी मीठी नजर है
आंखों में बसो या
बसो आकर जिगर में
यह भी तुम्हारा घर है
वो भी तुम्हारा घर है।

जयंत शेठ

वो चाहे माने न माने
उन्हें प्यार आ ही जाता है
वो चाहे आये न आये लेकिन
सपनों में दीदार हो ही जाता है।

‘..........’

करता हूँ उस दिन की प्रतिक्षा
कि कोई ऐसी सुबह आए
उषा की उन लाल आंखों में
प्यार पले और स्नेह आए
तभी कहीं से आपके आने की
छोटी सी एक आहट आए
फिर दिल धड़के और
मेरी आंखों को विश्वास आए।

'..........'

मेरे हाथ की रेखाएँ देखकर
किसी ने कहा था
कि सब सुख लिखे हैं
तेरे नसीब में
फिर भी अभी तक तुमको
मैं पा न सका
शायद मेरा विरह लिखा होगा
तेरे नसीब में।

जयेन्द्रसिंह जाडेजा

चाहते हो फूल
और कांटों से डरते हो
चाहते हो किनारा
और सागर से डरते हो
प्रणय का नाम लेने का
तुम्हें कोई हक नहीं
प्रेम भी करते हो
और दुनिया से डरते हो।

मुसाफिर पालनपुरी

कलाकार ने फना होकर
एक आकृति बना रखी है
किसी के जीवन की
रेखा अमर बना रखी है
उनका खुद का चित्र बना
खूब रंग भरे हैं प्यार के
एक तस्वीर बनायी जिसमें
कहीं कसर नहीं रखी है।

'..........'

पत्थर जैसे पत्थरों में
तुमने गंगा की धारा दे दी
काले बादलों के जिगर में
एक जल धारा दे दी
ऐसे दिलवाले दृश्यों को
तूने गूंगा रखा
और मानव जैसे पशु को प्रभु
हाय रे वाक् धारा दे दी।

'..........'

न समझ पाये अब भी
ख्वाब है कि हकीकत
जिन्दगी पूरी हो गई
जिन्दगी के ख्वाब में
कितने गम पी लिए
इसी खुशी के ख्वाब में
और हम अभी भी जी रहे हैं
आज किसी के ख्वाब में।

'..........'

दिल में गम के सिवा
कोई घाव न मिला
सूनेपन के अलावा
कोई भाव न मिला
अपने जीवन का यह
कैसा भाग्य है
गए चाँद तक मगर
कोई प्यार न मिला।

'..........'

इश्क पाषाण में ढाल
बनाया एक ताज
प्रेम की निर्दोष
सादगी का क्या हुआ
ओ जहन्नुम में जाने वालो
अब कहाँ चले सब
कोई तो पूछो खुदा को
बंदगी का क्या हुआ।

'..........'

तुझे मिलने में मुझे
कभी दुःख नहीं लगा
कि तुमको देखकर मैंने
सदा हंसता बदन रखा।
खुदा भी कितना दयालु है
कि इस दुःख पूर्ण दुनिया में
'बेफाम' हम को मौत दी
और खुद ने जीवन रखा।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

पुराने पन्नों में पंखुड़ियां
पुष्पों की जो आज मिली
जमा की गई वो सब
पुरानी यादें निकलीं
सोचा था होंगी एक दो ही
यादें अपने दिल की
हिसाब किया तो
सौ-सवा सौ निकलीं
डायरी खोली तो प्यार की
एक कहानी निकली।

उमाकान्त पंडया

अपने नसीब से
शिकायत ना करो
रूठ जाएगा तो दूसरा
खुदा कहाँ से लायेंगे।

'..........'

आने को कह गये थे
मगर वो आ न सके
और इसी इन्तजार में हम
उनके पास जा न सके
वो आ न सके
हम जा न सके
और दिल खोल के
दिल की बात बता न सके
यह कैसा हाल है
उन्हें चाहकर चाह न सके
और नजर से नजर मिला
अपना प्यार जता न सके।

'..........'

कैसी भी रात हो चांद सा चेहरा हो
अमावस फिर भी पूनम लगेगी
तारों की बारात सुबह जब गगन से उतर
धरती पर आयेगी तो वो शबनम लगेगी

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

हृदय को माफ कर
जख्मी जिगर को माफ कर
प्रणय की तरसती
प्यासी नजर को माफ कर
ले गये जो सुरालय तक
उन कदमों को माफ कर
प्यालियों को छूने वाले
इन निर्दोष हाथों को माफ कर।

शून्य पालनपुरी

ओ सीख देने वाले
इतना उपकार कर
ईश्वरी इन्साफ पर
थोड़ा सा एतबा़र कर।
राह जो ली है मैंने
वो सीधी है रहबर
भ्रम तेरी आंखों का है
जा प्रथम उपचार कर।

शून्य पालनपुरी

मेरी मृत्यु पर मुझे
मदिरा से नहलाना
मंत्र भी सिर्फ सुरा के ही
मुझे सुनाना।
कयामत में तुम मुझे
आसानी से ढूंढ सको
इसलिए सुरालय के
आंगन में मुझे दफनाना।

शून्य पालनपुरी

एक तो दर्द पुराना और
दो-चार पुराने ज़ख़्म
बस इससे ज्यादा दिल में
जिगर में कुछ भी नहीं
यों तो पूरी दुनिया आज
दफन हो गई 'बेफाम' की
और अगर देखो तो फिर
उनकी कबर में कुछ भी नहीं।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

थोड़ी शिकायत करनी है
थोड़े खुलासे करने हैं
ओ मौत जरा ठहर जा
मुझे दो चार काम करने हैं।
जिन्दगी की इस संध्या को
जख्मों को याद करना है
बहुत कम पन्ने देख पाया
बहुत लोगो के नाम थे।

नजम

बाग में से गुल के बदले में
खार लेकर जा रहा हूँ।
इस दुनिया से संसार का
सार लेकर जा रहा हूँ।
वास्तविकता जो कहलाती है
वो तो वो ही है
कि मैं मेरे सपनों का
भार लेकर जा रहा हूँ।
आपको यहाँ का अनुभव
क्या कहूँ इस दिल से
प्यार लेकर आया था
अश्रुधार लेकर जा रहा हूँ।
ओ मुझे उठा के
ले जाने वालो संभलना
कि मैं सारी दुनिया का
भार लेकर जा रहा हूँ।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

बहारों का क्या कहना
खिजाओं से मोहब्बत की है
हम वो बुलबुल हैं जिन्होंने
इस चमन की हिफाजत की है।

अमृत – 'घायल'

इस दिल को तुम्हारे लिए
बचपन से बचा के रखा है
अभी तो आप उमर में आये हो
यह रोज का तकाजा किसलिए।

मधुकर रांदेरिया

क्या मुसीबतें क्या दुःख
क्या मुश्किलें क्या सुख
पन्ने जीवन के थे
बदलता चला गया।
कोई समझा नहीं तो
वो दोष है उनका 'सगीर'
मैं इशारे में बहुत कुछ
समझाता चला गया।

सगीर

मुझे बेहोशी दूर करनी है
उनके नयनों की शराब ले आओ
दिल निचोड़ के रंग भर दूं
कोई सादा सा ख्वाब ले आओ
दिल की दुनिया शांत है कैसे डूबूंगा
नाव कोई खराब ले आओ
सीधा-सादा सा सवाल है मेरा
कोई हसीन जवाब ले आओ।

काबिल डेडाणवी

मेरे खोए हुए सपनों को
सजीवन करने के लिए
मैंने मेरी दुनिया
किसी तरह बसा ली है।
मेरी परछाई को मित्र का
उपनाम दिया
मेरी एकलता मैंने
इस तरह निभा ली है।

युसुफ बुकवाला

हम पागल हमारे लिए
भेद क्या चेतन अचेतन में
प्रतिमा हो कि परछाई
मैं आलिंगन कर लेता हूँ।
मनोरंजन कर लेता हूँ
मनोमंथन कर लेता हूँ
प्रसंगोपात जीवन में
परिवर्तन कर लेता हूँ।

अकबरअली जसदणवाला

करामात है तेरे हाथों की साकी
बिना आदत दो घूंट पी लेता हूँ
समझ नहीं आता आज हमको
प्यार में यह क्या हो रहा है
दिल से न कहने की बात
अनायास ही कह लेता हूँ।

गिरधरलाल – मुखी

हमको मत तोलो सूखे पत्तों की तरह
ऐसी तो न थी हमारी कहानी
हम भी कभी हरे भरे थे
मुबारक रहे आप को फूलों की जवानी।

अमृत – 'घायल'

कैसे खारापन आ गया
सागर के पानी में
मैंने दो अश्रु बिन्दु
बहाये तो नहीं?

चन्द्रकान्त 'सुमन'

तकिया गीला है
बिना किसी रुदन के
हमको दिलबर तुमने
सपनों में रुलाया होगा।
आप आ रहे हो क्या
मैंने तो बुलाया नहीं
खुद–ब–खुद मान गए
मैंने तो मनाया नहीं।

चन्द्रकान्त 'सुमन'

मोहब्बत में मेरा परिचय
इस तरह से है
अनजान हो गए हैं वो
जो मुझे खास जानते हैं।

अशोक त्रिवेदी

प्यासा था फिर भी
मैं मजे में रहता था
बिना पिये भी मैं
नशे में रहता था।
बेफाम इस घर की
शिकायत नहीं है मुझे
इससे भी छोटी जगह में
मैं रहता था।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

जिसकी वजह से मैं
देता हूँ रोशनी जगत को
वो मेरा सुलगता दिल है
कोई दीपक नहीं।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

वो इस तरह थोड़ा
हंसकर चले गए
कि मेरी सारी खुशी
लेकर चले गये।
जिनके पास मैं कुछ
मांगने गया था।
वो मुझे रुला कर
चले गए।
झरोखे में खड़े होकर
कर रहे हो जिसका इन्तजार
वे तो गली तुम्हारी कभी की
छोड़कर चले गए

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

पत्थर में मैंने मित्र
एक मूर्ति घड़ी थी
और उसे प्रणय के
रत्नों से जड़ी थी।
तेरे सिवा किसी और पर
ठहरी नहीं थी
मेरी नजर नहीं तो
सब पर पड़ी थी।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

मैं हंसता हूँ तो लोग
हंसते हैं मेरे ऊपर
हम जानते न थे कि मेरी तरह
यहाँ सब पागल होंगे।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

देख लो जीवन भर की
व्यथा आ गई
फिर भी तेरी मोहब्बत में
लज्ज़त आ गई।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

आप आए मेरे पास यह चमत्कार हो गया
जाने-परवाने के पास खुद शमा आ गई
फूल खुद तो जा नहीं सकते तो क्या हुआ
ये खुशबू ले जाने को बहार आ गई
लो अब ओ दुनिया वालो सदा के लिए सलाम
जिसे मेरा घर कहूं वो जगह आ गई।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

उंगली इतनी आसानी से
मत फेरो जुल्फों में
एक दिन पूरे जीवन की
यह उलझन बन जाएगी।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

ना कहो हमको मुसलमां
इश्क काफिर है
तन कमजोर भला
मगर मन में जोर है।
बीच बाजार बेचते नहीं
हम अपना ईमान
दिल के महंगे रत्नों के
हम शाह सौदागर हैं।

शून्य पालनपुरी

एक ही इशारे से प्रेम की मंजिल में
दशा खराब हो गई दिल बेचारे की
और रोशन हो गई मेरी जिन्दगी
अजब तासीर है तुम्हारे नयन इशारे की।

रोशन मर्चन्ट

जिस दिल में दर्द नहीं
प्यार नहीं
उस दिल को जीने का
अधिकार नहीं
तुम मौत बनकर आओ
तो छोड़ दूं सब
मुझे दुनिया से कोई
सरोकार नहीं
भूल जाओ तुम उसको
यही सही है
और कोई दूसरा
इसका उपचार नहीं।

मरीझ

तुमने इशारा कर के हमें
आने का पैगाम भेजा था
अब महफिल से उठने को कहा
कहो तुमको यह क्या सूझी।
नजर वाले को न थी खबर,
कहो किसकी नजर लगी।
जाम पूरा खाली किया मगर
अभी हमारी प्यास न बुझी।

सोमाभाई भावसार

कांटे को लो क्या कहना
जग भी पीछे नहीं रहता
फूल जैसे फूल भी आज
दे जाते हैं गहरे जख्म।

'..........'

नींद में किसी स्वप्न को
हमें सजाना न आया
कंचन और कथीर
कुछ परखना न आया
अफसोस इसी बात का
मन में रह गया
लाचार जिन्दगी को
बहकना न आया।

बटुकराय ह. पंडया

ओ सितारे तुम
सदा हँसते रहते हो
हँसने से क्या होगा
थोड़े आंसू बहाके देखो
ओ बदरा तुम सदा
बरसते रहते हो
थोड़ा इस प्यासे दिल की
तरस मिटा के देखो।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

कितने गम पी गया हूँ
मैं खुशी के ख्वाब में
कांटे चुभा लिए मैंने
कली के ख्वाब में।

मरीझ

कांटों में जो डंख है
वो सहन कर लेते हैं
मगर दिल में जो दर्द है
वो फूलों का जहर है।

'..........'

जीवन है कि खाली है
यह जिन्दगी का भास है
वहीं के वहीं है हम
मगर चालू प्रवास है
निहारा है आपको
हजारों बार फिर भी
दिल की प्यास वो ही है
और छबि आंखों के पास है।

'..........'

साकिन गगन को भी
जहर पीना पड़ा होगा
वरना यह नीलवर्ण
कभी हो नहीं सकता।

साकिन केशवाणी

आप अभी गए हैं फिर भी
दिल को ऐसा लगता है
आपको देखे जैसे एक
मुद्दत गुजर चुकी है
अभी तो हाथों में हाथ
और बाँहों में बाँहें हैं
और बिछड़ने के बाद भी
आँखें झुकी झुकी हैं।

'..........'

उनके आने की आशा लिए
हम इन्तजार करते रहे
इस उलझन में न जान दे पाये
न ही उनसे मिल पाये।
यह कैसी मजबूरी है
न बुला पाये न भुला पाये।

'..........'

कैद लगती है जिन्दगी
उनसे नजरें मिलाने के बाद
कहीं उन्होंने अपने दिल में
मुझे बिठा लिया तो नहीं।
क्या करे गिला आपसे
हम को ओ दिलबर
तुमने सपनों में आकर
सताया तो नहीं।

चन्द्रकान्त शेठ

हुई है फूलों पर आज
हमारी जीत एक हालात पर
हम प्रेमी मौसम के साथ
बदला नहीं करते
प्यार में हमारा वो ही
प्रेमाल चेहरा है
हम फूलों की तरह
मुरझा नहीं सकते।

'..........'

आप मुस्कराते हैं तो दिल को
खुशी का आलम लगता है
मुझे दो-चार घड़ी के लिये
प्यार का आभास लगता है।

'..........'

बात सच्ची हो तो कह दो
न उठाओ यह बोझ
सुना है आप कर रहे है
प्यार में मेरी खोज।

'..........'

पैदा हुआ तुझे ढूंढने सनम
उमर गुजर गई ढूंढते ढूंढते
अब तो आखिर यही ख्वाहिश है
तुम आन मिलो मरते-मरते।

'..........'

कांटों से मैं बचता रहा
पर फूलों ने मुझे डंस लिया।

'..........'

बिखर गई है किसी की जुल्फें
तभी तो बादल घिर आये हैं
यह मस्त पवन के झोंके
फिर खुशबू लेकर आये हैं।

'..........'

नजर न लग जाये किसी की
वो मुंह छिपाये बैठे हैं घूंघट में
उनसे मिलना मुश्किल है
वो चौंक जाते हैं एक आहट में।

'..........'

आओ उदासी को भी
एक अवसर का मौका दें
वरना तो जिन्दगी पूरी
अवसर बिना गुजरी है।

'..........'

तमन्ना है जिग़र में तुम्हारे मिलन की
और तरस भी वो ही है नयनों की
अब पहले की तरह मजा कहाँ है प्यार में
फिर भी कामना मिटती नहीं है मिलन की।

'..........'

जी सकूंगा मैं किस तरह
तुम्हारे दर्शन के बिना
आँखें कभी भी रह ना सकें
पलकें भरे बिना।

'..........'

ईश्वर उत्सुक है
सब कुछ देने के लिए
और तुम चम्मच ले खड़े हो
सागर मांगने के लिए।

'..........'

इनकार था पत्र में
मगर प्यार तो देखो
अक्षर तेरे
मुझे सुंदर लगे।

'..........'

दिल की धड़कनें कह रही हैं
थोड़ा रुक जाओ
अधर भी हिल रहे हैं
थोड़ा रुक जाओ
कैसे मनुहार करूँ
थोड़ा रुक जाओ
मन है कि मानता नहीं
थोड़ा रुक जाओ।

'..........'

जब मैं मंदिर में आया
तो द्वार बोला खुल कर
पांव के जूतों के साथ
मन का भार भी उतार।

'..........'

किसी दिन वो मेरे पास थे
पास क्या बाहुपाश में थे
आज भी कहाँ हैं दूर मेरे से वो
आ जा रही हैं मेरी सांसों सांस में।

शयदा

समय आकर सब लूट गया
प्राण अपनी कैद से छूट गया
जीवन का सार जो पानी में था
एक बुदबुदा हुआ और फूट गया
इस संसार का यही व्यवहार है
कोई लूटा तो कोई लूट गया
सात सागर बंद थे पलकों में
बंध कच्चा था लो अब टूट गया।

'..........'

'आसिम' प्रेम के प्रसंग
बदल गए हैं ख्वाब में
नई कहानी लिखी गई
आज जीवन की किताब में
इस दर्देदिल की हालत देख
यह कोई नशा नहीं
साकी ने जहर पिलाया
आज मुझे शराब में।

आसिम रांदेरी

मेरी दुनिया मेरा प्यार
चाहत भी बदलती है
आप बदले तो क्या
मौसम भी बदलता है
आपसे तुम हुआ सो ठीक
मगर यह समझ जरूरी है
भाव जब बदलते हैं
तो प्यार भी बदलता है

'..........'

ओ हृदय तेरी व्यथा
मेरी व्यथा है मगर
तुम जो चाहो वो
आराम कहाँ से लाऊं
उनके नयनों जैसी
हो मस्ती जिसमें
वो मदिरा वो जाम
मैं कहाँ से लाऊं।

खलीश बड़ो देवी

यह पायल की झंकार नहीं
मदमस्त यौवन बोल रहा है
यह लचकती चाल नहीं
उनकी जवानी डोल रही है
मृगराज को कोई कस्तूरी मिले
नजरों की हिरणी खोज रही है
प्रणय में पागल उंगलियां
लज्जा का घूंघट खोल रही हैं।

जयंतीलाल दवे 'विश्वरथ'

न साकी न सुरा है
नहीं सुराही न प्याली है
फिर भी चकनाचूर है दिल
नजरों में मय की लाली है
उमंगों ने लूटा उसको
जिगर में यह खुमारी है
हमने प्यार से सजा रखा है
दिल जो आज खाली है।

'..........'

दर्द बढ़ता जा रहा है
मैं क्या करूँ
श्वास हल्का चल रहा है
मैं क्या करूँ
जिन्दगी तुम्हारे बिना
भार लगती है
उम्र ढलती जा रही है
मैं क्या करूँ।

'..........'

तुम उपवन बनोगे तो
हम बहार बन जायेंगे
तुम नाव बनोगे तो
हम पतवार बन जायेंगे
दोनों की भावनायें क्या
समझ पायेगा संसार
तुम कहानी बन जाओ
हम सार बन जायेंगे।

'..........'

तू देख रहा है भला
तू मान कब तक मांगेगा
और कब तक अपने
अरमान संजोये रखेगा
अंत में तो तुझको ही
हमारे पास आना पड़ेगा
भक्तों से दूर कब तक
ओ भगवान तू रह पायेगा।

नाझिर देखैया

मैं दूध का जला हूँ
इसलिए आजकल
दुश्मनों से नहीं
दोस्तों से डरता हूँ।

'..........'

बिदा होने की बात भूल जानी थी
एक-दो यादें तो छोड़ जानी थीं
बहते पवन की तरह चले गए आप
थोड़ी बहुत सुगंध तो छोड़ जानी थी।

कैलास पंडित

अगर रूप को देखूंगा
तो चाहत हो जाएगी
भरेंगे वो जाम सुरा से
तो जवानी झूल जाएगी
मुझे फरिश्ता बना दे
वरना फिर मेरे से
सब मानव की तरह
एक भूल हो जाएगी।

'..........'

कहते हैं जिसे प्रीत
वो अंध लगती है
आँखें खुली हैं मगर
नजरें बंद लगती हैं
नहीं है हमारी तकदीर में
उनके दर्शन पाना
अब हमारे प्यार में भी
कुछ गंध लगती है।

'..........'

ढलती रात को दर्द भरी
सारंगी सुनकर ऐसा लगा
छोड़कर यह रंगीन महफिल
आज जवानी रो पड़ी है
फूलों पर पड़े ओस के बिन्दु
देख ऐसा लगा मुझे
यह अश्रु ओढ़कर हाय
'गुलजार' जवानी रो पड़ी है।

गुलजार

प्यार के पुष्पों से
दिल की महफिल सजा देंगे
यह सच है अंधेरे को भूलकर
राह में जान बिछा देंगे
हमारे पास चले आओ
नयनों को जला रोशनी फैला देंगे।

'..........'

नजर से दूर हूँ फिर भी
नजर में आ गया हूँ
यह कैसे हुआ नजर से
नजर लड़ बैठी है
मेरे भाग्य में भी विधाता
प्यार लिख बैठी है
अब उनके जिगर में
नजर उड़ जा बैठी है।

'..........'

कोई दिल में घर कर लेगा
यह ना थी खबर
फिर उसी को दिल ढूंढता है
यह ना थी खबर
खूबसूरत फूल समझ
हमने दिल में रखा था
कांटों से ज्यादा डंख लगे
यह ना थी खबर।

'..........'

जिन्दगी में तू कभी थोड़ा सा
किसी का सहारा बनना
लाकर नौका को नजदीक
समंदर का किनारा बनना
वादा करके वो गये हैं
कह गये फिर आपसे मिलेंगे
ओ विधाता थोड़ा हमारे
भाग्य में भी सुधारा करना।

साकिन केशवाणी

हमने जीवन में नापसंद को
भी पसंद कर लिया
मिला वीराना तो भी दिल को
रजामन्द कर लिया
अब तो माफ करो दुनिया वालो
जेल की दीवारों में रहकर
हमने अपने आपको
दुनिया के माफिक कर लिया।

'..........'

अगर यहाँ रहना न था
फिर आप यहाँ आये क्यों
अगर दिल न लगाना था तो
खाली दिल लेकर आये क्यों।

'..........'

जोबन चढ़ा जवानी आई
भूल गये बचपन के प्यार को
क्या याददाश्त 'अमीन'
इतनी बढ़ गई है तुम्हारी
कि भूल गए आखिर में
तुम अपने परवरदिगार को।

अमीन आझाद

आज एक भूल हो गई
मैं तुमको मित्र बना बैठा
लोग परेशान हैं क्योंकि
मैं तुम्हारा चित्र बना बैठा।

गुलाम अब्बास नाशाद

आप पड़े हो मेरे प्यार में पर
कह दो कोई ना करे यहां प्यार
इश्क तो एक सपना है
जाने क्यूं उठाते हो यह भार।

'..........'

ओ फूल तेरी किस्मत के
गीत मैं गाता हूँ
और मेरी हालात पर
दया मैं खाता हूँ
तुम मरकर इत्र बनोगे
और मैं मरकर राख बनता हूँ।

सगीर

बस मैंने नाव डुबो दी इसलिए कि
जहां पहुंचना है वहां किनारे नहीं
'बेफाम' मैंने आंखें बंद कर ली अब
उनकी आंखों में वो इशारे नहीं।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

दिलासा देने वाले
मैं कैसे तुम को समझाऊँ
कि काजल इकट्ठा करने से
अंधेरे नहीं बनते
तुम दो बात पूछ लो
और पौंछ लो दो आँसू
लेकिन उससे जिन्दगी में
सबेरे नहीं होते।

'..........'

कांटों के साथ मुझे प्यार था
ये कौन मानेगा
उसमें भी कोई सार था
यह कौन मानेगा
घर के आंगन में कभी
आई थी बहार
और मैं घर के बाहर था
यह कौन मानेगा।

'..........'

ऐसा डर-डर के मैं
जन्नत की तरफ गया
शायद खुदा की कोई
भूल हो गई है हिसाब में।

'..........'

रुदन करने से हे दोस्त
मन खाली नहीं होता
लाखों सितारे बिखर गए
पर गगन खाली नहीं होता।

'..........'

दु:ख की कैसी विडंबना है
कितना विरोधाभास है
कि दिल जलता है जिसका
उसकी आँखें गीली होती हैं।

'..........'

की थी प्रतीक्षा
अनिमेष नयनों से
जीवन भर का प्रसंग
परखने के लिए
अररर अभागी जिऩ्दगी
जब वो प्रसंग आया
हम नयन खो बैठे।
निरखने के लिए

महेन्द्र समीर

अनुभव का आनंद और खुशी
किसी को कहने से नहीं होती
असल वस्तु की खूबी
उसकी छाया में नहीं होती।
बस मैंने मान लिया कि
आप आज आने वाले हैं
जो शक्ति श्रद्धा में है
वो शंका में नहीं होती।

नज़ीर भातरी

सीमा न हो तो स्नेह की
तो साथ छूट जाता है
मैत्री मर्यादा छोड़ दे
तो फिर टूट जाती है।

‘..........’

जिन हाथों में दी है
आज मैंने अपनी जिन्दगी
उन हाथों की मेंहदी
देखो वो बचा न सके
प्यार मेरा कैसे पलेगा
जो सपने सजा न सके।
जीवन में रंग भर कर
वो आकृति रचा न सके।

‘..........’

फूलों की तरह हमने
संभाल के रखा है दिल
अगर दर्द दो तो तुम
थोड़ा-थोड़ा देना
प्यार से जिसे पाला है
कहीं यह मुरझा न जाए
यह तुम्हारा अपना है
उसे भुला न देना।

‘फानी’ जयंत सेठ

भूल को भूलना था भूल गया
भविष्य के आगे हाथ खुल गया
झूला है यह समय के हाथ का
आंखें बंद करके मैं झूल गया।

खुशाल कल्पनान्त

चांद भी तुम्हारे पल्ले की
शरण ढूंढता है
कहीं ऐसा न हो कि
चांदनी शरमा जाये।
वो आकर छुप जाएँ
तुम्हारे आंचल में
और तुम ढूंढते रहो
उसे ऊपर गगन में।

'..........'

मेरी कबर पर आज
कोई फूल रख गया है
यह कौन मेरे जख़्मों को
ताजा कर गया है
मैंने प्यार किया था
उसकी याद दिला गया है
मैं यहाँ शांति से सोया हूँ
फिर भी सजा दे गया है।

'..........'

वो भी नजर से हाय
परदा कर गई
और तो ठीक है
मेरी दुनिया फिर गई
लाये थे दवाई
मुझे आराम देने
वो भी बेचारी
दर्द के हाथ मर गई।

'..........'

आज बाग में खुशबू नहीं
और फूलों में प्यार नहीं
पक्का पतझड़ उसे लूट गई होगी।
लाली उतर आई है संध्या में
वो किसी के हाथों की मेंहदी
जो आज छूट गई होगी।
मेरी छवि जो चित्रित करके
उतारी थी तुमने अपने दिल में
ऐसा लगा वो मिट गई होगी।

'..........'

मौत की घड़ी आये जीवन में
तब याद करना कवन में
है आरजू एक 'आरजू' की
तुम्हारा पल्ला मिले कफन में।

आरजू

लहरों ने कितनी चोट खाई
किनारों से पूछ तो लो
है मंजिल कितनी दूर
जाने वालों से पूछ तो लो
दिये जहर के घूंट भी
हँस कर पिये दिल ने
और दर्द कितना भारी है
पीने वालों से पूछ तो लो।

'..........'

अब दर्द बढ़ाके क्या करोगे
जिस दर्द का उपचार नहीं
यह खेल प्रणय का ऐसा है
मुश्किल है मगर भार नहीं
सार नहीं यह सच है मगर
कौन करता यहां प्यार नहीं
जहां मिले दवाई गम की
वो जग में सच्चा प्यार नहीं।

'..........'

प्यार की कीमत नहीं
इन्सान की कीमत नहीं
मानव तेरे अरमानों की
यहाँ कोई कीमत नहीं
दो गज कफन के लिए
सब लड़ते हैं आज यहां
जिन्दगी की क्या कहें अरे
मौत की भी कोई कीमत नहीं।

'..........'

गर आपके गोरे गाल पर नहीं
तो फिर उस तिल की शोभा नहीं
बसंत ना हो तो फिर
गूँजती कोयल की शोभा नहीं
हमको तो आपके दिल की
बगीची में खिलना है
आपकी फूलदानी में हमारा
दिल हो तो उसकी शोभा नहीं।

'..........'

विरान दुनिया बसा ली है
जरा देख तो ले
गम की महफिल सजाई है
जरा देख तो ले
भग्न हृदय आंखों में आँसू
जिगर है जख्मी
बहार आई चमन में
जरा देख तो ले।

‘..........’

मोहब्बत खार हो जाए
यह नहीं मंजूर मुझे
जिन्दगी मजबूर हो जाए
यह नहीं मंजूर मुझे
बंदगी को छोड़
आंखें बंद कर लूं मगर
खुदा लाचार हो जाए
यह नहीं मंजूर मुझे।

‘..........’

साकी हो महफिल हो
हाथ में भरपूर जाम हो
बेहोशी में होठों पर
उनका ही नाम हो
आंसूओं को छुपा पलकों में
उनको अलबिदा करेंगे
और जिन्दगी को इस तरह
आखिरी सलाम हो।

‘..........’

बहुत जहर पिया
उसने मय समझ कर
'सैफ' का स्वभाव भी
कुछ ऐसा हो गया है
आज खुशी के प्रसंग पर
वो मौत मांगता है
सब को ऐसा लगता है
कोई हादसा हो गया है।

सैफ पालनपुरी

जो यहाँ है वहां ऐसा
आलम नहीं मिलेगा
अच्छा-बुरा वहां कोई
आदम नहीं मिलेगा
दुनिया में दुःखी होके
थोड़ा सहन कर लो
जन्नत में कहीं भी
आराम नहीं मिलेगा।

नूरी

अरे पतझड़ सोच
मौसम का क्या होगा
फूलों का क्या होगा
फोरम का क्या होगा
उनकी दरियादिली देख
मेरे प्यार का क्या होगा
और अगर दिल ही न रहेगा
तो फिर गम का क्या होगा।

'..........'

लाख कोशिश करें फूल होने की
मगर यह प्रयास सब बेकार है
खार आखिर खार ही रहेगा
फिर भी उसको फूलों से प्यार है।

‘..........’

‘साहिल’ बिना बात ही
मैं महक नहीं रहा हूँ
तुमने जो फूल भेजा था
उसकी खुशबू है चिट्ठी में
तुमसे मिले बिना भी
मैं खुश रहता हूँ क्योंकि
अब मैंने बांध रखी है
तुम्हारी यादें मुट्ठी में।

हनीफ – ‘साहिल’

यह धरती का कंपन नहीं
मैं डगमगा गया हूँ
मेरा हाथ पकड़ लो
मैं कुछ पी गया हूँ।

मरीझ

हम आज इतने थक नहीं जाते
जरूर तेरी गली से गुजरे होंगे
यह झरने रास्ता भूले नहीं
जरूर चट्टानों से टकराये होंगे।

सतीश ‘नकाब’

न बहाओ यह आंसू
अपनी आंखों से तुम
हमारे भाग्य के नक्शे
सब घूल रहे हैं।

हसनअली नामावटी

लोगों को डर है कि मैं
गुमराह हो गया हूँ
मगर मुझे यकीन है कि
यह तेरी ही गली है।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

वेदनाएँ घर कर बैठीं
अतिथि बनकर आज
यह आंसू तैयार न थे
बेघर होने के लिए
नाव तुमने डुबोई
बदनाम मुझे किया
हम तो तैयार बैठै थे
पतवार होने के लिए।

साकीन केशवाणी

तेरा दिल मिले न मिले
तेरा प्यार पा लूंगा
खुशबू कभी फूलों की
किसी की जागीर नहीं होती।

साकीन केशवाणी

वेदनायें इतनी कातिल हो गईं
मुझे सहारा लेना पड़ा यादों का
इन्तजार में गुजर गई जिन्दगी
क्या भरोसा करूँ तेरे वादों का।

साकीन केशवाणी

गिर गया मुरझा गया पर
खुशबू छोड़ी नहीं फूल ने
हमें भूल चले तुम्हें फिर भी
यादें संभाल रखी हैं दिल ने।

साकीन केशवाणी

मैंने मेरी यह जिन्दगी
इसलिए तुझे अर्पण कर दी है
मौत आयेगी तो कह देंगे
यह माल तो अब पराया है।

शून्य पालनपुरी

पतझड़ थोड़ा रुक जा
बुलबुल गई है बहार ढूंढने।

गोविंद गढ़वी – 'स्मित'

तुम्हारे हाथों पर
मेंहदी की ललाश है
और हम देख रहे हैं
प्यार पर अंगार आज।

आसिम रांदेरी

युगों तक पवन
मन में सोचता रहा
पत्तों ने बोलना सिखाया
लो वो सुरीला हो गया।

उदयन ठक्कर

कैद हो जाना पड़ता है
किसी की आंखों में
यों ही कोई आसान नहीं
काजल का बन जाना।
जब सागर तपता है और
पानी का दिल जलता है
यों इतना आसान नहीं
फिर बादल का बन जाना
जब दो दिलों में लगन होती है
और प्यार में पागलपन होता है
तब होते हैं इशारे आंखों के
आसान नहीं दिल का घायल हो जाना।

तुराब – 'हमदम'

नई इच्छाओं ठहरो जरा
थोड़ा समय बीतने दो
मरे हुए सपनों का
शोक अभी चल रहा है
मिलन के जो वादे थे
वो यादों का मरघट है
अगर जिन्दा रहे तो
फिर बुलावा भेजेंगे।

करसनदास लुहार

मस्ती इतनी बढ़ी
कि मैं विरक्त हो गया
गहरा रंग गुलाब का था
वो फिर भगवा हो गया।

जवाहर बक्षी

आज भी वो मुझे न मिली
आज मैं फिर याद कर बैठा।
वादा करके बदल गये वो
मैं फिर फरियाद कर बैठा।

मरीझ

परिवर्तन नहीं तो वो
जीवन व्यर्थ है मित्र
परिवर्तन होगा तो
जिन्दगी गुलजार हो जाएगी।

खामोश पालनपुरी

मैंने जब मदद मांगी थी तब
वो बहाना बनाकर छटक गया
यह खुदा भी मेरा कैसा
जगत के आदमी की तरह है।

गुलामअब्बास 'नाशाद'

मृत्यु आए तो खुशी से आए
यहां किसका कायमी मुकाम है
जाने को तैयार रहो हमेशा
जीने का यही एक तरीका है।

गोविंद गढ़वी – 'स्मित'

नशा तेरी आँखों का
एक क्षण भी नहीं हटता
मिलती है उससे जो मस्ती
वो मय की प्याली में नहीं होती
मिलन में जो मजा है वो
ख्वाबों में नहीं होता
और महफिल की मदहोशी
अकेले में नहीं होती।

चंद्रा जाडेजा 'शमा'

कौन जाने कितने युग बीत गए
यादों का यह पौधा पेड़ बन गया।

दक्षा देसाई

सालों बीते युग बीते
कल्पों बीत गए
फिर भी आज चांद
पकड़ न पाया अमावस को।

जमियत पंडया 'जिगर'

हमारे दिल में रहने के लिए
परवानगी की क्या जरूरत है
कभी मंदिर के दरवाजों पर
कोई ताले नहीं होते।

'जलन' – मातरी

यह दिल इतना मस्त था
विरह की वेदना में
बीत गई रात
सुबह मालूम पड़ा।

'जलन' – मातरी

ऐसा क्या था उनके पल्ले में
कि परछाई भी लाल हो गई।

दीपक बारड़ोलीकर

यह सिक्का गलत नहीं
यह साबित करने में
कितनी ही बार मुझे
बजना पड़ा।

दिलहर संघवी

दुःखी भी था और
तबीयत भी थी नरम
क्या करूं मांग न सका दुआ
उठा के दोनों हाथ।

आदिल मन्सूरी

मैं उनकी मस्त नजरों से
दिल बचा कर लाया हूँ
जैसे कोई तूफान से बचा
किश्ती किनारे पर लगाये।

सैयद – राझ

काजल बन कर आओ
या आंसू बन कर पधारो
पलकों पर यहां
और कोई सवारी नहीं।

संजु वाला

एक बार मैंने
फूलों जैसा व्यवहार किया
यह उसका असर है
कि मैं मुरझा रहा हूँ।

सैफ पालनपुरी

मुझे दोस्तों का अनुभव ना पूछो अब
मैं दुश्मनों का भी भरोसा करता हूँ।

सैफ पालनपुरी

वेदना बढ़ती गई
तो भी कम रही
पूनम की रात को
चांदनी कम रही।

हरीन्द्र दवे

यह विरह की रात है
कलैन्डर का पन्ना नहीं
जब दिल बदलता है
तो पूरा युग बदलता है।

सैफ पालनपुरी

जाएगी और चली जाएगी
उस विचार से रात चली गई
हम सपनों में खोये रहे और
बिना मुलाकात वो चली गई।

अमीन आझाद

जाम की क्या जरूरत है साकी
मदहोश होने का भी एक सलीका है
रूप के सामने नजर कर लेता हूँ
हुस्न पीने का यह एक तरीका है।

रूस्वा मझलूमी

तू माने या न माने
हकीकत यह है तबीब
यह दर्द मेरा आज
तेरी दवाई की देन है।

किस्मत कुरैशी

तुम नहीं हो तो तेरी याद में
बिता रहा हूँ यह जिन्दगी
जीने के लिए मुझे
कुछ तो सहारा चाहिए।

नाझ मांगरोली

मेरी मोहब्बत अनोखी है
मेरी इबादत निराली है
रखते हैं जहां वो कदम
वहां मैं सजदा कर लेता हूँ।

नाझ मांगरोली

आएगी मिलने तुझसे
दौड़ कर यह नदिया
है शर्त इतनी कि
तू पहले समंदर बन जा।

नाझ मांगरोली

मुझे लूटने वाले ने
अनोखे ढंग से लूटा है
न रहने दिया मेरे पास
मेरे अपने मन जैसा भी।

नाझिर देखैया

बदन चांद जैसा
जुल्फें हैं अंधेरा
आँखें सितारे जैसी
तुम तुम्हारे में पूरे
गगन को समेटे बैठी हो।

नाझिर देखैया

यहाँ तो सांप के बजाय
इन्सान खुद डंस देता है
क्या कुदरत के सर्जन में भी
परिवर्तन होने लगा है।

नाझिर देखैया

पतझड़ में भी बसंती
मौसम है आज कहाँ से
सचमुच हो गया बगीचे में
तुम्हारा आगमन जैसे।

नाझिर देखैया

मैं खुद घर में रह कर
खुद से मिल नहीं सकता
खुदा कभी भी किसी को
ऐसे लापता न करे।

नूर पोरबंदरी

दु:खी मैं हूँ मगर दोस्त
सुख तुझे दे सकता हूँ
कि जो पेड़ छाया देता है
वो खुद धूप में होता है।

नूर पोरबंदरी

कहाँ से आ रही है अंदर
यह सपनों की बारात
आज मैं नहीं खोलूंगा
घर के बंद किवाड़।

किस्मत कुरैशी

संभाल के रखना
यह ह्दय की वेदना है
जिन्दगी भर की कमाई है
तू अगर समझ पाये।

अंजुम उझयानवी

खुली आँखें जिन्दगी है
बंद करो तो मौत है
पलकों के बीच का अंतर
एक जिन्दगानी है।

काबिल डेडाणवी

तुझे पीना नहीं आता
ओ मूर्ख मन मेरे
पदार्थ ऐसा कौन सा है
जो शराब नहीं।

अमृत – 'घायल'

अध्याय 4

कुछ ऐसी आदत हो गई है
'अमर' वेदना सहने की
थोड़ा सा जख्म भरा
फिर कुरेद बैठे हम।

अमर पालनपुरी

कभी आयेंगे
कभी पधारेंगे
अभी वो पूछ गये हैं
नाम पता मेरा।

मनहर मोदी

जिन्दगी की यह सफलता
हस्तरेखाओं में नहीं होती
भाग्य की यह रेखायें
नक्शे में नहीं होती।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

उनकी लगन में मैं चलता रहा
पर उनकी गली मैं भूल गया
मेरी दिवानगी तो देखो
मुझे एक सबक मिल गया।

राही ओधारिया

इन ओस के बूंदों में
कितनी खुमारी है
फूलों के ऊपर आज
उनकी सवारी है।

चिनु मोदी

सुबह निकले थे साथ में
ताजे गुलाब लेकर
घर आये शाम को तो
गहरे घाव हो चले।

पंथी पालनपुरी

जिन्दगी भर जिसने
रखा अंधेरे में मुझे
कबर पर आकर
वो ही जलाते हैं शमा।

प्रेमी दयादरवी

जब आप आये झरोखे में
अपनी जुल्फें बिखेरे
थोड़ी देर तो ऐसा लगा
कि काली घटा छाई है।

प्रेमी दयादरवी

हालात यहाँ तक जा पहुंचे
देखो तुम्हारा यह प्यार कैसा
कोई भी आता है तो लगता है
आपके आगमन जैसा।

नूरी

जिगर में समायी
और फिर दिल में उतर गई
इस जिगर को कत्ल करने
निगाहें धार कैसी है।

बालुभाई पटेल

तुम्हारे आंगन को दूर से
देख हम संतोष कर लेंगे
दरवाजे बंद भी होंगे तो
हम दरबान बन जायेंगे
सपनों में जाकर फिर
हम दीदार कर लेंगे।
फिर भी दर्शन न होंगे तो
बाहर से इबादत कर लेंगे।

बटुकराय ह. पंडया

इतना ही फर्क है
तेरी और मेरी महफिल में
तुम दीप जलाते हो
और मैं दिल जलाता हूँ।

बरबाद जूनागढ़ी

दुनिया में हम इसलिए
भूले नहीं तुम्हारे रास्ते
तेरी गली के अलावा
हम कहीं भटके नहीं।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

अब कोई तुम्हारा रंग
मैं परख न सकूंगा
खुदा जाने यह कैसी
तुम्हारी सादगी है।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

मुझे बरबाद करने में
दोनों बराबर साथी हैं
एक दुनिया की दौलत
और दूसरी मेरी दीवानगी।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

अलग रख कर मुझे
प्रणय के तार न छेड़ो,
वीणा से तार जुदा होंगे
तो फिर बज न सकेंगे।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

बरसों की मेहनत के बाद
यह कालापन छूटा है
यों ही बिना बात
यह बाल सफेद नहीं हुए।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

आपको अपना समझ मैंने
यह प्रेमपत्र लिखा था
पत्र आपने आभार का भेजा
क्या दिल हमारा पराया है।

हर्षद चंदाराणा

पत्थर का बोझ तो
हम उठा लेंगे
हमें झुकाना है तो
फूलों का भार दो।

मरीझ

आंखों में दरबार लगा है
आज दर्द के बादशाह का
और दिल में हो रहा है
राज्याभिषेक वादों का
तुमने जो किये थे शिकवे
गिला है उन सब यादों का
सब की सुनवाई होगी फिर
हिसाब होगा फरियादों का।

शून्य पालनपुरी

जहाँ उसने पल्ला
सुखाया था अपना
वो नीम की टहनी
मीठी हो गई है।

अदम टंकारवी

राह में मिले तुम
और रुक गये हम
चरणों को भी देखो
कैसे समय थक गये ?

अशोक चावड़ा – 'बेदिल'

फूलों की तरह संभालें
रखा है तुम्हारा दिल
दर्द दो तो थोड़ा
सोच–समझ कर देना।

आदिल मन्सूरी

यह प्रणय की दुनिया है
इसमें इरादे नहीं होते
यह तो एक तस्वीर है
इसमें इशारे नहीं होते।
यहाँ दिलों में दर्द है
इसमें नजारे नहीं होते
'हमसफर' हैं हम दोनों
कोई सहारे नहीं होते

शून्य पालनपुरी

मैं शून्य हूँ यह मत भूलना
ओ अस्तित्व के प्रभु
तुम हो या नहीं क्या मालूम
मगर मैं तो जरूर हूँ।

शून्य पालनपुरी

कितनी मजबूर है यह जिन्दगी
खुद से मिलने का समय नहीं
दिन-रात गुजरे जा रहे हैं और
ठहरने के लिए समय नहीं
जवानी गुजरी जा रही है
मोहब्बत के लिए समय नहीं
मौत भी आएगी तो कह देंगे
ठहरो जरा अभी समय नहीं।

कल्याणी 'उशनस'

दिल को दर्द देना है तो
एक ताजा गुलाब ले आओ
जिन्दगी को परेशान करना है
तो थोड़ी शराब ले आओ।
वादे करो मगर साथ में
थोड़े ख्वाब ले आओ।
कबर पर क्यों फूल चढ़ाते हो
एक सादा सा जवाब ले आओ

काबिल डेडाणवी

लोग कैसे डूब गए हैं
यह जानने के लिए
खुदा ने नाव भेजी है
अगर मैं डूब गया तो
कौन कहेगा कहानी आगे।

एस.एस.राही

फूल अगर पत्र के साथ
जब कोई भेजता है
वो प्रणय की पहचान है
दिल की एक सौगात है।

गुल अंकलेश्वरी

चलो जीवन के आज
पचा लें सारे जहर
फिर खेलें 'हमसफर'
शंकर शंकर

दिलहर संघवी

यों तो काफी हैं अपनी
आंखों की यह दो पलकें
मगर जब बाढ़ आए
तो घर छोटा लगता है।

चिनु मोदी

शाम होते होते भी
वापस न आया इसलिए
खोजने पंखी को
घोंसला निकला।

धूनी मांडलिया

अंधश्रद्धा का उसको
कोई दोष न दो
अंध को श्रद्धा न होगी
तो फिर क्या होगा।

नज़ीर भातरी

बिना कारण चमन को
छोड़कर हम नहीं गए
फूलों ने हमें परेशान किया
यह किसने देखा कौन मानेगा।

नूर पोरबंदरी

आंखें देखो हमारी हैं
कामना उसमें तुम्हारी है
गुलाबी होंठों की हँसी
बेचैनी मगर हमारी है।

बकुलेश देसाई

फूल होऊँगा तो
मुरझा जाऊँगा
दीपक होऊँगा तो
बुझा दिया जाऊँगा
याद न रहूँगा और
सिक्के की तरह
चलते–चलते
खर्चा जाऊँगा।

‘........’

जीने की आस बढ़ती जा रही है
फूलों की सांस बढ़ती जा रही है
पिलायी साकी यह कैसी मदिरा
मेरी प्यास बढ़ती जा रही है।

किशन जी नागड़ा

बिना प्यार किये इतना
बहक जाओ ना तुम
यों ही बिना बात इतना
मुस्कराओ ना तुम
सब कुछ कह रही हैं
तुम्हारी झुकी नजरें
नीची निगाहें करके
इतना शरमाओ ना तुम।

भरत व्यास

रात भी कम पड़ती है बातों में
कैसे समय बीतता है संगत में
बरसों से कह रही है यह चांदनी
ऐसे ही होता है प्यार की रंगत में।

कैलाश पंडित

घटायें जब घिरती हैं
तुम याद आओ
कलियां जब हंसती हैं
तुम याद आओ
फूलों की पंखुड़ियों पर
लगती है मोती सी
ओस की बूदें रोयें
तुम याद आओ।

शिव कुमार नाकर 'सांझ'

कमरे में एकाध चित्र हो तो ठीक है
जीवन में एकाध मित्र हो तो ठीक है
दिल लगाओ साथी कैसा भी हो
हृदय से प्रेम पवित्र हो तो ठीक है।

राजेश व्यास – 'मिस्कीन'

भाषा है पर मधुर नहीं
सुर है पर संगीत नहीं
उनके होठों पर है लाली
पर सुंदर सा स्मित नहीं।

हेमेन शाह

व्यथा का मारा डूबे खुशहाली में
प्यासा डूबे शाम की प्याली में
यह तो उतार–चढ़ाव है जीवन का
सूरज भी डूबे संध्या की लाली में।

अशोक त्रिवेदी

एकाध क्षण अपने अंदर देख
डूब कर प्यार का समंदर देख
पूरी जिन्दगी जीने के बाद
खाली हाथ जा रहा सिकंदर देख।

गोयल शर्मा

चमन में 'नाझ' अभी भी
पतझड़ का निवास है
बहार आई तो है पर
यह तो एक फरेबी लिबास है।

नाझ मांगरोली

चमन को न पहचाना
तो फूल हार खोया
बसंत को न माना
तो गुलजार खोया
उंगलिओं से दूर रहकर
अंगूठे ने देखो आज
अंगूठी पहनने का
यह अधिकार खोया।

मदन कुमार अंजारिया – 'ख्वाब'

मैं तेरे प्यार को कभी
किसी तरह भांप न सका
तुमने जो दिये दर्द
उनको मैं नाप न सका।

प्रवीण सोलंकी

मैंने नदी से मांगी थी निर्मलता
फूलों से चाही थी कोमलता
हमदर्दी पाने गया मानव के पास
क्या कहने की जरूरत मिली निष्फलता।

युसुफ बुकवाला

हृदय पर हल्ला हुआ
और दिल टूट गया
लोग कहते हैं कि
कोई आकर लूट गया
बेकार में परेशान
करते हैं यह तबीब
लो तुम याद आये
और धड़कन छूट गई।

इन्द्रदत्त राणा

महफिल में बैठे हैं मगर
वो नजर उठा के नहीं देखते
हो रहे हैं कुरबान हम यहाँ
वो परवानों को नहीं देखते।

'..........'

तुम्हारे वादों का हमने
एतबार तो किया
न थे आने वाले
फिर भी इन्तजार किया।

‘..........’

मैंने एक बेवकूफ की तरह
फूलों से दोस्ती कर ली
अभी तो उनको जान पाऊँ
तब तक वो मुरझा गए
वो इतने अल्पजीवी थे
यह मुझे खबर न थी
घड़ी भर का साथ देकर
वो सब हमें उलझा गए।

युसुफ बुकवाला

शरमा गए वो आज
हृदय हाथ से गया
अंदाज उस बला का है
यह कौन मानेगा
‘रूस्वा’ जिसे शराबी
मानते थे सब लोग
आदमी बहुत मजे का था
यह कौन मानेगा।

रूस्वा मझलुमी

भग्न हृदय और टूटी है प्याली
मजा ले साकी के इशारों का
यह तकाजा है 'शून्य' समय का
पतझड़ में भी ले मजा बहारों का।

शून्य पालनपुरी

मैं भूल कर भी शिकायत
नहीं करता हूँ सितमगर से
कभी नहीं देता हूँ उनको
पत्थर का जवाब पत्थर से
वो मेरे प्रेम की उपेक्षा करेंगे
फिर भी हम याचना करेंगे
किनारे कभी दूर नहीं रहते
अपने समंदर से।

सैयद राझ

आंसुओं का आंखों में
छुप कर घुल जाना
कितना मुश्किल है यों
तुम को भूल पाना।

शेखादम आबुवाला

पैदा हुआ तुझे
ढूंढने सनम
उमर गुजर गई
तुझे ढूंढते सनम।

कलापी

मोहब्बत की दुनिया भी
आज कितनी तरसती है
दिल डूब जाता है उसमें
आंखें जब बरसती हैं।

सैफ पालनपुरी

यह कैसा है दिल में
सिर्फ तुम्हारा ही प्यार है
थोड़ी जगह दो गम को
गम पर भी रहम करो।

मरीझ

कांटों को भी दर्द होता है और
फूलों के दिल भी दीवाने हैं
मृगजल से प्यास न मिटे अगर
तो आंसूओं के जाम पीने हैं।

झरीना चांद

हजारों इशारे करे आंखें
मगर होंठ चुप रहते हैं
यह कैसा है विरोधाभास
आंखों में प्यार दिल में दर्द है।

मरीझ

बीते हुए दिन फिर आयेंगे
यह आस न रही दिल में
यादों के साथ समय बितायेंगे
पर प्यास ही न रही दिल में।

चंद्रा जाडेजा 'शमा'

नजरें मिलेंगी और
हम खो जाऐंगे
कहानी कहोगी और
हम सो जाएँगे
कह दो कि तुम्हें
मंजूर है प्यार मेरा
सभी के दिलों में हम
फिर छा जाएँगे।

शून्य पालनपुरी

हृदय पर कांटे बन चुभे
ऐसा हार लेकर आया हूँ
जो अपना न हुआ कभी
ऐसा प्यार लेकर आया हूँ।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

अनजान एक गली में
टहलना याद आया
प्यार की पहचान थी
मचलना याद आया।
अधर चुप थे मगर
मुस्कराना याद आया
आँखें बंद थीं तभी
एक सपना याद आया
अनजान एक गली में
टहलना याद आया।

सैफ पालनपुरी

कैसे हैं अच्छे हैं और
ऐसा कहकर अलग हुए
एक छोटी सी बात थी पर
असर यह कि जग रहा हूँ।

हरीन्द्र दवे

तुम्हारी जुल्फों की लटें
जहरीली नहीं यह कमाल है
लटकती लटें देखकर तो
भुजंग भी सब घायल है।

शेखादम अबुवाला

जो मेरे दिल का दर्द बने
ऐसी धड़कन लेकर क्या करूँ
पराया हो गया है जो
ऐसा प्यार लेकर क्या करूँ
मृगजल का जल है उसका
आधार लेकर क्या करूँ
तुम्हें जो पहना न सकूं ऐसा
काँटों का हार लेकर क्या करूँ।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

दिल के दरवाजे बंद थे तो क्या
कैसे भूल गए प्यार की गलियां
वो फूल कैसे बन गई देखो
जब बंद थी यह कलियां।

सैफ पालनपुरी

तुमको देखा तो लो
चमन में हवा बदल गई
पतझड़ कि स्थिति
बसंत में पलट गई।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

नजर में आप बसो
ऐसी नजर रखता हूँ
पलकों पर बिठाकर
आपका भार रखता हूँ
जिगर में आपके लिए
अपनी जान रखता हूँ
नजर में आप रहो
ऐसा प्यार रखता हूँ।

अमृत – 'घायल'

यह अचानक देखो
हमें क्या हो गया
नजर से नजर मिली
न होने का सो हो गया
न चाहते हुये भी आज
दिल उनका हो गया
यह कैसे हुआ सब
दिल हमारा खो गया।

जमियत पंडया – 'जिगर'

जमाने की इच्छा का
हम आदर करेंगे
अलग हो जायेंगे पर
शिकायत न करेंगे
सपने आते रहेंगे
तुम्हें याद करेंगे
बंद आंखों से नींद में
तुमसे मुलाकात करेंगे।

शेखादम आबुवाला

यादों में उनके चेहरे हैं
मगर वो तो चल दिये
ऐसा लग रहा है कि वो
जाने को भूल गए हैं।

जवाहर बक्षी

रात को मिलते हो सपनों में
और दिन की चर्चाओं में
दोनों तरह से हाजरी है
सदा आते रहे विचारों में।

मेहुल

मदहोशी तेरी यादों की
एक क्षण भी नहीं मिटती,
मिलती है, जो मस्ती, वो
मय में भी नहीं मिलती।

चंद्रा जाडेजा 'शमा'

मैंने तुम्हें अपने दिल में
बसाया है इसलिये कि
जब चाहूँ अपने को
तुमसे मिला सकूं
तुम आओ या न आओ
फिर भी तुमसे मिल सकूं
अब कैसे मैं तुमको
दिल से भुला सकूं।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

मैंने विरह की रात को
सोची थी मिलन की बेला
आखिर तो यह दिल है
इसको यों बहलाना पड़ा।

सैफ पालनपुरी

सागर न रहा
न किनारे रहे
तुम्हारी याद में
हम हमारे न रहे।

हरीन्द्र दवे

दिल और दीपक की हालत
दोनों ही एक सरीखी है
यह भी जलता रहता है
वो भी जलता रहता है।

शयदा

तुम्हारे घर पर आऊँ
तो पूछो हम क्यों आए
और अगर न दिखूं तो
पूछते हो क्यों न आए
भला आप ही बताओ
इसका उपाय क्या
आंसू बहाएँ या न बहाऐं
बोलो हम आए न आए।

गजेन्द्र त्रिवेदी

अधर है फूल गुलाब जैसे
उनकी थोड़ी पहचान कर लो
'हमसफर' प्यार की इस डगर में
साथ चलने का इकरार कर लो
काजल भरी आंखें तुम्हारी
पलकों से इशारे कर लो
क्या कहते हो ठहरो जरा
मिलन का इन्तजार कर लो।

गिरीश रावल

आंखें मिली हैं आज
कल दिल भी मिलेंगे
राह मिल गई है फिर
मंजिल भी मिल जाएगी
ओ दर्दो के काफिले
रुको जरा ह्रदय में
घर साकी का मिला है
महफिल भी मिल जाएगी।

दिलेरबाबू

बीमार थे पर मिलने
आप न आये
दुश्मन भी आये पर
आप न आये
दास्तां उनकी देखो
पूरा बाजार आया
मगर झरोखे से देखने
वो बाहर न आये।

महेन्द्र समीर

जब दिल ने गम को दिलासा दिया
तो सांसों से एक निसासा निकला
सारी नदियों का पानी पीकर भी
सागर फिर प्यासा निकला।

मदन कुमार अंजारिया 'ख्वाब'

दिल की महफिल सजायेंगे
मार्ग में प्राण बिछायेंगे
आओ अंधेरे से ना डरो
नयनों के दीपक जलायेंगे।

रूस्वा मझलूमी

तुम चलोगे और थकोगे
हम थकेंगे फिर भी चलेंगे
तुम मझधार से डरते हो
हम गहराई में जा डूबेंगे।

महेन्द्र व्यास 'अचल'

महफिल में खूब शराब उढ़ेल
एक रंगभरी दुनिया बसा डाली
खुदा तेरी एक जन्नत न मिली तो
हमने कितनी जन्नतें बना डालीं।

मरीझ

नजर के साथ नजर मिली
हमको नजर लगी
नजर उतार उसने कहा
भारी नजर लगी
नजर बांध वो बोले
कहाँ जा रहे हो
नजर उतारने वाले को
नजर मिलते नजर लगी।

सोमाभाई भावसार

मान सको तो फिर
सपने भी शृंगार हैं
उसके बिना जीवन
जीना दुश्वार है
समय जब बदलता है
तो जिन्दगी भी बदलती है
मौत भी तो जिन्दगी का
एक आखरी त्यौहार है।

डॉ खयम्

पत्थर होकर रह जाएगी
यह वेदना मेरी और
मोम बनकर पिघल जाएगी
यह तेरी यादें
समय गुजरता जाएगा
भूल जाएँगे वादे
तुम ही कहो फिर करेंगे
किससे फरियादें।

मनोज खंडेरिया

दिल में सबको आने देते हैं
मगर तुम शक ना करो
तुम्हें वहां संभाले रखा है
जहां कोई जा नहीं सकता।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

भले घर के दरवाजे बंद हों
इससे क्या फर्क पड़ता है
अगर किस्मत में मिलना है
तो वो मिल जाएँगे रास्ते में।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

जीवन का सफर सीधा हैं
परंतु तुम्हारा साथ जरूरी है
तुम चले जाओगे अगर
तो रास्ते भी उधर मुड़ जाएँगे।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

लूट ली सबने मिलकर
मेरी जिन्दगी इस तरह
जिन्दा हूं फिर भी लगती है
आज मुझ को कमी मेरी
जिन्दा था जब कांटे मिले
हर हमेशा मुझे 'बेफाम'
कबर पर फूल चढ़ाकर
अब न करना मजाक मेरी
तन्हाई भी कैसी है यह
टूट गई है आस मेरी
नहीं मिल रही है पहले की
कोई तस्वीर तेरी।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

आपने तो नजर फेर ली
आपको क्या खबर
सचमुच में देखने जैसी
हो गई है दशा मेरी
सब दया खाते हैं खुले आम
आज हालत पर मेरी
की है जिन्दगी में किसने
यह दुर्दशा मेरी।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

तेरे दिल में न होगा प्यार
तो फिर जिन्दगी में रंग कहाँ
बुझे हुए दीपक के पास
आते हैं पतंगे कहाँ।

अंजुम वालोड़ी

जो आने वाले थे कल
वो खुद आ न पाए
अब हमारी जिन्दगी में
बहुत सी 'कल' हो गई हैं
परिवर्तन बस इतना है कि
'बेफाम' के जीवन में
जन्मदिन आने वाला था वहां
मौत की 'साल' आ गई है।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

कितना ही सुख का समय हो
दु:ख के दिन भी आएँगे
नहीं है कोई ऐसा प्रकाश
जहां परछाइयां न हों
कितने वर्षों की तपस्या के बाद
यह कालापन निकला है
कैसे कहूँ बिना बात ही
बालों में सफेदियां न हों।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

मौत की घड़ी जब आये तो
याद करना मुझे जीवन में
एक आरजू है 'आरजू' के मन में
तुम्हारा आंचल मिले कफन में।

आरजू

प्रेम तो पुराना है फिर भी
उसको याद कौन करे
प्रेम की यह पहचान
कहो कबूल कौन करें
बात करने को हम
दोनों हैं तैयार मगर
बात चालू करने की
यह पहल कौन करे।

दिगन्त परीख

अमीरी कोई मन की
महलों में नहीं होती
जो मस्ती होती है आंखों में
वो सुरालय में नहीं होती
शांति के लिए मानव
कितनी दौड़ लगाते हैं
मगर जो हैं मां की गोद में
वो हिमालय में नहीं होती।

मेहुल

सपने आते रहे
रोज सहर तक
मगर वो आ न सके
कभी मेरे घर तक
आंखों में बसते तो
मैं उन्हें ढूंढ़ लेता
मगर वो उतर गये हैं
आंखों से जिगर तक।

नाशाद

परदे में रहकर ही थोड़ी
दर्शन की झलक दे दो
न दो चांद मेरे हाथ में
थोड़ी चांदनी दे दो
प्रतीक्षा के बहाने
जी लेंगे जिन्दगी
तुम्हारे आने की खबर
खरी खोटी दे दो।

साकिन केशवानी

शरद की चांदनी रात थी
हल्का सा था तुम्हारा स्पर्श
जब चांद आया और
फिर छेड़ी तुमने सितार
अधरों पर आयी मुस्कान
तुम बैठो जुल्फें संवार
यह सब याद आया
हमें आया तुम पर प्यार।

अमृत – 'घायल'

शुष्क थे वो सब लोग जिन्होंने
कभी दिल की दौलत लुटाई नहीं
वो प्रीत की पहचान क्या पायेंगे
जिन्होंने कभी की मोहब्बत नहीं
तुम जो कुछ कह रहे हो
इसमें कुछ भी गलत नहीं
शमा पर जल जाना दोस्तों
यह उनकी आदत नहीं।

हरीन्द्र दवे

शोभा बढ़ाई चमन की
यह काम किया फूलों ने
खुशबू देने जीवन को
किया समर्पण फूलों ने
हमने तो देवों को
हृदय की भावना दी
परंतु अर्घ्य में दे दी
अपनी जान फूलों ने
रह कर कंटकों में
वो सदा हंसते रहे
कभी न गंवाई अपनी
शान फूलों ने
भले हैं भोले हैं और
निर्दोष भी हैं पर
बहुत से दिलों में जगाए
प्यार के तूफान फूलों ने
'अनिल' दोष न दो उन्हें
प्यार करने के लिए
जगाए हैं भग्न हृदय में
बहुत अरमान फूलों ने।

रतिलाल – 'अनिल'

रात के बाद सुबह ढूंढता हूँ
पतझड़ में बहार ढूंढ़ता हूँ
दिल बराबर धड़कता रहे
मैं ऐसा प्यार ढूंढ़ता हूँ।

दिलेरबाबू

थककर सो गया हूँ पर
अरमान जग रहे हैं
सपनों में दिल के दर्द बन
मेहमान जग रहे हैं
हृदय में अभी भी है
धड़कनें चल रही हैं
मझधार से आगे बढ़ो
वहाँ तूफान चल रहे हैं।

गिरीश रावल

एक ही जवाब दे मुझे
मेरा एक ही सवाल है
मेरे इस प्रेम के बारे में
तुम्हारा क्या ख्याल है।

'..........'

मरना तो एक खेल है
अभी मैं मर सकता हूँ
मगर मुझे लाज रखनी है
तेरे इस इलाज की।

'..........'

तक़दीर खुद खुदा ने लिखी
मगर मुझे नहीं पसंद
अच्छा हुआ मैंने मंजूरी
अभी तक नहीं दी है
वहाँ स्वर्ग में मिलते हैं
मुसीबतों के ढेर
इसलिए मैंने मरने की
कोई जल्दबाजी नहीं की है।

'..........'

हँसना मत कोई
फटे कपड़े देखकर
बनठन के कभी
हम भी निकलते थे।
मौत के बाद भी न
'बेफाम' की दशा सुधरी
बेचारे स्वर्ग में भी
अकेले भटकते थे।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

विरह की रात में उजाला
अच्छा न लगा
दो चार दीये थे आरजू के
वो भी बुझा दिये।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

उसने भी अंत तक
दु:ख में साथ नहीं दिया
आंसू भी आंखों से
ढलकर बहता रहा।
विश्वास ऐसा था
प्यार के रास्ते पर
'बेफाम' आँखें बंदकर
चलता रहा।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

'बेफाम' नहा कर
मैं जाता हूं स्वर्ग में।
जीवन से गिला क्या करूं
मौत तो पवित्र है।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

अगर उसमें जान होती तो
वो भी सरक जाती
अच्छा है मेरे हाथों में
तेरा एक निर्जीव चित्र है।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

मौत के नाम से घबरा जाऊँ
ऐसा नहीं हूँ
डर से व्यवहार चूक जाऊँ
मैं ऐसा नहीं हूँ।
जान दी है खुदा ने
चार दिन के लिए
लौटाते हुए मैं चूक
जाऊँ ऐसा नहीं हूँ।

शून्य पालनपुरी

प्रेम जगत में
पागल मेरा नाम है
रात–दिन पान सुरा का
यही मेरा काम है।
सुरालय की रग–रग की
मैं धड़कती जान हूँ
इस सकल सृष्टि सुराही में
मेरा अंतर जाम है।

शून्य पालनपुरी

रो पड़े देखो कुमकुम
और हाथों की ये मेंहदी
अब कहो हमारी मौत
रंगदार है कि नहीं।

'..........'

क्या कुबेर क्या सिकन्दर
अभिमान सबका टूटेगा
कितना ही हो यह खजाना
दो दिन में सब लूटेगा।
समय की क्रूर नजर से
कोई नहीं बचने वाला
आज तो टूटी है प्याली
कल सुरालय भी छूटेगा।

शून्य पालनपुरी

परिचय है मंदिर में
देवों को मेरा
और मस्जिद में खुदा
मुझे जानते हैं।
तेरा प्यार इतना
कहीं छुपा नहीं
तुम्हारी वजह से
सब मुझे जानते हैं ।

शून्य पालनपुरी

दिल टूटा थोड़ी तकलीफ तो हुई
अच्छा हुआ शुक्र खुदा का
कहते हैं सारी उम्र का
आराम हो गया।
एक बार का रोना-धोना
काम तमाम हो गया
आना जाना गाना बजाना
सब यह हराम हो गया।

मधुकर रांदेरिया

क्या मिला संसार में
हिसाब क्या करना रहा
आये थे लेने बहुत पर
सब लुटा के चले हम।
जाना तो था बगीचे में
वीराने में भटक गया
सुधा पान की तलाश में
मयख़ाने में अटक गया।

चम्पकलाल संघवी

दिल टूटा थोड़ी तकलीफ तो हुई
जिन्दगी एक बरबाद हो गई है
फिर खंडहर मंदिरों के देख
ऐसा लगा दिल को ठीक है
खुद खुदा की आज यहाँ
खानाखराबी हो गई है।

मधुकर रांदेरिया

कुछ ऐसा कर खुदा के लिए
कि तुझे थोड़ा प्यार मिले
फिर मैं भी कह सकूं कि
सबको परवरदिगार मिले।

'..........'

ये दयावान हमको तू
पहले दे दया का हिसाब
नहीं तो मेरे पास भी
नहीं हैं कोई पापों का हिसाब।

'..........'

हमारी स्वप्न सृष्टि में
दिल एक मंदिर है
पधारो निमंत्रण है
रहो तो आपका घर है।

'..........'

गम निराशा दर्द
बेचैनी व्यथा और आंसू
जीने के लिए देखो
कितना अच्छा सामान है।

'..........'

हम महफिल में क्यों आये
यह आप जानते हैं
क्यों दिया आपने जाम
यह आप जानते हैं
हमें मदहोश करके क्या मिला
यह आप जानते हैं
नजर से नजर टकराई
उसका परिणाम आप जानते हैं।

मनहर मोदी

बराबर भाग लेता हूँ
जिन्दगी के सब तमाशों में
समझ एक सरीखी
रखता हूं आशा-निराशा में
सदा जीत जाऊँ ऐसा नहीं है
हारता भी बहुत हूं मैं
मगर हार को भी मैं कभी
पलटने नहीं देता हताशा में।

'..........'

लगी 'यतिफ' किसकी नजर
तेरे बाग में ऐसी
दो चार फूल थे बिचारे
वो भी मुरझा गए।

यतिफ सूरती

हमने हर्ष देखा
रुदन देख लिया
कहो तो उन्नति
पतन देख लिया
कभी चांदनी तो
कभी रात काली
प्यार में पला
पागलपन देख लिया।

शयदा

जिन्दगी में हँस लो हँसा लो
दो घड़ी प्रेम से पसार लो
क्या मालूम कल मिले ना मिले
आज प्यार से गुजार लो।

'..........'

पतंगे दौड़ जरा जल्दी
शमा बुझ जाएगी
और तेरी सब आशायें
दिल में दफन हो जाएँगी
समय बरबाद मत कर भला
मिलन की बेला बीत जाएगी
और एक कहानी बन कर
दिल पर कफन हो जाएगी।

'..........'

फूल कीचड़ में मिले
फिर भी महक नहीं जाती
तोड़कर देखो हीरे को
उसकी चमक नहीं जाती।

'..........'

जीवन में श्वास बाकी है
अभी अरमान बाकी हैं।
और तो और गम का
आगमन बाकी है
मैं नहीं जानता पिलायी है
यह कैसी मदिरा भला साकी
किए जाता हूं खाली जाम
फिर भी भान बाकी है।

'..........'

ललाट पर शोभायमान
कुमकुम एक वरदान है
और सिंदूर को मिला
मांग में एक स्थान है
मिला है काली रात जैसा
रंग काजल को
फिर भी काजल का
नयनों में सम्मान है।

अंबालाल डायर

मेंहदी की तरह पिसता रहा मैं
पर रंग चढ़ा ना पाया तुम्हारे हाथ
न तुमको दया आई और
न कभी मिला मुझे तुम्हारा साथ।

दिलेरबाबू

मैं कांटों में फूल की तरह
रह नहीं सकता
पत्थरों में झरनों की तरह
बह नहीं सकता
एक कोमल सा हृदय
मिला है 'मुकबिल'
गमों का बोझ मैं
उठा नहीं सकता।

मुकबिल कुरैशी

पा नहीं सकते वो कुछ
जो कुछ खो नहीं सकते
जिनको रोना नहीं आया
वो फिर हँस नहीं सकते
'नाझिर' परख नहीं जिन्हें
वो भला क्या करेंगे
अपनी पीठ भी वो खुद
कभी देख नहीं सकते।

नाझिर देखैया

जिन्दगी को कह दो
मुझे परेशान ना करे
हरे-भरे बाग को
यों विरान ना करें
मुझे कांटों से प्यार
कांटों में रहने दो
फूलों से कह दो
हमें परेशान ना करें।

गजेन्द्र त्रिवेदी

हाँ मैंने सबको प्रेम
करने के लिए लिया था जन्म
मगर बीच में तुम
थोड़े ज्यादा पसंद आ गए।

‘..........’

ओ खुदा इस तेरी दुनिया में
कैसे कैसे लोग है
करते हैं घाव और
सहने भी नहीं देते।

बरकत वीराणी – ‘बेफाम’

हृदय और आंखों की
भाषा है अलग–अलग
कैसे देंगे वो दोनों
पहचान अपनी–अपनी

अहमद गुल

फूलों की पंखुड़ियों पर
सोयी हैं ओस की कुछ बूंदें
किस के आंसुओं से भीगी
आज की यह सुबह होगी।

अमीन आझाद

जरूर वो चोट करेगी
यह आतीश आज
नजर उनकी ठहरी है
आकर हमारे ऊपर आज।

अहमद गुल

हमने तो यों ही एक फूल
चित्रित किया था दीवार पर
घड़ी में महके घड़ी में खिले
क्या गुजर रही है दिल पर

जितेन्द्रकुमार जोशी

सूरज के साथ हम
इतना दौड़े 'गनी'
परछाइयाँ थककर
पीछे रह गईं।

गनी दहींवाला

नजर के सामने जब रखा
दुनिया ने दु:ख का खजाना
हमने भी उस पात्र में
आंसू बहाकर दिया नजराना।

गनी दहींवाला

आंखों की यह जिद है
कि वो सदा खुली रहें
वरना कौन करता है
इतनी प्रतीक्षा उनकी।

दिगन्त परीख

मेरे पाँव यों ही
न रुकेंगे अपने आप
यहीं कहीं होगा
आसपास घर उनका।

दिनेश डोंगरे – 'नादान'

जीवन भर वो न समझे
भेद मेरी फकीरी का
जरी के तार ढूंढते हैं
आज वो मेरे कफन में।

दिलहर सिंघवी

नींद से अचानक यों
ऐसे जग गए हो आप
मानो कि मेरे ऊपर से
भरोसा उठ गया है।

नज़ीर भातरी

हर एक जिन्दगी नई है
छिपी मौत के पहलू में
पूछता हूं मैं मौत से कब
जीवन मिलेगा फिर से।

नसीम

नाश में भी
होता है सर्जन नया
मौत भी जीवन का
एक दूसरा नाम है।

नाज़िर देखैया

हम 'नाशाद' जी रहे हैं
ऐसे समय में आज
जिन्दगी कहाँ है जीने जैसी
मौत भी कहाँ है मौत जैसी।

नाशाद

कितने गम पी गया मैं
खुशी के ख्वाब में
कांटे चुभा लिये मैंने
कली के ख्वाब में।

नूर पोरबंदरी

वो घर की बात जाने दो
वो घर कहाँ मिलेगा
कि जिसकी खोज थी
वो गली भी न मिली।

नूर पोरबंदरी

'घायल' हम से ना कहो
मौत के बारे में कुछ भी
हमको खबर है यह
नशा टूटने का नाम है।

अमृत – 'घायल'

डूबा नहीं हूं 'अमर'
किसी ने डुबोया है मुझे
वरना क्यों मेरी लाश को
तैरने का मन हुआ।

अमर पालनपुरी

प्रेम का यह पात्र
मैं पूरा भरकर रखता हूँ
यह छलकता रहता है
और वो भीगते रहते हैं।

भीखू भाई चावड़ा – 'नादान'

आना खाली जाना खाली
जगत का यह दिखावा खाली
जिन्दगी बोझ है मौत तक
मर कर जाना है खाली।

खुशाल कल्पनानी

कलियों को नहीं मालूम
खिजा क्या और बहार क्या
अनुभव के लिए वो खिलकर
फिर सुमन हो जाये तो अच्छा
बिना मौत ही कोई मर जाएगा
'नाझिर' हर्ष के मारे दोस्तो
खुशी के साथ थोड़ा रुदन
अगर हो जाए तो अच्छा
जला हुआ यह दिल आज
इस दुनिया को जला देगा
पतंगे का अपनी शमा से
मिलन हो जाए तो अच्छा।

नाझिर देखैया

जैसा था वैसा ही मैंने
पेश किया अपने आपको
बनावट की क्या जरूरत है
एक सच्चे गुलाब को।

नूरी

लो देखो गजब का संग हो गया
मेरी जात से मैं दंग हो गया
लेकर शीशा हाथ में जरा देखो
मैं तुम्हारा ही एक रंग हो गया।

नवल दवे

नशे में मस्त मयकश को जब
चारों कंधों पर ले जा रहे थे
पूरा बाजार कह रहा था देखो
आज जाने वाले ने रंग रखा है।

कपिलराय ठक्कर – मजनू

गहरायी नापनी है सागर की
और सहारा ले रहा है किनारों का
आमंत्रण स्वीकार ले तू आज
मझधार की मचलती लहरों का

शून्य पालनपुरी

तुम्हारी दुश्मनी का
क्या कहना
तुम्हारी दोस्ती भी
भारी पड़ी।

निसार

तुम्हारी तस्वीर तो
चुप होकर बैठी है
मुझे मेरे साथ ही
बात कर लेने दो।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

तेरे प्रश्नो का शब्दों में
नहीं है कोई जवाब
पढ़ लो मेरी आंखों में
यह है खुली किताब।

मुकबिल कुरैशी

कोई ऐसा मुकाम आए
हाथ में एक जाम आए
जिन्दगी जीने के लिए रोज
एक नया पैगाम आए।

दिलेरबाबू

कोई भी रास्ता यहाँ
पहले से तो न था
चलने वालों ने सबने
अपना रास्ता बनाया है।

मनसुख नारिया

धन तो निर्जीव था
वो तो चला गया
पर मेरे दोस्त तू क्यों
हमें छोड़ चला गया।

सां. जे. पटेल

देखो कितने अच्छे शगुन
हो गए हैं आज 'बेफाम'
जनाजा मेरा निकला है जबकि
समय है उनकी बारात का।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

अध्याय 5. शायर और शायरी

प्यार की इस संसार में
जब पहल हुई होगी
तब प्रथम गजल की
शुरुआत हुई होगी
इस दिल को दर्द मिला
उस दिन से दोस्तो
जिस दिन से दुनिया की
शुरुआत हुई होगी।

आदिल मन्सूरी

वो आंख खोलें और
शरमाये गजल
वो बाल बनायें और
बन जाती है गजल
किसने कहा लय का
कोई आकार नही
वो अंग मरोड़े और
लय में आती है गजल।

आदिल मन्सूरी

जीवन में जीने के लिए
किसी ने हँसी मांगी
किसी ने मन का सुख मांगा
किसी ने दिल की खुशी मांगी।
विधाता ने मुझे भी जब
मांगने के लिए कहा तब
मैंने उसके पास और कुछ नहीं
एक शायरी मांगी।

अशोक त्रिवेदी

प्रणय का दर्द जब दिल में
पहले पहल हुआ होगा
तो ऐसा लगा कि प्यार में
एक कठिन मंजिल आई
अर्ज करने को दिल का दर्द
कोशिश जब मैं कर रहा था
तभी गगन से उतरकर
चुपके से यह गजल आई।

मनहरलाल चोकसी

मेरी गजल तेरे ही नाम से
बनाई गई है
एक-एक शब्द में
दर्द की बात छुपाई गई है
भूल जाओगी मेरी मोहब्बत
शायद तुम मगर
मेरे दिल में तेरी छवि
अभी भी समायी हुयी है
यह तेरे हाथों की मेंहदी
कितनी सुंदर लगती है
जिसे मेरे खूने जिगर से
यह कैसी रचाई गई है।

स्पर्श देसाई

आकाश की सीमाएं
खत्म होती हैं जहां से
फिर शुरू होती है
मेरी गजल वहां से।

हरीन्द्र दवे

यह मेरी रूबाई है
यह मेरी गजल है
एक छोटा सा सफर है
दूसरी लम्बी मंज़िल है
दोनों का ध्येय एक है
मगर भिन्न स्वरूप है
तुमसे मिलने को
बेचैन मेरा दिल है।

'..........'

कितने उपहार दीये आपने
दिल की धड़कनें गिन लो,
जख्म कितने दिये आपने
गिन लो, फिर हिसाब मिलेगा
तुम्हारी यादों के गुलदस्ते
गजल में बांधकर रखे हैं
हमसे थोड़ा प्यार कर लो,
तब तुम्हें विश्वास आयेगा

'..........'

मधुर राग के साथ–साथ
शायरी में रंग भर लाया हूँ
अगर आप दाद दें तो
मैं संग दिल ले आया हूँ
जिसे मैंने और तुमने कभी
सुनी नहीं जिन्दगी में
वो प्यार भरे पैगाम की
गजल ले आया हूँ।

'..........'

दिल में तेरा नाम लेकर बैठे हैं
लो मजे का काम लेकर बैठे हैं
यह गजल आसानी से नहीं लिखी गई
दर्द का जाम पीकर बैठे हैं।

'..........'

प्रार्थना करके दिल से
ह्दय को रोशन कर लेंगे
अंधेरे में भी हम
उनके दर्शन कर लेंगे
सेवा पूजा कर मन से
उनका ध्यान कर लेंगे
ह्दय के भाव भर कर
गजल का गुंजन कर लेंगे।

'..........'

करते हैं वो जुल्म़ मगर
जालिम कह नहीं सकता
कवि हूँ फूलों को पत्थर
की उपमा दे नहीं सकता।

'..........'

कैसे भी करके
उनसे बोल न सकूं
पलभर के लिए
उनको भूल न सकूं
खोज रहा हूँ मैं
एक ऐसी कविता
जो कागज पर
लिख न सकूं।

'..........'

गागर में रहकर भी
सागर हो सकता हूँ
और संसार में रहकर
शायर हो सकता हूँ
चाहे मैं जरा-सा हूँ मगर
ईश्वर मैं तेरा अंश हूँ
मैं भी अलग-अलग रूप में
हाजिर हो सकता हूँ और
मेरी कल्पनाओं में तेरी
इबादत कर सकता हूँ।

अमृत – 'घायल'

हो सकता है मैं पहचान
न पाया उसको
हो गई होगी कहीं कभी
मुलाकात खुदा से
'बेफाम' कयामत में जाऊंगा
मैं एक शायर बनकर
और पेश करूंगा गजल
जब मुलाकत होगी खुदा से।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

दिल की छुट्टी के लिए
मैंने लिखी थी एक चिट्ठी
तुमने पढ़ी और फिर
वो शायरी हो गई
जहां सुखाने रखी थी ओढ़णी
वो टहनी हरी हो गयी।

अदम टंकारवी

तेरे दिल में कहाँ लिखूँ
दर्द भरी मेरी कहानी
एक भी पन्ना खाली
हमें तो यहाँ न मिला
इतने जख़्मों की यादें हैं
कोई प्यार न मिला
कौन लिखे यह पन्ना
कोई शायर न मिला।

'..........'

काजल भरे नयनों की
यह मार मुझे पसंद है
लज्जा से झुकी पलकें
उनका भार मुझे पसंद है
'घायल' मुबारक हो
यह मेरा उर्मी काव्य
जो रो-रोकर लिखा है
उसका सार मुझे पसंद है।

अमृत 'घायल'

प्रतीक्षा ही प्यार की फसल है
उससे निकली यह गजल है
इन्तजार का मजा कुछ और है
प्यार की पहचान यह सरल है।

'..........'

गजल में दिल का दर्द है
यह वाणी का विहार नहीं
बड़ी मुश्किल से संजोया है
यह स्वप्नों का हार नहीं।

'..........'

दु:ख के दिनों में वो काम आयेगी
एक गजल मेरी लिखकर रखना
कभी उनको देना पड़े 'अदी'
दिल के दो टुकड़े करके रखना।

अदी मीरझा

कितना नजदीक है
हमारी दूरी का संबंध
मैं लिखता हूँ अकेले में
और वो शरमाये गजल में।

सैफ पालनपुरी

मैंने लिखी थी कभी
बर्फ के ऊपर 'हनीफ'
वो गजल आज
नदिया बन बह चली।

हनीफ 'साहिल'

जिन्दगी भर न उतरने वाला
एक नशा है यह कविता
किसी ने कहा है चट्टानों की
चोट खायी यह है एक सरिता।

'..........'

बूंदा-बूंदी की बरसात
थोड़ा-थोड़ा भिगोवे
और हल्का-हल्का मुस्कुराये
होठों पर आया होगा
नाम धीरे-धीरे फिर
कागज के कलेजे पर लिखाये।

'..........'

दर्द, मोहब्बत दिल की लगी
और यह अधूरी आशा
एक जगह जमा हो जाय
तो फिर गजल बन जाए।

'..........'

अगर दिल में दर्द नहीं
और दिल को चोट लगी नहीं
मान लो कि सच्ची गजल
तुमने कभी लिखी नहीं।

'..........'

समय से पूछना है
मेरी कहानी का अंत क्या
मैं तो लिखते-लिखते
सब कुछ भूल गया हूँ।

बटुकराय ह. पंडया

मैं खुद उनसे जो कह न सका
वो गजल के रूप में कहना पड़ा
यह कैसा पागलपन है
आंखों से ओझल होकर कहना पड़ा।

'..........'

भाषा का विवाद क्या
यहाँ सब समान है
यह तो गजल है
यह दिल की जबान है।

दिनेश डोंगरे – 'नादान'

मैंने कहा उनसे यह
मेरी रंगीन जवानी है
सितमगर क्यों झनझना रहे हो
तुम मेरे हृदय के तार
मुस्करा के वो बोली
मत घबराओ तुम
बना रही हूँ तुमको
मैं एक नया शायर।

'..........'

एक खत मैं उनको लिखता हूँ
कि मैं उनकी कविता हूँ फिर
दिल की वेदना और व्यथा का
थोड़ा सा मंथन कर लेता हूँ
यह आंसू आंखों से बह न जाए
मैं उन्हें शब्दों में ढाल कर
जब मन करता है तब मैं
शायरी का सर्जन कर लेता हूँ।

भीखुभाई चावड़ा – 'नादान'

चलो मन में एक इच्छा कर लें
और अपने दिल में दर्द बसा लें
तब उठेगी वेदना प्रसव की और
फिर हम एक गजल बनालें।

दिलीप रावल

शायर का दर्जा
बहुत ऊँचा है
हृदय है साकी
और कलम साथी

अमृत – 'घायल'

मुशायरे के दिन
गिन–गिन कर
काम छोड़ कर
गजल लिखा कर
खाना–पीना भूल जा
रोना–धोना छोड़ दे
दिल का दर्द बढ़ा कर
शायरी लिखा कर।

नटवरलाल देसाई

हरीफों के प्रेमपत्र आए
तो तुम खुशी से पढ़ो
लेकिन देखना उसमें
कोई मेरी गजल नहीं।

आसीम रांदेरी

कोई कारण नहीं होता है दोस्तो
प्यार जगत में करने के लिए
हमें गजल पसंद आ गई है
दर्द की दास्तान लिखने के लिए।

तौफिक – 'प्रीतम'

मोहब्बत करने के बाद आज
यह सत्य समझ में आया
जैसे मृगजल से छलकता
मैंने कोई मरुधर पाया
खुशी की बात मैं इसलिए
नहीं लिखता हूँ शायरी में
कोई कहेगा 'काबिल' की
गजल में प्यार आया।

काबिल डेडाणवी

तैरना इतना आसान नहीं
प्रणय के सागर में डूबने वाले
जो वादे किये थे गजल में
वो हैं तुम्हारी यादें भूलने के लिए

तौफिक – 'प्रीतम'

बहुत इच्छा थी दो–चार शब्द
तुमको प्रेम के लिखेंगे
मगर कलम टूट गई
और कागज कोरा ही रहा।

शेखादम आबूवाला

तुमको देखा तो
मेरी गजल बनती गई
कल्पना खुद फिर मेरी
कलम बन लिखती गई।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

मेरी मौत के बाद जब
कोई पढ़ेगा मेरी गजल
तभी समझ पाएगा वो
मेरी मोहब्बत भरी रातें
मान लेगा वो मुझको
एक मस्त शराबी जैसा
और मेरी गजल में होगी
मय और मदिरा भरी बातें।

मरीझ

यह कहानी है दिलों की
कहने में नहीं आती
अलग है मौन की भाषा
लिखने में नहीं आती।

चंद्रा जाडेजा शमा

जब मैंने कहे दो–चार शेर
वो सुन कोई दिवाना बोला
जब शबनम का नाम आया
साकी ने घूंघट खोला।

ब्रिजेन महेता शबनम

कबर पर उड़ कर आए हैं
यह एक–दो कागज
लगता है 'बेफाम' ने गजल
जन्नत से लिख भेजी होगी।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

मैं मुक्त विचरने वाला मानव
शायर के लिए दुनिया कैद नहीं
मेरा मन तो गंगा–जमुना
मंदिर–मस्जिद में भेद नहीं
माध्यम है मेरी मानवता
दौलत मेरी मस्त फकीरी
गुनगान करो पर गर्व नहीं
दोष दोगे तो कोई खेद नहीं।

जयन्ती लाल दवे

हाँ गजल लिखने के लिए
बेशक दिल टूटा होना चाहिए
आंखों में आंसू नहीं मगर
खून धूला होना चाहिए
प्रणय के पथ पर बेफाम
दिल प्यासा होना चाहिए
धड़कनों से धड़कता हो
मय में डूबा होना चाहिए।

मनसुख नारिया

मंजिल आई और चली गई
पर नजरें टिकी थीं माइल स्टोन पर
प्यार बहुत था 'हमसफर' मगर वो
कुछ कह न सके फोन पर
उनको गजल सुनानी थी पर
ध्यान था दिल की धड़कन पर
उनको कुछ शक हो गया है
प्यार की अपनी पहचान पर।

श्री मौलिक महेता

अनजान यह राह समझ
सोचा – 'एक से दो भले'
मैं निकला खुदा की खोज में
साथ में सनम लेकर
ऐसा भी होता है जब लेखनी
बेचने का समय आए
फिर बहुत मुश्किल है जीना
हाथ में कलम लेकर।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

सर पर कफन बांध
और कंधों पर बोझ उठा
जीवन की संध्या का सामान
साथ लेकर चलता हूँ
सब शेरों में है दिल की
वेदना भरी कहानी मेरी
फिर भी सबके लिए दुहाई की
गजल गाता रहता हूँ।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

शंकर कितना भाग्यवान था
उसे पिलाया जहर देवों ने
पीता हूँ मैं जहर दुनिया में
पिलाया जो मानवों ने
मेरे पास और कुछ नहीं
दुआएँ देने के सिवा 'बेफाम'
छोड़कर जा रहा हूँ यह
सब गजल शेर दुनिया में।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

हमारे पास और कोई
छुपा खजाना नहीं
जाएँगे जब कह जाऐंगे
जगत को हमारी बात
मेरे बिना भी सुन सकें
लोग मेरी शायरी
इसलिए मैंने गजलों में
लिख दी मेरी बात।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

मुझे जन्नत में कौन
पहचान पाएगा 'बेफाम'
बहुत बरसों के बाद
यहां वापस आया हूँ
पेश है विजीटिंग कार्ड
मैं गजल लेकर आया हूँ
खुदा भी देख खुश होंगे
शायरी लिख लाया हूँ।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

'बेफाम' शायरी में ऐसे गुम हो गए
वो दिखते नहीं इस संसार में
और अगर मिलेंगे तो मिलेंगे
वो फिर कभी किसी मुशायरे में
हम तो यों ही भटक रहे हैं
इस जग में अकेले
और वो जा बैठे हैं
किसी के साथ मायरे में।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

हृदय के हिमालय से
उतर कर आई
यह गजल गंगा
संभाल ली 'घायल' ने
खुद समंदर जा रहा है
मिलने नदी से
यह काम किया आज
गगन के बादल ने।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

मौत के बाद जहां रहना है
वहां कयामत तक कैद होना है
मैं उन विचारों से 'बेफाम'
कबर नाम की कुटीर पर रोया हूँ
सर्जन का आनंद जिनको है
वो ही असल में सही शायर हैं
मैं तो बहुत बार अपनी लिखी
गजल की कड़ी पर रोया हूँ।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

तुझे अल्लाह कयामत तक
सलामत रखे
मैं ताजमहल को
बना न पाया अपना घर
मैं मुशायरे में सबसे
मिलता रहता हूँ 'बेफाम'
सबके लिए लिखी है
गजल ही मेरा घर है।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

चाहे सुख न मिले मगर
दु:ख अपनी पसंद का हो
विधाता के साथ बैठ
खुद लिखूं अपनी शायरी
जब खुदा का बुलावा आए
तो मैं खुद कहूं 'बेफाम'
मौत का इन्तजार है
जाने की कर रहा हूँ तैयारी।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

एक आप ही हो ऐसे जो
मेरे साथ हो मंजिल़ में
वरना कौन देता है साथ
कल्पनाओं की गजल में।

सैफ पालनपुरी

प्रणय में कोई पत्र लिखने का
अगर प्रसंग आए
तो कोई सुंदर सा
एक खत लिखना।
कसम है आपको मेरी
न कोई ऐसा वचन देना
एक जिन्दगी बरबाद हो
कभी ऐसा मत लिखना

नजम

उनकी तस्वीर तो चुप
हो कर बैठी है
मुझे मेरे साथ ही
बात कर लेने दो
उनकी शिकायतें अब तक
बहुत की हमने उनसे
दिल अब हमें ही उनकी
वकालात कर लेने दो
सब कहते हैं खुदा से
कुछ भी छिपा नहीं है
फिर भी मुझे मेरे गुनाहों को
कबूल कर लेने दो
वो कुछ कहते नहीं हमें ही
अब पहल कर लेने दो
कयामत में जाने से पहले
गजल की शुरूआत कर लेने दो।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

शायरों के आज 'बेफाम'
महेंगे दाम हो गए हैं
दु:ख तो यही है कि
कवि खुद सस्ता हो गया है
एक आदमी जो रोज
रोता ही रहता था
आज वो दिवाना होकर
रोज हंसता हो गया है।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

पृथ्वी हो या स्वर्ग हो
आवागमन का अंत कहाँ
जहाँ जायेंगे थोड़ा रुकेंगे
और फिर चले जाएँगे
हमको 'बेफाम' उनसे
कोई ज्यादा काम नहीं
गाएँगे दो–चार गजलें
और फिर चले जाएँगे।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

है बहुत दर्द बहुत व्यथायें
कह रहा हूँ जीवन की कथाएँ
विरह है वेदना है 'दिल' में
मगर रोना नहीं गजल सजाओ
और गाओ शायरों की सभा में।

कनु आचार्य – 'दिल'

जब कोई समझ पाएगा
पढ़ कर मेरी यह गजल
थोड़ी देर के लिए तो वो
बहला लेगा अपना दिल
व्यवहार से परे हैं और
है यह कला का सर्जन
चुपके से तुम अपना लो
जीवन में मेरी यह गजल।

मरीझ

सागर से मिलने के लिए
लहरों की संगत कर लेता हूँ
गजल में पिरोकर दिल को
मैं दर्द अंगत कर लेता हूँ
मैं कुछ भी नहीं तेरी सभा में
मगर मैं दूर रह नहीं सकता
प्रभु तेरी देन है कि मंझधार में
डूबने की मैं हिम्मत कर लेता हूँ।

आसीम रांदेरी

सोच और समझ से
गजल नहीं बनती
और सुरालय जाने से
गजल नहीं बनती
दिल को ठेस लगना
जरूरी है मेरे दोस्तो
शब्दों का यह मायाजाल
यों गजलें नहीं बनतीं।

मुसाफिर पालनपुरी

नहीं आऊँगा ओ प्रभु
मैं तेरे स्वर्ग में
वहाँ नहीं है कोई
संसार जैसा
यह अहोभाग्य मेरा
गजल गीतों द्वारा
छा गया हूँ मैं सब जगह
न है कोई निराधार जैसा।

महेन्द्र व्यास 'अचल'

जब से मिली है तुम्हारे
आगमन की खबर हमें
इन आंखों की पलकों में
मैं रातें गुजारता गया
धीरे–धीरे जुदाई का
दर्द कम होता गया
और तुम्हारी जरूरत मैं
गजलों में निहारता गया
अभिलाषा थी मन में
तुमसे कुछ कहने की
कोशिश करके 'हबीब'
गजलों में कहता गया।

मस्त हबीब सारोदी

मैंने गजल के नीचे
सही की नहीं थी
नाम तो तेरा ही
लिखने का था।

हनीफ – 'साहिल'

पास रहता हूँ तो डर है
अलग हो जाऊँगा कभी
दूर रहकर देखो करता हूँ
लो पास आने की बातें
यह कैसा व्यवहार है
प्यार है या परेशानी
गजल से कह रहा हूँ
फिर साथ होने की बातें।

हरीन्द्र दवे

जमाना यह समझा
यह मेरी मौत है
मगर मैं चला
अपने मकां की तरफ
हमने उठाया है कदम
यह आखिरी मंजिल़ है
जो थोड़ा सा लिखा है
वो आखिरी गजल है।

शून्य पालनपुरी

खुदा ने महाकाव्य
आदम का रच कर
पेश किया जन्नत में
हूर द्वारा
कवन में हृदय का
जब उल्लेख आया
फरिश्ते बोले
दुबारा दुबारा।

गनी दहींवाला

कवन को मान देता हूँ
गजल की दाद देता हूँ
हृदय की भावना है हमारी
उनको याद करता हूँ
बनती है औरों का आनंद
जिन की वेदना 'बेफाम'
मैं उन शायरों को दर्द की
मुबारकवाद देता हूँ।

बरकत वीराणी – 'बेफाम'

मेरी आंखों पर आज भार है
कि मैंने सपनों को सजाया है
दर्देदिल की कहानी क्या सुनाऊँ
इसको प्यार ने पागल बनाया है
कैसे कहूँ कि तेरा इन्तजार है
समय को भी मैंने भुलाया है।
इस गजल के बहाने देखो
आज फिर मैंने तुम्हें बुलाया है।

'..........'

टहनियां इतनी झुकती नहीं
फूलों में कुछ भार होना चाहिए
तुमसे यों ही मिलना न होता
दिल में कुछ प्यार होना चाहिए
इतने लोग क्यों पढ़ते हैं
गीता में कुछ तो सार होना चाहिए
यह गुजराती शायरी का अनुवाद है
इसमें भी कुछ भाव होना चाहिए।

फिलिप क्लार्क